Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीराम कथा

क्षमा भटनागर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीराम कथा

क्षमा भटनागर

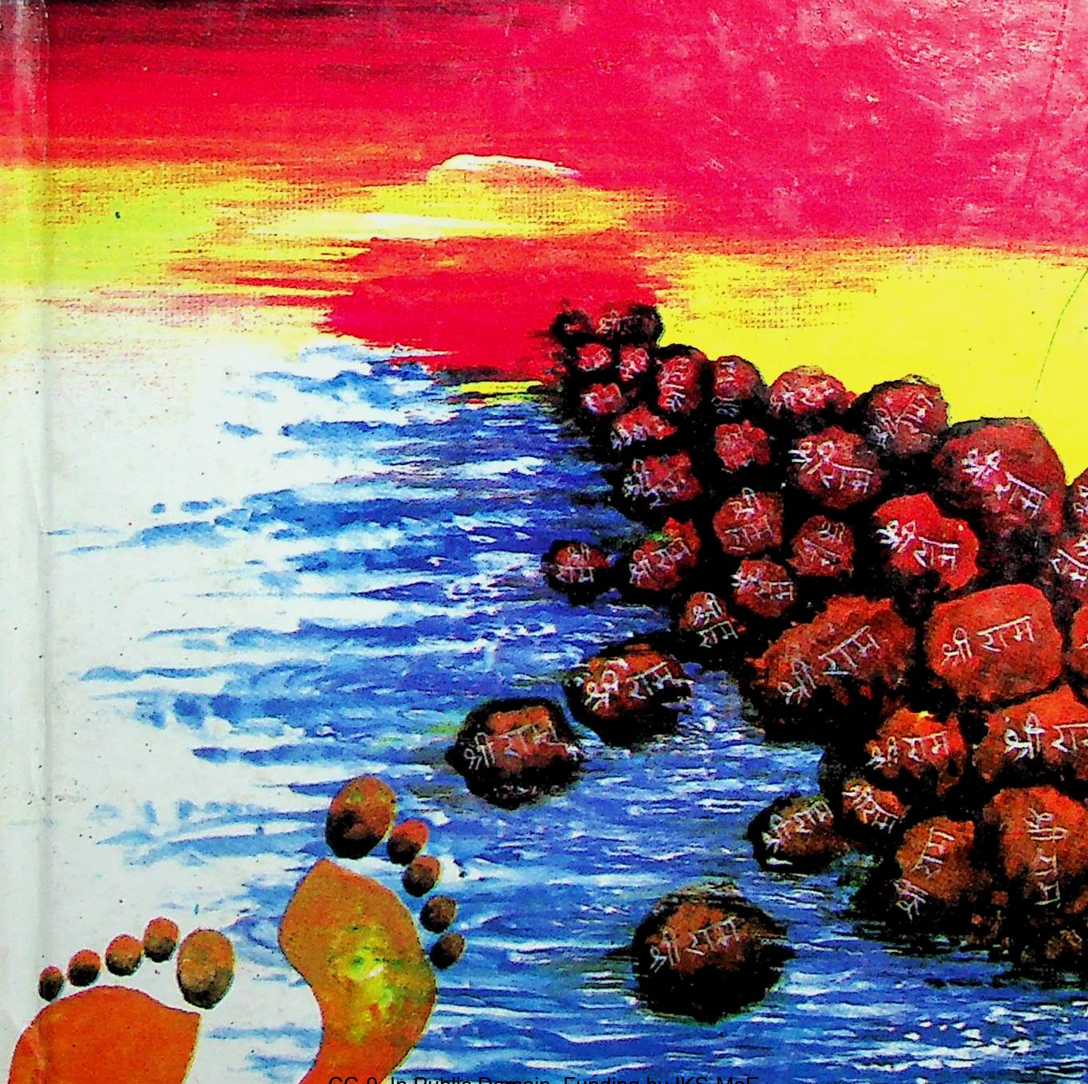

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

49
A|5|

卐 श्री राम कथा 卐

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्रीराम कथा

क्षमा भटनागर

RAJA RAMMOHUN ROY
LIBRARY FOUNDATION
BLOCK DD-34, SECTOR-1, SALT LAKE
CALCUTTA-700 064

नेशनल काउंसिल ऑफ हिन्दी लिट्रेचर
33/1, भूलभुल्लैयाँ रोड, महरौली, नई दिल्ली–110030 (भारत)
फोन : 26641981, 26641880

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

SPS Central Library
Acc No. 70725
891.431
B47 S

ISBN-81-89562-17-7
संस्करण : प्रथम, 2011
मूल्य : 350.00
नेशनल काउंसिल ऑफ हिन्दी लिट्रेचर
33/1, भूलभुल्लैयाँ रोड, महरौली, नई दिल्ली-110030 (भारत)
फोन : 26641981, 26641880 द्वारा प्रकाशित
एवं अर्पित प्रिन्टर्स, दिल्ली में मुद्रित ।
Shri Ram Katha *by* Kshama Bhatnagar

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समर्पण—

जिनके रहकर प्रति पल श्रीराम-चरित्र की दृढ़ता, सुकोमलता एवं इष्टदेव के चरण कमल की पावन सुगन्धि का अनुभव होता रहा एवं जिन्होंने इस पुस्तक के लिखने में मेरा मनोबल बढ़ाया और सहयोग प्रदान किया—उन अपने पतिं श्री आनन्द मोहन भटनागर को समर्पित।

—क्षमा भटनागर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दो शब्द

गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित रामचरितमानस से प्रेरणा लेकर और अपने गुरुदेव से आशीर्वाद पाकर श्रीमती क्षमा भटनागर ने 'श्रीराम कथा' को पद्य रूप में प्रस्तुत कर बड़े परिश्रम का काम किया है।

'श्रीराम कथा' के कुछ पृष्ठ उलटते हुए मुझे राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त की उन पंक्तियों का स्मरण हो आया—

राम ! तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाए, सहज संभाव्य है।

श्रीमती क्षमा भटनागर की यह इच्छा है कि उनकी राम कथा बच्चों में विशेष प्रिय हो, इसके लिए पुस्तक को नयनाभिराम तथा आकर्षक ढंग से छापना जरूरी होगा।

मैं श्रीमती क्षमा भटनागर को उनके लेखन के लिए बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि यदि वे इसी प्रकार भक्ति-भाव से काव्य की साधना में लगी रहीं तो एक दिन अवश्य ही साहित्य संसार में उनकी सराहना होगी।

(अटल बिहारी वाजपेयी)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने बारे में

प्रिय पाठको,

कवि तुलसीदास कृत रामचरितमानस पर आधारित इस पुस्तक को लिखने की धृष्टता मैंने की है। इसके लिए मैं आप सब मानस प्रेमियों से करबद्ध क्षमा माँगती हूँ। मुझमें न तो बुद्धि है न शक्ति, न इतना साहस ही कि मैं किसी प्रकार भी उन महान् कवि श्री तुलसीदास की महान् रचना की महानता को छू सकूँ। उन महान् कवि की रचना तो सूर्य के समान जगत् को प्रकाशित कर रही है। उस दिव्य तेज से प्राप्त हुई किरणों की ज्योति द्वारा ही यह पुस्तक लिखी गई है। सूर्य की किरणें तो छोटे तिनके को भी चमक प्रदान करती हैं। इसमें महानता सूर्य की है उस तिनके की नहीं।

इस पुस्तक को लिखने की प्रेरणां ईश्वरीय है। बचपन से मैं प्रभु अनुरागिनी हूँ। मेरी माता धार्मिक विचारों वाली नारी थीं। मेरे पिता वाराणसी में डॉक्टर थे जो अत्यंत परोपकारी एवं धार्मिक विचार वाले थे। उन्हीं के संस्कार प्राप्त होने के कारण मेरे द्वारा इस रचना की संभावना हुई। इसलिए सबसे पहले मैं अपने माता-पिता को प्रणाम करती हूँ।

फिर मेरे अनेक गुरुजन जो पढ़ाते समय रामायण की कहानियाँ मुझे सुनाया करते थे, जिन्हें सुन-सुनकर मेरे हृदय में प्रभु पद प्रीति बढ़ती गई, गृहस्थ-धर्म निर्वाह करते हुए भी मैं सदा रामचरितमानस का पाठ करती रही। समय-समय पर दिव्य स्वप्न द्वारा मार्ग दर्शन मिलता रहा। एक बार स्वप्न में मुझे मेरे गुरु ने दर्शन दिए। मैं उनके चरणों के दर्शन के लिए व्याकुल हो गई। स्वप्न में देखा हुआ अति दिव्य गौर मुखमंडल मेरी आँखों के सामने सदैव रहने लगा।

आखिर उन्होंने दर्शन दिए। अपने पिता की मृत्यु पर मैं फैज़ाबाद गई थी। उस समय मुझे अयोध्या में अपने गुरु के दर्शन मिले! उन्होंने मुझे राममंत्र की दीक्षा दी।

उसके पश्चात् मेरे लिए कार्य सरल प्रतीत हुआ और यह रचना सरल खड़ी बोली में अपने आप मेरी लेखनी से निकलती गई। यह रचना तुलसीदास के रामचरितमानस का अनुवाद या रूपांतर कही जा सकती है। यद्यपि रामचरितमानस अत्यंत विशद होने के कारण अनुवाद में भी कठिन है, कुछ अंश तो पुस्तक के अनुवाद ही हैं। यह रचना लोकप्रिय होगी या नहीं, प्रभु ही जानते हैं किंतु रामचरितमानस की भाषा जिन्हें दुरूह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लगती है उनको यह संक्षिप्त खड़ी बोली का काव्य सरल प्रतीत होगा।

रामचरित इतना लुभावना है कि समय-समय पर बार-बार इसे कवियों तथा लेखकों ने अपना विषय बनाकर कविताएँ एवं लेख लिखे हैं। मैं कोई कवयित्री नहीं हूँ और भक्तों की पंक्ति में भी मेरा नाम नहीं है, मैं राम कथा की अनुरागिनी हूँ—इसे मेरा छोटा-सा प्रयास जानिए! इस रचना का उद्देश्य जनसाधारण के मानस-पटल पर रामज्योति प्रज्वलित करना है। मैं सोचती हूँ, राम के चरित्र का अनुकरण कर बच्चे दृढ़ चरित्रवान बन सकते हैं। इस कारण यह रचना अति सरल चौपाइयों में उतारी गई है। यदि यह रचना पाठकों के हृदय में राम-प्रेम की ज्योति प्रज्वलित कर दे तो मैं अपने कार्य को सार्थक समझूँगी।

यह रचना बालक-बालिकाओं को विशेष प्रिय हो, यही मेरी कामना है। यह सरस्वती का वरदान है। आगे चलकर गाँव-गाँव और स्कूलों के बच्चों को प्रिय हो, यही मेरी कामना है!

अंत में यही कहूँगी कि यह विषय मानस-प्रेमियों का है इसलिए मैं हाथ जोड़कर उनसे प्रार्थना करती हूँ कि इस पुस्तक पर जो भी मानस-प्रेमी अपनी टिप्पणी देंगे, मुझे शिरोधार्य होगी। उनसे एक बार फिर करबद्ध प्रार्थना है कि वे मेरे सभी अपराध क्षमा करें!

मैं अपने मातृ, पितृ एवं पति कुल के सभी महानुभावों एवं पूज्य संबंधियों को हाथ जोड़ती हूँ। वे मुझे आशीर्वाद दें। अपने परिवार के सदस्यों को धन्यवाद देती हूँ। इस पुस्तक के लेखन तथा प्रकाशन कार्य में जिन्होंने सहायता प्रदान की है उनकी मैं सदैव आभारी रहूँगी।

ई 250, सरिता बिहार
नई दिल्ली-110044
फोन : 6943804

—क्षमा भटनागर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनुक्रम

शिव वंदना / 13
हनुमान वंदना / 15
विनय / 17
राम महिमा गुण स्तुति / 20
शिव-पार्वती मंगल / 24
नारद मोह / 46
मनु शतरूपा / 53
रावण जन्म / 56
राम जन्म / 60
विश्वमित्र एवं राम-लक्ष्मण / 65
जनकपुरी में राम लक्ष्मण / 68
परशुराम तथा लक्ष्मण / 80
राम विवाह / 87
वरवधू आगमन / 95
राम बनवास / 99
केवट भक्ति / 121
रामवन-पथ में / 123
दशरथ शोक एवं मरण / 131
भरत शोक / 135
भरत भी बन में / 139
भरत का अयोध्या लौटना / 163
राम ऋषि समागम / 165
राक्षसों से युद्ध / 169
सीता हरण / 171
राम शबरी के आश्रम / 174
राम सुग्रीव सौहार्द / 176
हनुमान शार्य / 182
राम का सेतु बंधन / 200
रामदूत अंगद / 204
राम-रावण युद्ध / 212
कुम्भकर्ण वध / 221
मेघनाद वध / 225
रावण वध / 228
राम-राज्य / 249

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिव वंदना

जटा में तरंग गंग
शीश धरे दूजचंद
भुजंग ग्रीव नील कंठ
भस्म रमी अंग-अंग

वक्ष माल रुंडमुंड
कर्ण सर्प कुंडलम्
शैलसुता वाम अंग
कार्तिक गणेश सोहे अंक

डम डम डमरू निनाद
नृत्य रसिक भूतनाथ
व्याघ्र चर्म कटि प्रदेश
हिरण्य वर्ण क्षमा क्षेत्र

बम बम बम महादेव
पुष्कल देवाधिदेव
त्रिशूल धरे विश्वनाथ
विश्व गर्भ भोलेनाथ

अनंग भस्म अहंकार
बसंत माधवा विशाल
त्रिलोचनं गिरिजाधवं
शरण सुखद महेश्वरम्

श्मशान निलय हे अधीर
चरश्चतुर महारूप
अरिन्दम् नंदीश्वरम्
नमामि राम ईश्वरम्

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पिनाक पाणि ज्ञान मूर्ति
मातामह परम ज्योति
बलनिधान त्रिपुरारि
शिव शंभो तुलसिईश

कृपा करो गौरि प्रिय
कैलाश पति क्षमाईश
नमो नमो जगद्गुरु
चरण शरण सर्वभूत

क्षमा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हनुमान वंदना

जय हनुमान केशरी नंदन
पवन पुत्र अंजनिसुत वंदन
गाँऊ कपीश तुम्हारी विनती
पार न पाऊँ बुधिमति थोड़ी

महावीर असुर बलमर्दन
जय जय जय सुरनर मुनि वंदन
रामदूत अतुल बलशाली
चारों युग में छाई लाली

कंचन वर्ण लाल पहिरावा
शीश मुकुट कुंडल मणिमाला
कर एक वज्र ध्वजा ले दूजे
काँधे मूँज जनेऊ सोहे

विद्या ज्ञान सद्गुण भंडारा
विवेक बुद्धि सुमति के दाता
शंकर तनय मारुति नंदन
साधु संत के आए रक्षण

शिर पर कर रखे बजरंगी
दुर्गम कार्य उसे न कोई
तीन लोक हुंकारे काँपे
भूत पिशाच नाम सुन भागे

अजर अमर वर दी वैदेही
सीता, राम, लखन गुणगाई
सदा राम के पास विराजे
रघुबर के सब कार्य सँवारे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आर्तनाद भक्त का सुनते
दौड़ गदा ले कष्ट निवारे
दुख रोग पीड़ा जाए भागी
नित जाप करे बजरंगबली

रामकथा रस के अनुरागी
पास तुम्हारे राम विभूति
दरबार राम के तुम रखवाले
बिन आज्ञा कोई जा न पावे।

अमोघ राम शक्ति तन धारा
ऋद्धि-सिद्धि वांछित फलदाता
कृपा कीजिए हम पर गुरुसम
विक्रम कुमति क्लेश विभंजन

सब सुर से विनती कर हारी
कपिराज शरण तुम्हारी आई
दासी क्षमा दरश की प्यासी
कर जोड़ करे विनती इतनी सी

भवसिंधु बीच नाव है डोली
पतवार लगाओ रामकृपा की
संकट मोचन पवन कुमार
कर दीजे अब बेड़ा पार

राम - लखन संग वैदेही
जो तुलसी के परम सनेही
वसिए हनुमंत हृदय हमारे
हे राम दास रघुनंदन प्यारे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विनय

गणेश नमन गजमुख गणनायक
बुद्धि रिद्धि इष्ट फलदायक
विद्या ज्ञान कवित रस जननी
मंगल कार्य करे सरस्वती

भवानी शंकर नमो नमस्ते
श्रद्धा विश्वास रूप हृदय के
कृपा मेघ जिस पर बरसावें
रघुपति चरण भक्ति सो पावें

क्षीर सिंधु हरि शेष शयना
तन स्याम नमस्ते लक्ष्मीरमणा
दीनपुकार मनुज तन धरते
सफल मनोरथ करें हमारे

नमन विधाता रचे एक संग
विष खल मदिरा सुधा संत
बंदन चार वेद हरि चारण
भव सिंधु उतारे नौका सम

सद्‌गुरु पदनख करती वंदन
ज्योति स्तम्भ करे पथ दर्शन
हनुमान महावीर पद वंदन
धनुतीर लिए मन में रघुनंदन

शुक सनकादि श्रेष्ठ मुनि नारद
कौशिक अगस्त्य विज्ञान विशारद
साधु संतजन शीश झुकाती
कृपालु करें निर्मल मति मेरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माता - पिता चरण शिरमाथे
दे जन्म कृपाकर पाले - पोसे
बालक शैशव पन गुरुबंदे
जगत दोष गुण मुझे लखाए

जय कवि वाल्मीकि जय तुलसी
रामकथा सुरसरि बहाई
जो इस जल में उतर नहाये
चरण पखारूँ उनके पहले

जय काग भुशुंड राम पद प्रेमी
तजे न देह भक्ति दृढ़ जागी
वाहन गरुड़ हरिपद सेवी
सुन राम कथा संशय त्यागी

नमन संत जगत उपकारी
फलदायक तीर्थराज सम राही
खल वंदन करूँ दोषजग देखे
पर अहित अपना भी तन तजते

बिन सतसंग विदेक न पावें
रामकृपा जो सुलभ न होवे
सुधरे दुष्ट संगति सत पाई
सुमन सुगंध अंजली बसाई

चौरासी लाख जीव की योनि
प्रकार चार जल - थल - नभ वासी
सियाराम सब रूप रमाए
शीश झुकाकर जोड़ नमस्ते

नृप दशरथ अवधेश नमस्ते
राम विरह तन तृण सम त्यागे
जय पूर्व दिशा रूप कौशल्या
रवि कुल शशि जिसने उपजाया

जय भरत नाम उत्पात विनाशक
मन लोभी भ्रमर राम पद अम्बुज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नमन लखन भक्त हितकारी
राम कीर्ति पताका धारी

जय शूरवीर विनीत शत्रुघन
अनुगामी भरत अनुज लक्ष्मन
जय जनक योग में भोग छुपाई
राम देख भक्ति निज प्रकटी

जय अवधपुरी जय सरयू पावन
राम धाम साकेत सुहावन
जय अंगद वानर रीछ विभीषण
तन अधम राम दिए परमपद

जय आदि शक्ति जगजननी सीता
जनक नंदिनी राम बल्लभा
जय जय रघुनायक पिय सीता के
शार्ङ्ग धनुष कर दुष्ट निवारें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम महिमा गुण स्तुति

राम नाम की महिमा भारी
जपे सदा शंकर अविनाशी
पाए महामंत्र यह गजमुख
बने सर्वप्रथम ज़ग पूजित

ब्रह्मा शिव विष्णु नाम यह
गाते सनकादि ऋषि मुनि नारद
बाल्मीकि करके उल्टा जप
बने श्रेष्ठ संत अति पावन

शिव संग शिवा नाम जपती
पति प्रिया बनी सदा अर्धाङ्गिनी
नाम प्रताप सदा शिव धारा
कालकूट विष अमिय बना

ध्रुव पाए ध्रुव लोक नाम से
प्रह्लाद भक्त शिरमौर बने
गज गणिका नीच अजामिल
पापी असंख्य भव सिंधु तरे

राम नाम मणि दीपक प्यारा
दिवस रात करे उजियारा
रखिए इसे जीभ दुआरा
अंदर - बाहर हो उजियारा

शुभ आर्त्त विवश अलसाए
राम नाम जो मुख से लेते
ग्रह कटे अणिमा सिद्धि मिले
मंगलमय दश दिशा बने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ले नाम रूप नैन में आवे
मन आनंद कलुष सब भागे
सत् चित् आनंद साकार बने
रघुवर हृदय कमल विराजे

श्री राम कथा रचे त्रिपुरारि
उमड़ी करुणा कहे भवानी
जाने कागभुशुंड अधिकारी
शिवशंकर उनको सौंपी

भुशुंड से याज्ञवल्क्य मुनि पाई
मुनि भारद्वाज ऋषि सुनाई
शंकित हुए गरुड़ जब ज्ञानी
सादर कहे कागभुशुंडी

तुलसी सुने कथा बालपन
अपने गुरुमुख सूकर क्षेत्र
उचित समय भाषा बाँधी
'रामचरित मानस' कहलाई

वेद - पुराण शास्त्र श्रुतिवाणी
जनमानस बही पुनीत गंगा सी
पाप हारिणी कलुष निवारिणी
दासी क्षमा चित्त आन बसी

गुरु चरण धीर जो शीश धरे
बोले गूँगा गिरि पंगु चढ़े
पा वरद हस्त मूढ़ भी ज्ञानी
भगवन कृपा तुम्हारी पाई

यह दृश्य जगत राम की माया
रज्जु सर्प भ्रम उपजाया
भवसागर तारन जग के कारण
पद कमल राम के नौका सम

जय रघुनंदन कौशल्या नंदन
दशरथ नंदन जय जग बंदन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रमा रमण रघुनाथ दुलारे
जय जय जय श्री राम हरे
दीनबंधु शरणागत रक्षक
करुणासागर जन सुखदायक
तरकश धनुष बाण कर धारे
भक्तों के प्रभु कार्य सँवारे
कुंडल किरीट केश घुँघराले
वन माल कंठ मणि मुक्ता लरजे
नव नीरद नील कमल मणिआभा
महा बाहु भुजबंद विराजा
कमल नयन पीताम्बर धारी
भाल विशाल तिलक शुभकारी
उदर त्रिरेख नाभि जल भँवरे
क्षमा करो प्रभु अवगुण मेरे
राघव रघुवर कोशल अधिपति
जानकीनाथ पिया वैदेही
हनुमान सदा पद कमल पखारे
जग में जय जयकार करे
स्वामि सखा इष्ट शंकर के
मन मानस हंस भुशुंड काग के
भरत लक्ष्मण शत्रुघन भाई
सुर मुनि शारद करे आरती
प्रिय शिष्य गुरु वशिष्ठ बनाए
विश्वामित्र अध्यात्म सिखाए
कवि आदि हृदय बिहार करे
तुलसी मन मंदिर आय विराजे
मंगल भवन अमंगल हारी
रामकथा भवसागर तरणी
कलियुग दोष पाप हारिणी
विवेक ज्ञान संजीवनि बूटी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नियम धर्म व्रत सद्गुण दानी
रामकथा अमृत की वाणी
मन बार-बार सुने न, अघाई
दुख भंजनि शिव तुलसी प्यारी

दारिद तपिश मिटाए घन सी
पूर्णकाम कल्पवृक्ष सी
ऋद्धि-सिधिदायी कामधेनु सी
मुक्ति दामिनी काशी सी

काम क्रोध मोह अँधियारी
हरण करे अंशुमाली सी
विषय सर्प के लिए महामणि
भव रोगों के लिए वैद्य सी

विश्वभार धरे क्षमा सी
राम भक्त को जीवन धन सी
पावन करने में गंगा सी
कपट दंभ के लिए अग्नि सी

भय संकट भ्रम दूर भगाती
कठिन कुअंक भाल मिटाती
गई वस्तु लौट फिर मिलती
मनवांछित फल प्राप्त कराती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिव-पार्वती मंगल

'गुरु पितु मातु महेश भवानी'
लिखे श्रेष्ठ संत कवि तुलसी
रामचरित में प्रथम बखानी
मंगल कथा उमा त्रिपुरारी
मन संशय कथा उपजाई
श्रृद्धा विश्वास रूप दृढ़ाई
पढ़-सुन क्लेश हृदय के भागे
गृहकार्य शुभ मंगल होवे
बसे प्रयाग भरद्वाज महान
जहाँ श्रेष्ठ नदी का संगम
गंगा भक्ति कर्म की यमुना
सरस्वती ब्रह्म विचार स्वरूपा
पवित्र त्रिवेणी यहाँ विराजी
भक्ति ज्ञान मोक्ष दायिनी
माघ मास कुंभ जब लगता
संत समाज वहाँ आ जुटता
प्रातः नहा त्रिवेणी पावन
वेणी माधव का कर दर्शन
अक्षयवट स्पर्श कर हर्षित
आते संत भरद्वाज आश्रम
ब्रह्म धर्म तत्व विभाजन
वैराग्य भक्ति करे निरूपण
कहे कथा हरि की आनंदित
अपने - अपने लौटें आश्रम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक बार याज्ञवल्क्य मुनि आए
भर माह तीर्थराज नहाए
साधु संत जब घर को लौटे
भारद्वाज मुनि को रोके
चरण पखार आसन बैठाए
बोले अति संशय मन मेरे
राम नाम जगत प्रकाशित
गाते वेद पुराण उपनिषद्
एक राम दशरथ के बेटे
नारि विरह अतिशय दुःख झेले
एक राम शंकर नित जपते
वे क्या वही कुँवर या दूजे ?
तुम सर्वज्ञ वेद पारखी
कहिए कथा मिटे भ्रम भारी
हँस बोले याज्ञवल्क्य मुनि भाई
तुम अति राम चरण अनुरागी
मैं जानी तुम्हारी चतुराई
सुनना चाहो कथा पावनी
शिव से संशय यह करी भवानी
सुनो कथा हो संशय हानि
शिव अनुरागी राम चरण के
सेवक स्वामि सखा सिय पिय के
हृदय न जिसके शिवपद प्रीति
सपने न राम भक्ति अधिकारी
त्रेता युग में एक बार
शिव आए अगस्त्य ऋषि आश्रम
संग सती जग जननि भवानी
मुनि भक्ति भाव पूजे अविनाशी
मुनि ने राम कथा सुनाई
शिव हरिभक्ति सार बतलाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुख से दिन कुछ बीते
शिव सहित सती कैलाश चले
उस समय भार धरा का हरने
रघुकुल राम अवतार लिए
पिता वचन राज को त्यागे
राम लखन दंडक वन विचरे
शिव के मन थी अभिलाषा
पाऊँ दर्शन इष्ट देव का
हरि गुप्त रूप अवतार लिए
जाऊँ लीला में विघ्न पड़े
नर रूप लिए रावण वध आये
न देखूँ मन पछताए
इसी सोच जाते त्रिपुरारी
सती भेद न उनका जानी
रावण इधर मारीच संग आया
छल कर वैदेही हरण किया
मृग मार राम लखन संग लौटे
आश्रम देख नैन जल छाए
रघुवर नर समान विरही
व्याकुल वन ढूँढ़ रहे वैदेही
उस समय राम को शिव ने देखा
नैन तृप्त हर्ष अति उपजा
जय सच्चिदानंद परमधाम
कह शिव किए कर जोड़ प्रणाम
तन पुलकित पति की देख दशा
दक्षसुता मन संशय जागा
सुर मुनि जग शंकर को पूजे
वे कर जोड़े राजपुत्र के
अलख अव्यक्त ब्रह्म अजन्मा
क्या कभी धरे देह मनुज का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिव समान लक्ष्मीपति ज्ञानी
अज्ञानी सम ढूँढे क्या नारी
किंतु शिव वचन न झूठे
सती पड़ी बड़े द्वंद में

जान गए शिव अंतर्यामी
बोले संशय न करो भवानी
जिनकी कथा ऋषि बोले
भक्ति सार कहा था मैंने

मुनि योगी जिनका ध्यान करे
श्रुति वेद पुराण नेति गुण गाए
अव्यक्त ब्रह्म भक्त हित जन्मे
रघुकुल भूषण इष्ट ये मेरे

बार - बार कहे शिव शंकर
उपदेश लगा न सती के हृदय
बोले करती क्यों न परीक्षा
किंतु विवेक समझ न खोना

शिव जाने शुभ नहीं सती का
मेरे कहे न संशय जाता
बैठ गए वट छाया निर्मल
सती विचार करे मन ही मन

तब धर सीता का वेष सती
रघुवर पथ की ओर चली
लक्ष्मण देखे चकित हुए
मायापति राम सब जाने

दोनों कर जोड़ प्रणाम किए
पिता सहित नाम बतलाए
बोले कहाँ गए त्रिपुरारि
किस कारण बन में आप अकेली

सुन राम बचन सती सकुचाई
भय वश शिव की ओर चली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं शिव का कहा न माना
अब शेष रहे जीवन पछताना
हरि माया सती देखती
पथ आगे राम लखन वैदेही
चकित हुई पीछे मुड़ देखी
सुंदर वेष राम लखन जानकी
हरि हर विधि अनेक देखती
लक्ष्मी सती लिए ब्रह्माणी
कर जोड़ स्तुति करें सिद्ध मुनि
सुर शक्ति सहित सेवा चरणों की
जहाँ तहाँ दृश्य यह देखी
व्याकुल नैन मूँद पथ बैठी
आँख खुली न फिर कुछ देखी
हरि माया जान शीश झुकाई
उठ हँस बोले त्रिपुरारि
कैसे परीक्षा सती करी
बोली करी न नाथ परीक्षा
कर जोड़ा जैसा आप किया
तब शिव हृदय ध्यान लगाए
सब कर्तब सती का जाने
हरिइच्छा भावी प्रबल हुई
हुए मौन शिव शीश झुकाया
मन में था पछतावा भारी
क्यों सती वेषधरी सीता
अब यदि करूँ सती से प्रीति
होगी भक्ति मार्ग अनीति
पावन परम पुनीत सती
मन छोड़े प्रीति रीति नहीं
तब कठिन प्रतिज्ञा शिव ठानी
इस तन सती भेंट न होगी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नभ वाणी बोली समर्थ त्रिपुरारि
तुम सम कौन करे प्रण भारी
चिंता व्यापी सती पूछी
कौन प्रतिज्ञा नाथ करी
नटराज हँसे न कुछ बोले
सती दुःखित जाने पति त्यागे
करनी अपनी आप पछताई
आँवे समान रही तपती
कहते जाते कथा पुरानी
शिव पहुँचे कैलाश गिरि
बैठे कमलासन वट छाहीं
सहज अखंड समाधि लगाई
कैलाश गिरि पर सती अकेली
रही शोक सागर में डूबी
दिवस रात युग सम बीते
सती दुःख न कोई बाँटे
नित जपती करे राम से विनती
हे दीनबंधु मैं शरण तुम्हारी
यदि मेरी शिव में सच्ची प्रीति
तो शीघ्र छूट जाय यह देही
सहस्त्र वर्ष बीते सत्तासी
शंकर की समाधि खुली
राम - राम लगे जप करने
आई सती जान पति जागे
कर जोड़ करी सती पदवंदन
शिवजी दिए सामने आसन
कहने लगे कथा सुहानी
उस समय हुए दक्ष प्रजापति
दक्ष को मिला पद ऊँचा
अहंकार दंभ और बढ़ा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विशाल यज्ञ की करी तैयारी
सुर मुनि बनाए यज्ञ भागी
न्यौता जिनको परिवार सहित
जाते विमान चढ़ हर्षित
नभ देख सती विस्मय पूछी
शिव ने पूर्ण बात बताई
यज्ञ पिता के घर है भारी
सुन प्रसन्न सती हृदय सोची
कुछ दिन रह लूँ इसी बहाने
पति त्याग दुःख था पहले से
डरते - डरते पति से पूछा
शिव बोले दक्ष दिए न न्यौता
ब्रह्म सभा मुझसे दुख माने
अब तक मेरा अपमान करे
सब बेटी को यज्ञ बुलाए
हम से बैर तुम्हें भुलाए
बिना बुलाए यदि जाओगी
मान शील में हानि होगी
बार - बार कहते त्रिपुरारि
किंतु सती फिर भी न मानी
नंदी बैठा किए संग गण
पहुँची सती पिता भवन
आदेश दक्ष न पूछा कोई
बहनें झूठा प्रेम दिखातीं
देख पिता ने भी मुख मोड़ा
एक मिली प्रेम से माता
पहुँची यज्ञ सती ने देखा
कहीं न शंभु भाग रखा
पति कहना याद हो आया
शिव अपमान न सहा गया

S.P.S. Library
Srinagar
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अति क्रोधित सती गरजी
सुर मुनि सुनिए मेरी वाणी
जो शिव निंदा यहाँ करी
फल भोगेंगे इसका जल्दी

शिव जगत आत्मा सर्व हितैषी
मेरे पिता बने शिव द्रोही
उनसे उपजी यह देह तजूँगी
कह यज्ञ अग्नि में सती जली

विकराल निनाद वहाँ उठा
शिव गण को अति क्रोध हुआ
तोड़ - फोड़कर मुनि मारे
भृगुवर सबकी जान बचाए

रुद्र सुने जब सती मरण
भेजे क्रोधित वीरभद्र गण
मिल सब यज्ञ विध्वंस किए
दक्ष और सुर दुर्गति भोगे

सती मृत्यु समय वर माँगी
सदा रहे शंकर पद प्रीति
गिरिराज हिमालय के घर जन्मी
पार्वती का तन पाईं

जब से उमा शैल गृह आई
सुख संपत्ति गिरि राज्य सुहाई
फल सुमन तरु पल्लव फूले
मणि माणिक गिरि खान भरे

नारद समाचार ये पाए
कर वीणा ले हिमगिरि पहुँचे
नृप मैना आदर बैठाए
बुलवा कन्या नारद से बोले

गतिशील त्रिकालज्ञ ऋषिवर
पुत्री के गुण दोष बताएँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हँस बोले गूढ़ वचन मुनि
सुंदर सुशील तुम्हारी बेटी
उमा नाम अंबिका भवानी
सुलक्षणा सदा पिय प्यारी
गुणमयी अटल सौभाग्यवती
जगपूजित पतिव्रत अग्रगणी
मात - पिता इससे यश पाएँ
नर सेवा चार पदार्थ पाएँ
दो-चार दोष बतलाऊँ वर के
हस्त पड़ी है रेखा इसके
अगुन अमान मात पिता बिन
संशयहीन वर उदासीन
नग्न जटाधर मन निष्कामी
वेश अमंगल पति होगा जोगी
सुन माता - पिता हुए दुखी
किंतु उमा का हृदय सुखी
झूठ न होगी नारद वाणी
उमा सँजोए हृदय रखी
शिवपद कमल हुई अनुरागिनी
कठिन मिलन यद्यपि मन जानी
पर्वत राज धीरज रख बोले
मुनिवर कुछ उपाय करिए
बोले जो लिखा विधि का
सुर मुनि कोई मिटा न सकता
एक उपाय कहूँ मैं राजा
दैव सहायक काम कर सकता
जो - जो वर के दोष बताए
वे सब हैं शंकर में पूरे
विवाह यदि शिव से हो जाए
वर के दोष गुण बन जाएँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शिव शंभो अनादि समर्थ भगवान
यह विवाह करे सबका कल्याण
है कठिन महादेव की पूजा
रीझे अवश्य जो करें तपस्या

तप करे यदि तुम्हारी बेटी
होनी मिटा सके त्रिपुरारि
यद्यपि वर अनेक इस धरती
इसे छोड़ शिव अन्य नहीं

दुख भंजन सेवक सुखदाई
शिव दया सिंधु सर्वस्व हितैषी
फल इच्छित पाना बिन शिवपूजा
जप जोग करोड़ किए न मिलता

हरिनाम कहे आशीषी गिरिजा
बोले संशय तजिए राजा
शुभ होगा कह चले मुनिज्ञानी
तब राजा से बोली रानी

वर योग्य मिले तब ही मैं स्वामी
ब्याहूँ गिरिजा प्यारी बेटी
बोले हिमवंन ऋषि वचन न झूठे
शिव मिलें कहो तप उमा करे

मैना प्रसन्न पास गई गिरिजा
बैठाई गोद वचन न निकला
मर्म जान जग जननी बोली
माता स्वप्न रात मैं देखी

एक गौर ब्राह्मण मुझसे कहता
शैलवती जा करो तपस्या
नारद वचन नहीं हैं झूठे
फिर माता-पिता यही चाहते

तप बल रचे सृष्टि विधाता
पालन विष्णु शंकर जग हरता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शेष नाग शिर धरा धरे
माता के कंपित गात हुए
दम्पति को वेद शिरा समझाए
जगदम्बा महिमा बतलाए
तप करने बन गई पार्वती
यद्यपि कोमल तन राजकुमारी
तजे भोग प्रीति पद गाढ़ी
शिव सुमिरन तन मन सुधि भूली
संहस्त्र वर्ष मूल फल खाए
खा साग शत वर्ष बिताए
कुछ दिन किए तीक्ष्ण उपवास
जल वायु सेवन निराहार
बेल पत्र जो भूमि गिरे
खा तीन सहस्त्र वर्ष बीते
छोड़े सूखे पर्ण भी खाना
उमा नाम तब हुआ अपर्णा
अति क्षीण तन हुई पार्वती
तब ब्रह्मा की नभ वाणी गूँजी
सफल कामना पार्वती तेरी
तप त्याग तुझे मिले त्रिपुरारि
व्रत किया न ऐसा कोई भवानी
अब सँजो हृदय ब्रह्मा वाणी
पिता बुलाने जब आएँ
हठ त्याग संग अपने घर जाना
सप्त ऋषि जब मिले तुझे
तब वाणी सिद्ध हुई जानना
चिदानंद सुखधाम त्रिपुरारि
सती मरण बाद वैरागी
मन अकाम नित राम जपे
कहे चरित बन - बन बिचरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इस तरह वर्ष कितने बीते
तब राम दयानिधि प्रगटे
महा कठिन व्रत जो शिव धारे
राम प्रशंसा करे प्रेम से

पार्वती का जन्म सुनाए
अनेक भाँति शिव समझाए
बोले मुझ पर जो प्रीति तुम्हारी
तो वरण कीजिए पार्वती

हरि आज्ञा शिव शीश धरे
उस समय सप्त ऋषि मिलने आए
बोले शिव जाकर हे मुनिवरो
ले प्रेम परीक्षा उमा घर भेजो

पहुँचे सप्तऋषि पास भवानी
जैसे तप की मूरति बैठी
बोले क्यों घोर तपस्या करती
बोली नारद वचन मैं मानी

शिव चाहूँ मैं पति अविनाशी
तब हँस बोले सातों ऋषि
गिरि से उपजी देह तुम्हारी
तब ही करी प्रतिज्ञा भारी

नारद वचन मान क्या गिरिजा
कोई बसा सका घर अपना
शिव निर्गुण कुवेष कापाली
निर्लज्ज नग्न अगेह भिखारी

तुम नारद वचन ठगी गई
सुंदर श्रीपति बैकुंठ बिहारी
वर ला दें ऐसा यदि तुम राजी
सुन हँसकर जगदम्बा बोली

कहे सत्य मैं पर्वत जन्मी
तन जाए प्रण नहीं तजूँगी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नारद वचन नहीं मन त्यागे
चाहे बसे या घर उजड़े
महादेव में अवगुण सारे
विष्णु रहे सबगुण वाले
जिसका मन जिसमें रम जाए
उससे उसका काम बने
फिर भी चाहे ब्याह करवाना
तो अनेक जगत वर कन्या
मैं कोटि-कोटि जन्म हठ ठानी
शिव वरूँ नहीं तो रहूँ कुँवारी
सौ बार कहें स्वयं त्रिपुरारि
उपदेश न नारद का छोड़ूँगी
अटल प्रीति सप्त ऋषि देखे
जय जगदम्बा कह शीश झुकाए
गिरिराज से मुनि बात बताए
पिता पार्वती को घर लाए
शिव से जा मुनि प्रीति बखाने
सुन उमा प्रीति शिव अनुरागे
फिर होकर सावधान शंकर
राम प्रेम समाधि में डूबे
उस समय तारक असुर हुआ
जिसने देवों को ललकारा
लोकपाल सब उससे हारे
सुर ब्रह्मा की शरण गए
बोल ब्रह्मा शिव का बेटा
यह असुर का नाश करेगा
दक्ष यज्ञ जो सती जली
पार्वती तन गिरि घर जन्मी
करी घोर तप शिव पति पाने
शिव उदासीन समाधि में बैठे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उपाय एक सुनिए सुरगण
भेजिए रति पति पास शंकर
शिव समाधि वह भंग करे
तब हम मिल विवाह कराएँ

सुर विपदा कामदेव बतलाई
हाथ जोड़ किए सब विनती
अपना मरना निश्चित जाना
सुर कारण काम तैयार हुआ

दल - बल ले मीन ध्वजा
कामदेव प्रभाव फैलाया
व्रत नियम संयम ब्रह्मचर्य
धैर्य ज्ञान धरती से भागा

वैराग्य विचार विवेक सेना
छिपी जा सद्ग्रंथ गुफा
योगी तपस्वी हुए कामवश
फिर मानव की कौन करे बात

जैसे ही शंभु निकट पहुँचा
काम प्रभाव नष्ट हुआ
रुद्र रूप देख डरा
ऋतु वसंत प्रगट किया

वन के तरु-तरु फूल उठें
नव पल्लव कली सुमन खिले
शीतल मंद पवन सुगंधित
खिले कमल सरोवर निर्मल

मकरंद रस भँवरे मडराएँ
कोयल विहंग किल्लोल करें
अप्सरा सुंदरियाँ नृत्य कर रहीं
शिव समाधि न भंग हुई

कामदेव मन क्रोध उठा
आम्र टहनी पर जा बैठा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धनु पर पंच वाण चढ़ाए
खींच कान तक शंभु मारे
पाँच वाण लगे छाती
शिव जाग पड़े समाधि टूटी
हृदय में अति क्षोभ हुआ
इधर - उधर नैन से ताका
रति पति छिपा आम्र मंजरी
देख क्रोध हुआ भारी
तृतीय नेत्र खुला हर का
कामदेव जल भस्म हुआ
पति - मरण जब रति सुनी
करते रुदन वहाँ पहुँची
कहे दयानिधि देख अबला
अब से अनंग बना पति तेरा
बिना शरीर सब तन व्यापेगा
कृष्ण तनय बन फिर आएगा
पति मिलन सुन रति सुखी
शिव के पद कमल गिरी
सुर विष्णु किए ब्रह्मा आगे
पहुँचे जहाँ जगदात्मा बैठे
पूछे किस कारण सुर सब आए
ब्रह्मा प्रशंसा कर बोले
सुर के मन उत्साह बड़ा
भर नैन विवाह तुम्हारा देखें
घनघोर तपस्या करी उमा
अब करिए अंगीकार उसे
विधि की विनय राम आज्ञा
शिव बोले ऐसा ही होगा
सुर सब हर्षित सुमन गिराए
जय महादेव जय शंकर बोले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सप्त ऋषि उस अवसर आए
विधि हिमवंत भवन-भेजे
छल से बोले जा पास भवानी
नारद वचन न सुनी हमारी

अब प्रण हुआ तुम्हारा झूठा
शिव ने काम जलाकर मारा
मुस्कुराते हुए भवानी बोली
ऋषिवर सप्त बड़े मुनि ज्ञानी

तुम अब जाने शिव काम जलाए
क्या काम युक्त रहे अब तक वे
मैं सदा शिव मानी जोगी
अजन्म अकाम विरक्त अभोगी

यही ज़ान करी पद सेवा
पूर्ण करेंगे प्रभु प्रण मेरा
मैं जानूँ शीत न आग तक जाए
यदि जाए अवश्य नष्ट हो जाए

शिव और काम संबंध ऐसा
हरषे मुनि उमा शीश झुकाया
हिमवंत पास सब बात बताए
वे सुघडी सुदिन सुलग्न लिखवाए

छुए चरण हिम दिए पत्रिका
ऋषिवर सौंप दिए कर ब्रह्मा
सुर को विधि बाँच सुनाए
सब सुर मुनि मन हर्ष भरे

सुमन वृष्टि नभ बजी दुंदुभी
मंगल गान अप्सरा नाची
दश दिशा सुर कलश सँवारे
वाहन विमान सँजाए अपने

करे शृंगार गण अपना स्वामी
जटा मुकुट अहि शिर मौरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कंकण कुंडल सर्प की डोरी
बाघम्बर कटि अंग विभूति
नीलकंठ जनेऊ भुजंगा
त्रिनेत्र गले मुंड की माला
दूज चन्द्र शिर पावन गंगा
अशुभ वेश धारे शुभ दाता
डमरू एक त्रिशूल कर दूजे
चढ़े बैल बजे बहु बाजे
सुर हरि सजे बरात ले आए
देख शंभु हँस सुर से बोले
वर अनुरूप बरात न भाई
परदेस में क्या हँसी करानी
तब सुर सबसे अलग चले
हँसे शंभु भृंगी को भेजे
तरह-तरह के शिव गण आए
स्वामी चरणों में शीश झुकाए
वाहन अनेक विचित्र पटभूषण
शिव हँसे देख अपनी वशत
कोई मुखहीन अनेक किसी के
पदहस्त अनेक न एक किसी के
बिन नैन कोई अनेक नैन के
मुँह श्वान गधे सुअर सियार से
कोई मोटा कोई अति दुबला
ले कपाल, रुधिर पट मुंड माला
प्रेत, पिशाच, भूत योगिनी
गाते तरंग चले मन मौजी
इधर वितान हिमवंत सजवाए
तोरण मंगल कलश दुआरे
आए देश - विदेश गिरि राजे
नर - नारी सुंदर वेश सजाये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नगर निकट बरात जब आई
बालक करने चले अगवानी
सुर देख बराती मन को भाए
गण देखे प्राण ले भागे

कंपित बोले जब पूँछी माता
वर बावला बरात यम सेना
बालक जान वृद्ध समझाए
भय बात नहीं बरात शिव लाए

लिए बरात द्वार पर आए
सुंदर जनवासे ठहराए
कंचन थाल लिए वर पानी
सखि गाती मैना चली आरती

वर रूप देख आरती छूटी
भागी जा पलंग पर लेटी
सखि देख मैना रुदन करे
त्रिपुरारि चले गए जनवासे

तब मैना उमा गोद बैठाई
अति दुख स्नेह की वाणी बोली
जो विधि तेरा यह रूप बनाया
क्यों वर बना दिया बावला

क्या बुरा किया मैंने नारद का
उजाड़ दिया हँसता घर मेरा
बेटी को मेरी सिखा गया
वर बौरा पाने करी तपस्या।

लिए तुझे गिरि से कूदूँगी
जल जाऊँ सागर डूबूँगी
घर उजड़े लोग करें बुराई
उस वर से तुझे न ब्याहूँगी

अति विह्वल देख पार्वती बोली
माता क्यों कलंक सिर लेती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुख-दुख मेरे जो भाग्य लिखा
वह तो माता मुझे भोगना

सुन हिमवान लिए मुनि नारद
आए भवन ऋषि सप्त सहित
सबको मुनि समझाए
पूर्व जन्म का हाल बताए

सच है मैना मेरी वाणी
बेटी तेरी जगदम्ब भवानी
अजन्म अनादि शक्ति अविनाशिनी
शिव अर्धाङ्ग सदा निवासिनी

जग उत्पत्ति पालन संहारिणी
स्वयं इच्छा लीला तन चारिणी
पहले दक्ष घर में जन्मी
नाम सती शंकर से ब्याही

एक बार रघुवर बन देखी
संशय उपजा शिव कहा न मानी
सीता रूप धर करी परीक्षा
इस कारण शंकर ने त्यागा

पति त्याग उपजा दुख भारी
जा दक्ष यज्ञ अग्नि में कूदी
अब तेरे घर में जन्मी
शिव के लिए तपस्या की

क्षण में समाचार यह फैला
सबके मन का विषाद गया
मैना हिमवंत आनंद भरे
बार - बार उमा पद छूते

मंगल गान दिशों - दिश गूँजे
भाँति - भाँति ज्यौनार बने
जिस घर में जगदम्बा बैठी
सुरुचि भोज क्या जाए गिनाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बराती सब सादर बुलवाए
सुर विधि हरि भोजन पर बैठे
गाती सुघड़ नारियाँ गाली
तब कौर हाथ उठाएँ बराती
दे आचमन पान दिए
सबको सुंदर वास दिए
मुनि ने आकर लग्न सुनाई
वेद विधि सजाई वेदी
यथा योग्य सुर आसन बैठे
सब नारी मंगल गान करें
शिव बैठे विधि रचित सिंहासन
शीश झुका द्विज रघुवर सुमिरन
मुनिवर ने तब उमा बुलाई
सखियाँ सजा सँवार ले आईं
रूप खानि जगदम्बा जननी
शब्दों से न जाए बखानी
शिव अर्धांगिनी जग की माता
जान सुरों ने शीश झुकाया
मंडप मध्य भवानी आईं
लज्जा पति पद प्रीति छुपाई
विवाह विधि वेद में जैसी
मुनि हिमवंत कराए वैसी
कुश ले कन्या का हाथ थाम
सौंपे उमा शिव अर्धांगिनी मान
महेश पाणिग्रहण किए पार्वती
सुर देख-देख होते अति हर्षित
वेद मंत्र मुनि करें उच्चारण
सुर जय - जयकार करे शंकर
भाँति-भाँति के बाजे बजते
सुमन वृष्टि गगन से बरसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हर गिरिजा विवाह हुआ
चौदह भुवन आनंद भरा
दासी दास रथ हाथी घोड़े
मणि वस्त्र अमोल हिमवंत दिए
तुम पूर्ण काम कृपा के सागर
क्या दूँ तुमको कह चरण गिरे
मैना शिव चरण पकड़कर बोली
सौंपी उमा मैंने अति प्यारी
अपराध क्षमा इसके करना
शिव हृदय संतोष दिए माता
उमा अंग लगा माँ बोली
नारी धर्म एक ही गौरी
करना सदा शंकर की पूजा
पति छोड़ नहीं अन्य देवता
सबसे गले लगीं भवानी
फिर छाती चिपटाई जननी
सबने यथा आशीष दिए
उमा जननी को मुड़-मुड़ देखे
सबको कर तुष्ट शिव पार्वती
चले अपने घर कैलाश गिरि
हिमवंत उन्हें पहुँचाने जाते
मधुर वचन कह शिव लौटाए
गिरि राजा की करी विदाई
सम्मान दान विनय बड़ाई
गण सहित शिव कैलाश पहुँचे
सुरगण अपने भवन गए
शिव शिवा मात - पिता जगत
नूतन श्रृंगार भोग करे नित
गण कर सेवा सुखी रहें
इस तरह काल कितने बीते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

षट् मुख कार्तिक का हुआ जन्म
मारा तारक असुर भयंकर
जो शंभु उमा विवाह यह गाए
घर सुखी कल्याण विवाह शुभ होवे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नारद मोह

गिरि कैलाश धाम हर गिरिजा
विशाल वृक्ष वट देता शोभा
नित नूतन सब ऋतु शीतल छाया
हर विमुख वहाँ प्रवेश न पाता
शिव बैठे स्वयं बिछा बाघम्बर
शशि कुंद वर्ण देह अति सुंदर
प्रिय प्रसन्न जान गिरिजा बोली
पूर्व जन्म सुधि तब आई
विश्वनाथ तुम अन्तर्यामी
रघुवर कथा उस जन्म न जानी
वन में उनकी प्रभुता देखी
पूर्ण रूप मैं समझ न पाई
मुझ पर प्रसन्न कृपा कर कहिए
यदि ब्रह्म राम तो नृप सुत कैसे
यदि राजपुत्र अनादि वे कैसे
फिर आप सदा राम को रटते
ये वही राम पुत्र अवधपति
या निर्गुण ब्रह्म अन्य है कोई
यदि दोनों एक कहें दयानिधि
अनादि ब्रह्म क्यों धारी देही
शिव आनंद सिंधु में डूबे
मन बाहर खींच उमा से बोले
बिन जाने जिसकी प्रभुता
झूठ सत्य प्रतीत होता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जैसे दृश्य जगत यह झूठा
रज्जु सर्प सम भास रहा
अनुभव होती जब उसकी सत्ता
जग खोता स्वप्न समान झूठा
वही ब्रह्म निर्गुण अविनाशी
माया जीव जगत का स्वामी
प्रसिद्ध पुरातन पुरुष दयानिधि
रघुकुल भूषण मेरे स्वामी
चेतन रूप राम भगवान
जग जीवात्मा करे प्रकाश
माया जड़ जीव सत्य भासती
मायापति की सत्ता पाई
रामभानु सत्-चित् आनंदा
मोह रात न वहाँ बसेरा
शोक हर्ष अज्ञान ज्ञान
अभिमान मान से परे राम
राम अतर्क्य बुद्धि मन वाणी
विषय इंद्रिय देव के स्वामी
सर्वरहित सब अन्तस वासी
दशरथ नंदन अवध बिहारी
कहे वेद ब्रह्म को ऐसा
बिन पद चले कान बिन सुनता
बिना हस्त कर्म सब करता
बिन जिह्वा भोजन रस लेता
बिना नैन वह सब कुछ देखे
बिन शरीर स्पर्श करे
बिना नाक गंध सब जाने
वाणी नहीं किंतु सब बोले
वही अलख रूप अजन्मा
कोशलपति राम परमात्मा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

महिमा अगम्य क्या गाए कोई
कवि शारद शेष पार न पाई
कारण अनेक राम जन्म के
सुनो भगवती शिव बोले
एक बार श्राप नारद के
हरि भू पर अवतार लिए
हिमगिरि की पावन एक गुफा
सुहावन गंगा बहे जहाँ
नारद हरि पद प्रीति जगी
निर्मल मन सहज समाधि लगी
यह देख सुरपति इंद्र डरे
बैकुंठ न तप बल मुनि छीने
कामदेव बुलवाए सादर
बोले भंग करो तप जाकर
मीन ध्वजा धारी रति पति
पहुँचा ले सेना अपनी
त्रिविध बयार बही सुहानी
छाया बसंत कोयल बोली
रम्भा काम नृत्य करती
किंतु मुनि समाधि न टूटी
सब उपाय कर रतिपति हारा
भयवश मुनि चरण गिरा
क्रोध नहीं मुनि को व्यापा
प्रेम बचन कह तुष्ट किया
अहंकार नारद मन जागा
मैंने कामदेव को जीता
मुनि कहे शिव से यह घटना
बोले शंकर हरि से न कहना
मन में मुनि के यह न भाया
ब्रह्मलोक में की जा चर्चा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर वीणा ले हरि गुण गाते
नारद क्षीर सिंधु जा पहुँचे
बैठाए मुनि हरि हँस पूछे
बहुत दिनों पर दया किए
कामदेव पर विजय सुनाई
यद्यपि मना किए त्रिपुरारि
बोले हरि मोह उसे व्यापते
ज्ञान वैराग्य नहीं मन जिसके
ब्रह्मचर्य व्रत मुनि तुम्हारा
क्या काम तुम्हें पीड़ित कर सकता
फूल उठे गर्व से नारद
बोले सब कृपा तुम्हारी भगवन्
अंकुर मोह मुनि मन उपजा
होगा तरु विशाल प्रभु देखा
तुरत इसे उखाड़ना होगा
मेरा प्रण सेवक रक्षा करना
मुनि चले चरण शीश झुकाया
हरि प्रेरित की अपनी माया
बन में सुंदर नगर रचा
नर-नारि रूप गुण खान जहाँ
शीलनिधि वहाँ का राजा
अति विशाल थी उसकी सेना
विश्वमोहिनी कन्या उसकी
लक्ष्मी से भी अधिक सुंदरी
स्वयंवर चुनती वह नृपबाला
देश - देश के पहुँचे राजा
नारद चकित पुरी में पहुँचे
उठ राजा सादर बैठाए
अपनी कन्या को बुलवाए
छुआ चरण नारद से बोले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गुण - दोष कहिए कन्या के
मुनि रूप देख वैराग भुलाए
लक्षण जब कन्या के देखे
प्रसन्न हुए मुनि हृदय जाने
वरण करे जिसको यह कन्या
अजित अमर वह स्वामी जग का
लक्षण मुनि मन अपने रखे
कुछ गढ़कर राजा से बोले
नारद चले सोच मन भारी
ब्याहे कैसे मुझे सुकुमारी
जब-तप से कुछ भला न होगा
रूप चाहिए श्रीपति जैसा
तब कुमारि डाले वरमाला
जाकर माँगूँ रूप हरि का
किंतु देर इसमें हो सकती
इस कारण ध्यान किए वहीं
प्रगट हुए हरि लीलाधारी
नारद दीन कथा सुनाई
हे नाथ, रूप दीजिए अपना
मुझसे ब्याह करे वह कन्या
जिससे हित हो मेरा
वह करें नाथ मैं दास आपका
हरि बोले मुनि भला तुम्हारा
जिससे होगा वही करूँगा
मुनि माया वश मूढ़ बने
स्वयंवर भूमि तुरंत पहुँचे
श्रृंगार किए बैठे सब राजा
मुनि सोचे अति रूप मैं पाया
मुझे छोड़ यह राजकुँवारी
अन्य किसी को नहीं वरेगी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कृपानिधान भक्त हितैषी
मुनि कुरूप बनाए श्रीपति
दो शिव गण भेद यह जाने
द्विज रूप धरे वहाँ बैठे

मुनि सूरत देख सुना हँस बोले
हरि कैसा सुंदर रूप बनाए
देख इन्हें रीझेगी बाला
देगी डाल कंठ वरमाला

मुनि रूप वह न कोई देखा
केवल देखी वह नृप बाला
बानर मुख भंयकर देही
डरकर बढ़ी बाल हंसिनी

मुनि व्याकुल बार-बार उचके
शिवगण लोट - पोट हँसते
आए नृप की देह धरे हरि
पहनाई वरमाल कुँवारी

दुलहिन विष्णु साथ ले चले
देख नारद विकल हो गए
हँसते - हँसते बोले शिवगण
मुख अपना देखो दर्पण

जल में मुख देखे अपना
मुनि को अत्यंत क्रोध हुआ
श्राप दिया रुद्रगणों को
बनो निशाचर तुम दोनों

फिर जल देख रूप निज पाया
किंतु हृदय संतोष न आया
मुनि के अधर क्रोध से फड़के
विष्णु रमा कुँवारी देखे

मीठी वाणी श्रीपति बोले
मुनि व्याकुल तुम कहाँ चले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नारद मन क्रोध अति व्यापा
लक्ष्मीपति को श्राप दिया
मुझे ठगा तुमने नर देही
तुम्हें देह वह धारण करनी
कपि सूरत तुमने की मेरी
मदद करेंगे कपि तुम्हारी
नारि विरह करवाया मुझसे
विरह नारि दुःख तुम भोगोगे
रख शीश शाप करी मुनि विनती
तब हरि ने अपनी माया खींची
थी न रमा न राजकुमारी
मुनि चरण गिरे हरि माया जानी
कहा नाथ अब रक्षा करिए
दुर्वचन कहे मैंने बहुतेरे
मेरा श्राप झूठ हो जाए
संताप हृदय का कैसे जाए
बोले हरि यह मेरी इच्छा
करो जाप शंकर शतनामा
दोनों गण मुनि जाते देखे
माँगी क्षमा चरण को पकड़े
बोले मुनि असुर प्रतापी होंगे
हरि हाथों मुक्ति पाओगे

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मनु शतरूपा

हरि अनंत हरि कथा अनंत
यह भेद जानें साधू - संत
सुनो भवानी हेतु दूसरा
जब ब्रह्म कोशलपुर राजा
स्वायंभू थे मनु शतरूपा
जिनसे मानव वंश चला
काल अनेक राज्य भोगे
विषय वैराग नहीं मन आए
हृदय संताप मन पछतावा
भक्ति बिना चौथापन आया
राज-पाट पुत्र को सौंपे
दंपति नैमिषारण्य गए
'ॐ नमो भगवते वासु देवाय'
जपते पाई प्रीति हरि पद
आहार त्याग कंद फल खाए
उसे त्याग पी सलिल रहे
लिए रहे हृदय अभिलाषा
देखे आदि स्वरूप ब्रह्म का
अगुण अखंड अनंत अनादि
वेद न जाने जिसकी गतिविधि
ऐसे हरि आते भक्त प्रेमवश
तन धारण कर मनुज रूप
यदि ये श्रुति के सत्य वचन
हम पाएँ ब्रह्मदेव दर्शन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

छः सहस्त्र वर्ष जल सेवन
सप्त सहस्त्र वर्ष पवन
त्याग उसे एक पद दोनों
खड़े रहे दश सहस्त्र वर्षों

घनघोर तपस्या से तन सूखा
'वर माँगो' बोले हरि हर ब्रह्मा
किंतु भंग न हुई तपस्या
तब दास ब्रह्म ने अपना चीन्हा

हरषे दोनों सुन नभ वाणी
कर्ण रंध्र से जो मन उतरी
वर माँगो प्रसन्न मैं तुमसे
कर जोड़ राजा-रानी बोले

परिभाषा वेद बखाने जिसकी
जो शिव के मन मंदिर वासी
भुशुंड कथा सुनाते जिनकी
पाए दर्शन उनके स्वामी

सुने वचन प्रेमरस पागे
आदि शक्ति सहित प्रभु उतरे
तन की घनश्याम छबि नीरद सी
पटपीत छटा दामिनी सी दमकी

शीश मुकुट कुंडल मकरारे
अंबुज अधर नैन रतनारे
सुभग नासिका चिबुक सुहावन
कपोल चारु अनोखी चितवन

सिह कंध भुजाएँ लंबी
चारु जनेऊ नाभि में त्रिबली
श्रीवत्स रतन मणिहार गले
कटि तरकश धनुष बाण धरे

पद कमल देख मन भ्रमर बना
एकटक देखे मनु शतरूपा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गिरे भूमि प्रभु चरण गहे
शीश स्पर्श किए प्रभु बोले
वर माँगो दूँगा मन चाहे
सुन कर जोड़ दंपति बोले
हे नाथ हृदय बड़ी लालसा
हम पाए प्रभु पुत्र तुम जैसा
सुन अनमोल वचन दंपति
एवमस्तु कहे करुणानिधि
खोजूँ किसको अपने जैसा
मैं ही पुत्र बनूँ तुम्हारा
अनेक काल के अंतराल
होगे तुम नरेश अवध
तब बन पुत्र जन्म मैं लूँगा
दोनों की इच्छा पूर्ण करूँगा
त्रेता युग में दशरथ सुत बन
हरि ने लिया राम जनम
पावन भारत यह देश बना
जग में सत् का उद्घोष हुआ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रावण जन्म

एक अन्य जन्म का कारण
कवि तुलसी लिखे जगत विदित
जब-जब धर्म हानि होती
जग में बढ़े राक्षस अभिमानी
दुराचार भू संत सताते
तब-तब अवतार हरि जग लेते
दुष्ट मार सुखी जन करते
पुनः धर्म स्थापन करते
पृथ्वी पर रावण जन्म लिया
वह शूरवीर बलबान महा
दशशीश उसकी बीस भुजा
भट कुंभकर्ण वीर भ्राता
विभीषण था भाई सौतेला
अनुरागी विष्णु चरण का
ऋषि पुलस्त्य के वे वंशज
हुए श्रापवश वे राक्षस
तीनों ने की घोर तपस्या
'वर माँगो' बोले प्रसन्न ब्रह्मा
रावण बोला हम मारे न मरें
नर-वानर छोड़ अन्य किसी से
विधि कुंभकर्ण मति फेरी
छः मास वह निंद्रा माँगी
विभीषण ब्रह्मा से माँगा
विष्णु चरण अनुराग सदा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गिरि त्रिकुट मध्य पयोनिधि
स्वर्ण बनी थी लंका नगरी
रावण वे यक्षों से छीनी
बना लिया राज्यधानी

कर कुबेर पर उसने धावा
पुष्पक विमान जा छीना
खेल-खेल में एक बार
गिरि कैलाश उठा लिया

मेघनाद रावण का बेटा
इंद्रलोक जिससे थर्राता
योद्धा अतिकाय अकंपन दुर्मुख
बज्रदंत धूमकेतु भयंकर

मनमाना रूप किए भयंकर
आसुरी माया दिखा डराते
जप हवन यज्ञ पहुँचाते बाधा
सुर मुनि से करे सदा शत्रुता

रावण असुर सम्राट बना
संपूर्ण विश्व वह जीत लिया
वरुण, अग्नि, यम आदि देवता
छोड़ स्वर्ग बसे कंदरा

हिंसा अधर्म अनाचार फैला
सुर पृथ्वी गौ की हुई दुर्दशा
सब मिल गए पास विधाता
सुर सोचे हरि अब मिले कहाँ

उस समय शिव ने वचन कहा
हरि व्यापक समरूप सदा
प्रेम भाव हम उन्हें पुकारें
विधि भक्तिभाव स्तुति गाये

जय लक्ष्मीकांत दीन हितकारी
सुखदायक प्रण पाले असुरारि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जय-जय व्यापक सब घटवासी
जग पालक दयासिंधु अविनाशी
सृष्टि विधायक सत् चित् आनंद
सहज कृपालु भव भय मोचन
सुर सिद्ध मुनि पर संकट भारी
सुरनायक रक्षा करो हमारी
मुकुंद अगोचर जय मायापति
अद्भुत मर्म न जाने कोई
सुर मुनि सदा चरण अनुरागी
हे नाथ चिंता हरो हमारी
पूजन विधि भक्ति भाव न जाने
तुम दीनबंधु हम दीन पुकारे
मृदु बनी धरा राह देखती
छल-कपट त्याग हम शरण तुम्हारी
उस क्षण नभ वाणी गूँजी
भयभीत न हो सुर सिद्ध मुनि
पाए अदिति कश्यप मुझसे
वरदान पूर्वजन्भ· अपने
बने वही दशरथ कौशल्या
अवध पुरी के रानी राजा
अंश सहित बन चार भ्राता
सूर्यवंश जन्म मैं लूँगा
नभ वाणी सुन सब हरषित
ब्रह्मा बोले जाओ सुरगण
लो जन्म वानर रूप धरा
करना भरपूर हरिपद सेवा
वानर रूप जन्मे सुर धरती
सब विशाल अतुलित बलशाली
नख पत्थर ·गिरि आयुध जिनका
हरि आवन की करे प्रतीक्षा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुखदायी रावण का वध करना
वेद धर्म की रक्षा करना
सुर पृथ्वी मुनि गौ रक्षा
एक हेतु राम जन्म का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम जन्म

था रघुकुल राज्य अयोध्या
धर्म धुरंधर दशरथ राजा
पुनीत तीन रानी गुणवाली
संतान नहीं उनके थी कोई

पुत्र प्राप्ति हेतु दशरथ
करवाए ऋषि शृंगी से यज्ञ
प्रकटे अग्निदेव लिए हवि
बोले दो खिला इसे सब रानी

दशरथ उसका अर्धभाग
खिला दिए कौशल्या को
फिर दो भाग आधे का कर
एक खिलाए कैकई को

शेष भाग के भाग किए दो
हरषित दिए सुमित्रा को
रहीं गर्भ से तीनो रानी
परिवार प्रजा सब हुए सुखी

दिन जाते कुछ लगी न देरी
राम जन्म जगत् सुखदायी
ग्रह, वार, तिथि योग लगन
अनुकूल हुए हरि अवतरण

नवमी चैत्र शुक्ल अति पावन
मध्य दिवस अभिजित मुहूरत
अति शीत न घाम बयार सुगंधित
उतरे विश्व शांति जगदीश्वर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ब्रह्मा सँग सब देव चले
विमान सजाए नभ पर छाए
आकाश धमाधम बजे नगाड़े
पुष्पांजलि दे सुर स्तुति गाए
प्रगटे शोभा सिंधु खरारि
कौशल्या सफल नैन मनाई
अद्‌भुत रूप मुनिमन छीनी
हर्षित माता रूप निहारी
शंख, चक्र, पद्म गदा
शोभित आयुध चार भुजा
घनस्याम वर्ण भूषण बनमाला
नैना विशाल शांति - सुखदाता
कर जोड़े बोली करुणानिधि
जो स्तुति गाऊँ वह है थोड़ी
माया गुण ज्ञान मान परे
तुम अनंत वेद पुराण कहे
प्रतिरोम असंख्य ब्रह्मांड धरे
मायापति सगुण रूप धरे
उपहास करे जग तुम अनुरागी
रहे गर्भ मेरे श्रीपति
पूर्व जन्म वरदान बतलाए
वात्सल्य जगाए हरि मुस्काए
बोली माता त्याग रूप यह
बन शिशु गोदी करो रुदन
रुदन किया तब प्रभु ने भारी
दासी तथा रानियाँ दौड़ीं
भवन नगर हर्ष उमड़ा
दशरथ सुत ने जन्म लिया
ब्रह्मानंद मिला दशरथ को
बोले बाजे जोर बजाओ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शंख, नगाड़े, ढोल बज उठे
वशिष्ठ अनुपम बालक देखे
जात कर्म कर दशरथ राजा
दान दिए मणि मोती माला
ध्वजा, पताका तोरण फहरे
घर पुर भवन बजार सजे
स्वर्ण कलश भर मंगल थाल
गातीं सुंदरियाँ कर शृंगार
आरती न्यौछावर शिशु का करती
मागध गाते रघुकुल कीर्ति
कैकई तथा सुमित्रा रानी
सुंदर ललनों को जन्मीं
चंदन, केसर, कस्तूरी रोली
मानो आँगन में कीच हुई
उड़ी अगर-कपूर सुगंधी
लाली अबीर भवन में छाई
नर रूप लिए भुशुंड त्रिपुरारि
मगन पद चले अवधेश गली
शुभ दिन शुभ घड़ी देख लगन
किए वशिष्ठ गुरु नामकरण
जो सुख धाम जगत विश्राम
कौशल्या सुत नाम राम
विश्व भरण-पोषण जगत
रखे कैकई सुत नाम भरत
जिनका स्मरण शत्रु का मर्दन
सुमित्रा सुत नाम शत्रुघ्न
लक्षण धाम आधार विश्व
लक्ष्मण नाम दिए वशिष्ठ
बोले गुरु चार तत्व वेद ये
अति प्रेमानन्द सुख देने आए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्याम गौर वर्ण दो जोड़ी
घर आँगन शोभा करती
लक्ष्मण राम चरण के प्रेमी
शत्रुघ्न भरत चरण अनुगामी

अंतसकृपा हँसी छलकाती
जैसे बिखेरता चंद्र चाँदनी
हरिताभ मोरकंठ नीरद सी
राम कांति जगत सुखदायी

अंकुश वज्र ध्वजा पद रेखी
नख अरुण कंज पर जैसे मोती
कटि करधनी पग पैंजनी
बधनख मणि माल कंठ सुहाती

भृगुचरण चिह्न छाती अंकित
पीत झगुलियाँ तन शोभित
कजरारे नैन केश घुँघराले
काजल टीका सोहे माथे

हँस मुख खोले दिखे दँतुलियाँ
रघुवर आँगन चले घुटनियाँ
किलकारी मार प्रभु भागे आगे
सब मिल रानी गोद उठावें

चले राम पइयाँ-पइयाँ
कर थामे दशरथ कौशल्या
चंचल चपल रखे पद अँगना
बोल उठे रुनझुन पैंजानियाँ

मधुर तोतलि वाणी बोले
माता पिता मन मोद दिलावे
कभी मचल कर कहते ललना
मैय्या दे मुझको चंद खिलौना

कभी दौड़ बाहर को भागे
धूल सने गोदी चढ़ जावे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भूपति भवन आनंद बरसता
आँगन खेलें चारों भइया
एक बार माता नहलाई
स्वर्ण पालने राम सुलाई
इष्टदेव नैवेद्य चढ़ाई
गई जहाँ बनी रसोई
जाकर फिर पूजा घर झाँकी
खाते भोग राम को देखी
चकित घर देखी कौशल्या
शिशु राग पालने में सोया
पुनः गई देखी सुत खाता
लगी काँपने धीरज खोया
हँसे राम मुँह खोला अपना
अखंड रूप माता ने देखा
अगनित ब्रह्मांड रोम-रोम
अगनित हरि हर विधि चंद्र सूर्य
सभीत जोड़ कर बोली माता
प्रभु अब न कभी यह रूप दिखाना
चूड़ा करण गुरु-करवाई
सुख से बाल्य अवस्था बीती
किशोर हुए जब चारों भ्राता
यज्ञोपवीत संस्कार हुआ
राम विनय रूप गुण सागर
माताएँ करतीं प्राण न्यौछावर
आनंद कंद दास सुखदाई
रघुबर सब भ्राता के स्वामी
गुरुकुल एक साथ पढ़े
धनुविद्या में दक्ष हुए
संग सखा बन मृगया जाते
आज्ञा माता पिता की माने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विश्मामित्र एवं राम-लक्ष्मण

विश्मामित्र महामुनि ज्ञानी
वन में करते यज्ञ तपस्वी
मारीच सुबाहु आदि निशाचर
विध्वंस यज्ञ करें आकर
मुनि मन सोचे राम बिना
निश्चर पापी संहार न होगा
हरि अवतार ध्यान कर जाने
गए अवध दरशन के प्यासे
खड़े हुए दशरथ कर जोड़े
बैठा सिंहासन चरण पखारे
दे भोजन कर सेवा सम्मान
पूछा आने का कारण
बोले मुनि हे राजन् सुनिए
असुर यज्ञ में बाधा देते
दे दो राम लखन मुझको
मारेंगे वे असुरों को
राजा यह सुन काँप उठे
राम अधिक प्राण से प्यारे
कोमल किशोर दोनों कुमार
असुर दुष्ट बलवान भयंकर
वशिष्ठ दशरथ को समझाए
नृप के संशय दूर हुए
देकर राम लखन को शिक्षा
मुनि सौंपे दोनों सुत राजा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुनि संग चले राम लक्ष्मण
सब माता के छूकर पैर
चले वीर दो सिंह समान
वन को करने दैत्य विहीन

अति प्रसन्न कौशिक मन ही मन
मेरे सँग बन आए भगवन
दौड़ी बड़े वेग ताड़का
रघुवर उसे तीर से मारा

विश्वामित्र मुनि मंत्र सिखाए
जिससे भूख न प्यास सताए
आता अतुल बल तेज प्रकाश तन
सब सौंपे अपने अस्त्र-शस्त्र

प्रातः मुनि से कहे राम
यज्ञ कीजिए हो निर्भय
रखवाली करे अनुज संग धनु ले
विघ्न डालने राक्षस दौड़े

बेफर तीर राम चलाए
मारीच गिरा सौ योजन पीछे
अग्नि तीर चला सुबाहु मारा
लक्ष्मण संहार किए सब सेना

बना मुनि समाज को निर्भय
राम रहे वहाँ कुछ दिन तक
धनुष यज्ञ की खबर मिली
मुनिसंग चले मिथिला नगरी

राह उजाड़ आश्रम देखा
खग मृग वहाँ न कोई पाया
अति विस्मय पूछे नृप किशोर
कथा सुना बोले मुनि कौशिक

गौतम ऋषि ने श्राप दिया
अपनी नारी नाम अहिल्या

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बनी शिला मूर्ति वह नारी
रघुवर चाहे पदधूलि तुम्हारी
राम चरण शिला लगाए
हुई प्रगट अहिल्या फिर से
वंदन पद रघुपति स्तुति गाई
वर पा आनंदित पति लोक गई
पहुँचे सब मुनि संग गंगा तट
हरषे राम देख जल पावन
मुनि बोले राम तुम्हारे पूर्वज
इक्ष्वाकु वंश के भगीरथ के तप
गंगा स्वर्ग लोक से उतरी
पाप हारिणी भू पर आईं
राम प्रसन्न स्नान किए सब
आगे बढ़े लखन मुनि संग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जनकपुरी में राम-लक्ष्मण

जनकपुरी रघुनंदन पहुँचे
अनेक देश के भूपति ठहरे
नगर सुहाना वैभवशाली
रघुवर चित्त को प्रकृति चुराई

कौशिक आम्र वन में ठहरे
जनक सुने स्वागत को आए
मुनि चरण शीश पर रखे
फिर दो राम लखन देखे

रूप देख नैन अति हरषे
उत्सुक हो मुनि से पूछे
कौन ये दो बालक मुनिवर
ऋषिकुल अथवा राजकुँवर

मन मेरा जो निर्गुण ध्यान करे
क्यों आज ब्रह्म को त्यागे
मुनि हँसे और फिर बोले
ये दो बालक हैं ही ऐसे

जाते जहाँ चित्त चुराते
नाम राम लक्ष्मण इनके
नृप दशरथ के ये बेटे
सुन जनक सहित सब मुग्ध हुए

मुनि को दे सुखमय आवास
तब गए जनक अपने निवास
नगर देखने दोनों भाई
चले लिए आज्ञा गुरु की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

गौरवर्ण सुघड़ साँवरे
दो किशोर मिथिला आए
धूम हुई निरखे नर-नारी
युवती सब खड़ी झरोखे झाँकी

पीत वस्त्र अंग सुहाते
टोपी रुचिर केश घुँघराले
कर कमल धनु वाण लिए
कटि में तरकश कसे हुए

केहरि कंधे भुजा विशाल
भौंहें कमान चितचोर नयन
कर्णफूल गज मुक्ता माल
ललाट तिलक अधर मुस्कान

चतुर सखी बोली दूजी से
कोशल नरेश दशरथ के बेटे
राम स्याम कौशल्या माता
लक्ष्मण गौर सुमित्रा माता

सुंदरता में काम लजाए
बड़े वीर ये राक्षस मारे
मुनि यज्ञ करी रखवाली
उद्धार करी ये गौतम नारी

राम सहज शंकर धनु तोड़े
सखि विश्वास हुआ मन मेरे
सखियाँ ब्रह्मा वरदान माँगती
रघुपति ब्याहें जनक नंदिनी

बाल वृंद नगर के मोहित
दिखलाते यज्ञ भूमि मुदित
राम लखन के तन छू लेते
सारा सुख बटोरते मानो

आज्ञा ले प्रातः काल गुरु की
गए राम जनक फुलवारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तरु पल्लव सुमन लताएँ फूलीं
वासंती सुगंध बयार बही
उपवन मध्य सरोवर निर्मल
माणिक सोपान करे झिलमिल
खिले कमल भ्रमर मँडराते
कोयल, मोर, पपीहा बोले
हो उठे रामचंद्र अति पुलकित
चुनने लगे फूल मुदित मन
उस समय चतुर सखी संग सीता
करने आई गौरी पूजा
स्नान किया सरोवर के जल
गई निकट भवानी मंदिर
कर जोड़ शीश झुका जानकी
योग्य वर देवी से माँगी
सखी समाज एक थी भटकी
राम लखन को उपवन देखी
आ विभोर सीता से बोली
सखि दो किशोर आए फुलवारी
स्याम एक दूजे हैं गोरे
कैसे कहूँ रूप, गुण उनके
नैन पास नहीं है वाणी
वाणी को मिले नैन नहीं
उनकी वह रूप माधुरीवश
मिथिला के नर - नारी सब
यह सुन उत्सुक हुई जानकी
प्रीति पुरातन हृदय जगी
मृगछौनी सम चौकन्नी सीता
कोमल पग आगे धरी सभीता
कंगन नूपुर पायल छनके
ध्वनि सुन राम लखन से बोले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बज उठी लखन काम दुंदुभी
मन विश्व विजय करने को ठानी
तब रघुवर वैदेही देखे
राशि मुख बने नैन चकोरे

सिय तन सुंदरता पा निखरी
जो नहा दिव्य सिंधु में आई
मानो सुंदरता निकेत में
दीपशिखा कोई जलती

देखें विधि की अनुपम रचना
राम मुग्ध लावण्य सिया
बोले जनकसुता यह लक्ष्मण
जिस कारण यह धनुष यज्ञ

अलौकिक रूप देख इसका
पावन पुनीत मन डोला मेरा
स्वभाव सहज रघुवंश पुरुष का
मन कुपंथ पर पैर न रखता

न जाने प्रीति बढ़ी इतनी
जिसने परनारि न सपने देखी
न जानूँ विधि क्या भाग्य लिखा
पर मेरा मन उल्लास भरा

वैदेही देखी चारों ओर
कहाँ गए दो नृप किशोर
लता ओट सखी दिखलाई
देख नैन रूप निधि पाई

लोचन थके राम छबि देखे
पलक कपाट लगा न भूले
नैन राह प्रिय हृदय बसाई
सीता पलक कपाट लगाई

दो भ्राता लता कुंज निकले
दो शशि उगे हटा पट घन के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नील पीत कमल तन कांति
मोर पंख शिर कली गुँथी
भाल तिलक पसीना झलके
कुंडल मणि माल कंठ डोलते
सुंदर चिबुक कपोल नासिका
नैन कंज अधर मधुरिमा
मुख छीने कामदेव छबि
महाबाहु पटपीत सिंह कटि
कर में लिए साँवरे दोना
तन मन सुधि बिसराई सुखियाँ
सखि बोली सीता पलक उठाई
दो नर सिंह खड़े रघुवंशी
नख शिख शोभा रघुवर निरखी
पिता प्रण स्मरण क्षुब्ध हुई
भारी कठोर शिव धनुष जानी
घनश्याम मूरत मन बसाई
भवानी मंदिर गई जानकी
शीष झुका जोड़कर बोली
जय जय हिमगिरि राजदुलारी
चंद्रमौलि की चंद्र चकोरी
जय गणेश कार्तिक की माता
स्वीकार करो अभिनंदन मेरा
विद्युत सम कांतिमयी जगदंबा
आदि मध्य न अंत तुम्हारा
पालन सृजन संहारिणी जननी
जगत मोहिनी विश्व विहारिणी
पति इष्टदेव अग्रणी नारी
वेद न जाने शक्ति तुम्हारी
जो शरण चरण तुम्हारे देवी
चारों फल झोली भर देती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अंतस वासिनी जय सुखदायिनी
वरदायिनी त्रिपुरारि प्यारी
मेरी मनोकामना जानी
कह विह्वल चरण गहे वैदेही
विनय प्रेमवश हुई भवानी
गिरा माल मूरत मुस्काई
सिय सादर शीश प्रसाद धरी
मन भरा हर्ष भवानी बोली
सीता सत्य अशीष हमारी
होगी मनोकामना पूरी
सत्य वचन ऋषि नारद के
वर मिले जो मन में तेरे
इधर राम बोले सब कुछ
दिए मुनि के हाथ सुमन
कर पूजन आशीष दे बोले
मनोरथ सफल तुम्हारे होंगे
बनी प्रेम रंग की स्याही
राम हृदय लिखी जानकी
हुई रात्रि नभ उगा चंद्रमा
रघुवर याद हुआ सिय मुखड़ा
बोले लखन चंद्रमुख सीता
बना चाँद आज यह फीका
छोटा - बड़ा कभी न सुहाना
वैरी अम्बुज का विष भ्राता
प्रातः उठे राम रघुवीरा
कहें लखन देखिए भैया
रवि उदय क्षीण हुए तारे
जैसे ये शूर तुम्हारे आगे
शिव धनुष क्या वे तोड़ सके
तारे अँधेरे कहीं मिटाते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चमकेगा शौर्य सूर्य तुम्हारा
तब टूटेगा यह धनु भैया

नृप ने शतानंद को भेजा
विश्वामित्र को दिया संदेशा
चले देखने सिया स्वयंवर
मुनिवर राम लखन के संग

खबर नगर जनता पाई
धनुष यज्ञ आते दो भाई
युवक बाल बूढ़े नर-नारी
आए काम काज बिसारी

मिथिला पति की उचित व्यवस्था
योग्य जगह सबको बैठाया
उस क्षण रंगभूमि में आए
मुनि संग राम लक्ष्मण सुंदर

लगे नृप समाज संघ
तारे मध्य दो पूर्ण चंद्र
जिनकी रही भावना जैसी
प्रभु सूरत वे देखी वैसी

वीरों को साक्षात वीर रस
कुटिलों को वे लगे भयानक
असुरों को प्रत्यक्ष काल
जनता को दो नर भूषण

इष्टदेव हरिभक्तों को
परम तत्व योगी जन को
विराट रूप देखे ज्ञानी
नारी रुचि अनुरूप देखती

राजा रानी शिशु सम देखे
जनक कुटुम्ब सजन जैसे
सीता रघुबर को ऐसे देखी
सुख अपार परे वाणी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्याम गौर वर्ण दो भाई
सहज मनोहरता तन छाई
पट पीत धनुष वाण कर धारी
ग्रीवा शंख त्रिरेख मोहिनी

गजभुक्ता कंठे तुलसी माला
वृषभ कंध वक्ष स्थल चौड़ा
शरद चंद लज्जित मुख अनुपम
कमल नयन मन हारी चितवन

जनक देख अति सुखी हुए
आसन उच्च मंच बैठाए
सब सखियाँ मिल सीता लाई
देख भूप मोहित नर-नारी

नखशिख शृंगार किए वैदेही
कर सरोज जयमाल सुहाती
सुर दुंदुभी बजाए किन्नर गाते
अप्सरा लगी नृत्य दिखाने

सीता मनमोहन रघुपति देखी
गुरु समाज देख लजाई
नर - नारी अनुपम रूप निहारे
सिया - राम विवाह मनाए

जनक वंश की कीर्ति सुना
बोले भाट जनक प्रतिज्ञा
जो कठोर शिव धनु तोड़ेगा
वरण करेगी उसको सीता

शूरवीर राजा इठलाते
जोर लगा शिव धनुष उठाते
तनिक उसे खिसका न पाए
श्रीहत होकर बैठ गए

पराक्रमी राजा सब हारे
देख जनक दुखी हो बोले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब अभिमान करे न कोई
वीर विहीन धरा मैं जानी

यह सुन लक्ष्मण तमक उठे
भौंहें वक्र क्रोध से बोले
जहाँ वीर रघुकुल के बैठे
कह सकता कोई वचन न ऐसे

भरी सभा मैं कहता भैया
यदि तुम्हारी पाऊँ आज्ञा
गेंद समान ब्रह्मांड उठाऊँ
कच्चे घट की तरह फोड़ दूँ

मूली - सा उखाड़ूँ सुमेर
यह तो बेचारा जीर्ण धनुष
कमल नाल सा इसे चढ़ा
सौ योजन जाऊँ दौड़ा

यदि न तोड़ूँ बरसाती छत्ता
शपथ राम धनु हाथ न लूँगा
लखन वचन गगन गूँजे
पृथ्वी काँपी दिग्गज डोले

हर्षित सीता सुन लखन वचन
भयभीत भूप सकुचे जनक
रघुपति विश्वामित्र अपने मन
पुलके बार - बार मुदित

राम सैन से मना किए
अति प्रेम निकट लखन बैठाए
तब बोले कौशिक राम उठो
धनु तोड़ जनक संताप हरो

शीश झुका गुरु चरण
रवि सम राम उदित मंच
शंकित हुई सुनयना रानी
सीता महेश भवानी जपती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहती मन ही मन गणपति देवा
इस दिन के लिए करी मैं सेवा
नाथ विनती तुमसे इतनी
करिए धनु की गुरुता थोड़ी
क्यों कठिन प्रतिज्ञा पिता करी
समझाए क्या उनको कोई
कहाँ वज्र सा धनुष कठोर
कोमल गात स्याम किशोर
फिर मन में सिय दृढ़ता लाई
तन मन वचन हुई मैं उनकी
यदि मेरा मन रामचरण अनुरागी
तो करिए भगवन रघुवर दासी
सत्य प्रेम यदि जिस पर जिसका
कुछ संदेह न उसका मिलना
यह सोच मोह देह का त्यागा
कृपानिधान राम सब जाना
सिय देख राम धनुष ताके
जैसे गरुड़ सर्प को देखे
लखन पुलक खड़े यह देखे
पद से ब्रह्मांड चाप कर बोले
हे शेष वाराह दिग्गज कच्छप
पकड़ो धरा नहीं हो कंपित
तोड़ रहे शिव धनुष रामजी
हो सावधान ! आज्ञा लक्ष्मण की
मन ही मन गुरु को याद किए
राम सहज शिव धनुष उठाए
कर जाते बिजली सा चमका
फिर नभ मंडलाकार बना
चढ़ा खींचते न कोई देखा
धनु लिए राम खड़े सब देखा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस क्षण मध्य धनुष हरि तोड़े
विपुल नाद ब्रह्मांड भरे
पृथ्वी नभ कठोर ध्वनि गूँजे
रवि हय दिशा छोड़ चले
धरती डोली दिग्गज काँपे
सुर मुनि असुर कर्ण कर रखे

रघुवर भूपर दो टुकड़े डाले
पुलकित विश्वामित्र हुए
शिव, ब्रह्मा पुष्प माल गिराते
देव नगाड़े बजा रहे
हो प्रसन्न सुरबधू नाचती
बार - बार कुसुमांजलि छूटी
गाते किन्नर राग सुहानी
दशों दिशाएँ जय ध्वनि गूँजी

झाँझ मृदंग शंख शहनाई
बजी - भेरि ढोल दुंदभी
जहाँ तहाँ कहते नर-नारी
शिव धनुष राम ने तोड़ा भारी
हर्षित जनक सुखी रानी
बार - बार न्यौछावर करती
लखन भूल सुधि-बुधि अपनी
प्रेम पूर्ण निहारें रघुपति

शतानंद आज्ञा पा सीता
धीरे पग धर चली पुनीता
सब सखियाँ मिल मंगल गातीं
सीता वरमाल राम पहनाई
तीन लोक में गूँज रही
रघुकुल रामचंद्र की कीर्ति
धनुष तोड़ वरी वैदेही
करे जन - जन मंगल आरती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुटिल भूप कुछ जलकर बोले
वैदेही हम हरण करेंगे
दोनों राजकुँवर बाँधेंगे
मिथिला राजा को जीतेंगे

कोलाहल सुनकर रानी
सीता को अंदर बुलवाई
आँख लाल तरेरे लक्ष्मन
उस क्षण पहुँचे परशुराम

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

परशुराम तथा लक्ष्मण

गौर शरीर त्रिपुंड भाल
सिर जटा धनुष बाण हाथ
अंग विभूति फरसा काँधे
भौंह वक्र मुख लाल क्रोध से
मुनि तन किंतु वेष कराला
भयवश हुए खड़े भुआला
पिता सहित ले अपना नाम
करने लगे दंड प्रणाम
मिथिला पति आ शीश झुकाए
बुलवा सिया चरण छुलवाए
सौभाग्य वर दिए परशुधर
सखी सयानी चली हर्ष हिय
विश्वामित्र गले मिले
राम लखन से चरण छुलवाए
मुनि पूछे दे आशीष
कहो जनक क्यों यह भीड़ ?
जनक बताए कारण इसका
क्रुद्ध हुए देख धनु टूटा
बोले तोड़ा कौन धनुष को
मूर्ख ! तुरत मुझे दिखलाओ
कहे राम जो शिवधनु तोड़ा
होगा कोई एक दास आपका
बोले दास नहीं वह मेरा
सहस बाहु सम बैरी होगा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अलग सभा से करो उसे
अथवा नृप जाएँगे मारे
सुन मुनि वचन लखन मुस्काए
उपहास भरी वाणी बोले

ऐसे छोटे धनु तो कितने
तोड़े थे बालकपन हमने
कभी न क्रोध आपको आया
फिर इस पर कैसी इतनी ममता

क्रोध बढ़ा बोले भृगुवर
रे बालक तू हुआ कालवश
मूर्ख नहीं यह धनु मामूली
जगत विदित धनु त्रिपुरारि

हँस कहे लखन हमारे जाने
धनुष सभी एक से होते
हुआ पुराना धनु था इतना
छूते ही वह टूट गया

दोष नहीं रघुपति का कोई
देता था यह नया दिखाई
कोई हानि - लाभ न पाया
फिर मुनि क्यों क्रोध आया

मुनि बोले दिखला फरसा
नहीं स्वभाव तू जाना मेरा
मैं विश्व विदित क्षत्रिय कुलद्रोही
बाल ब्रह्मचारी अति क्रोधी

लखन हँसे मुनि वीर बड़े
पर्वत को फूँक मार हटाते
कुम्हड़े की बतिया यहाँ न कोई
जो मर जाती देख तर्जनी

धनु बाण कुठार देख आपका
मुझमें वीर रस जागा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भृगुसुत और जनेऊ निहारा
मैंने अपना क्रोध सम्हाला
हरिजन सुर द्विज और गाय
वधे नहीं हमारे कुल
अपयश पाप मार इन्हें
इस कारण हम पैर पड़े
वज्र समान बचन आपके
व्यर्थ धनुष वाण रखते
क्रोधी मुनि बोले गंभीर
कौशिक यह बालक कुटिल मूर्ख
कुल कलंक काल सिर बैठा
समझाओ कह बल रोष हमारा
लखन कहे मुनि सुयश आपका
छोड़ आप कौन कह सकता
कई बार अपने गुण गाए
संतोष नहीं तो फिर कहिए
शूरवीर पा रणभूमि
पहचाने जाते अपनी करनी
कायर अपने गुण को गाते
बलवान शत्रु जब रण पाते
जैसे लाए हाँक काल को
क्षण-क्षण फरसा दिखलाते मुझको
लक्ष्मण के सुन बचन कठोर
परशु सुधारे परशुराम
बोले वध लायक यह लड़का
दोष न मुझको कोई देना
बोले कौशिक मुनि क्षमा करें
बालक दोष न साधु गिने
मुनि बोले छोड़ रहा बिन मारे
केवल कौशिक शील तुम्हारे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं तो इसे मार इसी क्षण
हो जाता मुक्त गुरु का ऋण
मन में विश्वामित्र हँसे
मुनि हरि को भी अरि देख रहे

बोले लखन मात-पिता से
किसी तरह मुनि उऋण हुए
गुरु ऋण जो शेष रहा
मेरे मत्थे आन मढ़ा

हुए बहुत दिन ब्याज बढ़ा
खोले थैली मैं बैठा
मुनि घोर कुठार उठाए अपना
लोगों ने हाय हाय कहा

बोले लखन क्षत्रिय कुल द्रोही
छोड़ रहा द्विज जान तुम्हें
मिला न वीर तुम्हें रण कोई
द्विज घर में तुम शोभा देते

कर सैन मना मृदु बोले राम
करें लखन पर कृपा नाथ
वह दुधमुख बालक छोटा
प्रताप आपका जाने क्या

परशुराम क्रोध हुआ कम
फिर कुछ कह हँसे लखन
नख शिख भरा क्रोध कहा
तन गोरा इसका मन काला

तुझसा शीलवान नहीं
विष मुख है दुधमुँहा नहीं
बोले लखन क्रोध पाप
मैं तो भृगुवर तुच्छ दास

नहीं जुड़ेगा धनु टूटा
चाहे बुलवा लें गुणी बड़ा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुन सौमित्र निर्भय वाणी
क्रोध बढ़ा मुनि शक्ति हानि
रघुवर तब नैन तरेरे
हाथ जोड़ मुनिवर से बोले
इसमें लक्ष्मण का दोष नहीं
नाथ आपका मैं अपराधी
जिस तरह क्रोध आपका जाए
मुनि वैसा आप उपाय करें
बोले राम अनुज तुम्हारा
टेढ़ी दृष्टि ताक रहा
इसके कंठ कुठार न रखा
तो मैं क्या कर क्रोध किया
क्यों उठता आज कुठार नहीं
है कुंठित क्षत्री कुलघाती
आज हुसह दुःख दया सहाती
क्रोध जलाता मेरी छाती
बोले लखन वचन आपके
मानो मुख से पुष्प बरसते
मुनि बोले जनक यह लड़का
हठ कर यमपुर जाने वाला
मेरी आँखों से इसे हटाओ
हँसे लखन मुनि आँख मूँद लो
क्रोध भरे मुनि बोले राम
सिखा रहा धनु तोड़ ज्ञान
कटु वचन बोलता भाई तेरा
तू कर विनय हाथ जोड़ता
शिवद्रोही छल छोड़ युद्ध कर
अथवा कहलाना राम छोड़
भृगुपति कुठार उठाए बकते
सिर झुका राम मुस्काते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोले सिर मेरा है आगे
और कुठार हाथ आपके
कैसा युद्ध दास - स्वामी में
हे द्विजवर क्रोध त्यागिए

देख वीर वेष आपका
लछमन वंश स्वभाव कहा
मुनि की तरह आप जो आते
चरण धूल वह रखता माथे

समता तुमसे क्या करूँ नाथ !
तुम परशुराम मैं मात्र राम
धनुष एक गुण नाथ हमारे
नौ गुण विप्रश्रेष्ठ आपके

विप्र, मुनि सुन बार - बार
अति रुष्ट हुए भृगुपति बोले
मुझको केवल विप्र जानता
है तू भी भाई जैसा टेढ़ा

जैसा हूँ विप्र सुनाता वैसा
युद्ध यज्ञ में ले यह फरसा
काट दिए बलि कितने राजा
कह विप्र निरादर करता मेरा

तोड़ा धनुष बना अभिमानी
मानो हुआ विश्व विजयी
बोले राम लघु दोष हमारा
किंतु बड़ा क्रोध आपका

छूते ही टूटा धनुष पुराना
अभिमान मुझे इसमें क्या होगा
कटु विप्र आपका आदर करते
हम नहीं अन्य किसी से डरते

रघुकुल क्षत्री हम रहते निर्भय
भले काल आ जाए सम्मुख

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

है द्विज कुल की परंपरा
निर्भय बनता जो तुमसे डरता

सुन रघुवीर गूढ़ वचन
खुले परशु घर अंतस नैन
बोले राम रमापति धुन लो
खींचों संशय दूर करो

धनु आप खिंचा राम के हाथ
विस्मित हुए परशुराम
रघुवर प्रताप मुनि जाने
कर जोड़ पुलकित स्तुति गाए

जय रघुकुल भानु दनुज कुल भंजन
जय शील वचन नागर मन रंजन
जय सुर विप्र धेनु हितकारी
जय मद मोह क्रोध भय हारी

सुंदर, सुभग सहज सुखदायक
करुणा, कृपा, विनय गुण सागर
मैं अज्ञान अति अनुचित बोला
क्षमा क्षमा मंदिर दो भ्राता

यह देख कायर भूप डरे
जहाँ - तहाँ वे भाग चले
देवों ने शंख निनाद किया
मंगल साज सजाई मिथिला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम विवाह

गए विदेह दूत अयोध्या
दशरथ को संदेशा भेजा
शिवधनुष रामचंद्र तोड़ा
जिसको टार सके न राजा

बोले गुरु वशिष्ठ हे राजा
राम सरीखा पुत्र तुम्हारा
जग में पुण्यात्मा तुम जैसा
हुआ नहीं है, और न होगा

तुम वीर धर्मव्रत धारी
कौशल्या अति पावन नारी
पुत्र वीर नम्र हैं चारों
डंका बजा बरात ले चलो

प्रेम पूर्ण सब रानी हरषीं
दे द्विज दान आशीषें लेतीं
समाचार नगरी में फैला
घर - घर मंगल बजे बधावा

कनक कलश मुक्ता मणि झालर
चंदन चौक पुराए सुंदर
केसर, कपूर, धूप सुगंध
रचा महल रुचिकर मंडप

भरत, शत्रुघ्न नृप बुलवाए
मुदित हय गज रथ सजवाए
युवक शूरवीर छबीले
पट भूषण पहन सवार हुए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्याम कर्ण अगणित घोड़े
सजे हुए रथ जोत दिए
अस्त्र - शस्त्र विरद बाँधे
बारात जुटी नगर बाहर

गज सजे चले घंटी रव करते
सावन मेघ चले जैसे
सजी पालकी चले विप्रजन
बैठे जैसे वेद के छंद

मागध सूत भाट गुणगायक
वाहन चढ़े जो जिस लायक
बेसर ऊँट वृषभ संपति भर
कहार चले अगणित ले काँवर

अति सुंदर दो रथ मँगवाए
नृप गुरु को पहले बैठाए
चढ़े दूसरे रथ पर अपने
गौरी गणेश हर नाम लिए

जाते गुरु के साथ अवधपति
जैसे इंद्र संग वृहस्पति
ले राम नाम शंख फूँका
कुल रीति कर प्रस्थान किया

नभ से बारात देवगण देखे
हरषित फूलों की बर्षा करते
घोड़े, हाथी का शुभ गर्जन
बाजे शहनाई का मृदु गुंजन

कुँवर ताल पर तुरग नचाते
चतुर विदूषक हास्य सुनाते
शुभ शगुन दिखाई देते धरती
द्विज नीलकंठ दधि मीन सुरभी

चल पड़े अयोध्या से नरपति
सुन पुल बनवाए मिथिलापति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जगह - जगह गृह सुखदायक
रखवाए सुख संपति वैभव
ज्यों ही बारात निकट पुर पहुँची
नगाड़ों की ध्वनि जोर हुई
चले श्रेष्ठ जन अगवानी
सजा संग घोड़े, रथ, हाथी
स्वर्ण कलश भर खान-पान
अगणित थाल विविध पकवान
मंगल द्रव्य इत्र सुगंधित
अनमोल वस्तु वसन भूषण
कर स्वीकार प्रेम से भेंट
याचक को देते दशरथ
कर सत्कार दिए बड़ाई
बारात जनवासे में आई
नृप देखे कौशिक चरण गिरे
मुनि उठा प्रेम से लगे गले
राम-लखन पिता पद छूते
नृप वक्ष लगा विरह दुख मेटे
फिर राम-लखन गुरु चरण लगे
आशिष दे मुनि गले लगाए
दोनों भ्राता को लगा गले
यथा योग्य राम मिले सबसे
ऋतु हेमंत अग्रहण महीना
गोधूलि लगन मंगलमय बेला
गुरु शतानंद, द्विज मंत्री पहुँचे
जनवासे दशरथ को लाने
बजे शंख, ढोल, शहनाई
सजे साज शुभ शगुन मनाई
चले अवधपति पूछ गुरु
संग समाज ले पुत्र चार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुर ब्रह्मा शिव शक्ति लिए
शोभा बारात चढ़ वाहन देखे
नख शिख शृंगार किए रघुनंदन
उमा महेश देख मन हुलसित

मणि मोती जीन जड़ाऊ घोड़ा
बैठे सज राम साँवरे दूल्हा
रानी शृंगार कर चली आरती
संग शची शारदा गाती

पंच शब्द, ध्वनि, मंगलकारी
बिछे पाँवड़े अर्घ्य आरती
मंगल गान सुमन बरसते
मंथर गति मंडप राम चले

देखे सुर ब्रह्मा विप्रवेश
राम दिए, मानसिक आसन
दशरथ से विदेह सप्रेम मिले
सम्मान सहित मंडप लाए

कौशिक वशिष्ठ देव सब पूजे
ऋषि वामदेव आदि मुनि पूजे
आसन दिव्य जनक दिए
द्विज शुभ आशीष दिए

भक्ति सहित अवधपति पूजे
सब बाराती जनक सम्माने
कहे वशिष्ठ शतानंद मुनि
बुलवाइए अब राजकुँवरि

ले चली सँवार सादर वैदेही
सोलह शृंगार किए गजगामिनी
मुनि ध्यान तजे सुन कोकिल कंठी
बज उठती गति पायजेब कंकणी

देख कुँवर हर्षित बाराती
मन ही मन करे नमन जानकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुजवाए गुरु गणेश, शिव, गौरा
बैठाए सुभग सिंहासन सीता
सुनयना रानी मंडप आई
वाम भाग जनक के बैठी
मिल दोनों रघुवर चरण पखारे
शिव मन मानस सदा विराजे
वरवधू के करतल जोड़े
दो कुल गुरु शाखोच्चार किए
लोक, वेद कुल रीति किए
जनक कन्यादान दिए
कर हवन विधि से गाँठ जोड़ी
होने लगी शुभ भाँवरी
पंच ध्वनि शुभ सुमन गिराए
सिय - सिंदूर राम दिए
राम सिया मंडप बैठे
देख अवधपति सुखी हुए
चौदह भुवन उल्लास भरा
सिया राम विवाह हुआ
गुरु वशिष्ठ की आज्ञा पाए
जनक विवाह सामग्री लाए
राज कुँवरि तीनों बुलवाईं
जो गुण, रूप, शील की खानि
ब्याही मांडवी भरत
सिय बहिन उर्मिला लखन
सुंदर श्रुतकीर्ति शत्रुघन सौंपी
वर पा अनुरूप कुँवारी हरषी
देख पुत्र सहित बधुएँ
चारों फल राजा पाए
दिए जनक आदर सम्मान
अनमोल दहेज भरे मंडप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोह बर आए कुँवर-कुंवारी
मंगल गान सुआसिनि गाती
प्रमोद हास भरा रनिवास
कुँवर-कुँवारी बदले ग्रास
सिय नैन पिया रूप के प्यासे
छवि कंगन मणि में निरखे
चंचल सखियाँ प्रेम लखी
छेड़ रहीं जनक दुलारी
नभ नगर भर अशीषें गूँजीं
चिर जीवो सुंदर चारों जोड़ी
चारो कुँवर साथ बहुएँ
पिता पास चले जनवासे
षट रस व्यंजन थाल परोसे
सुमधुर गाली मन को भाए
दिए पान बाराती पूजे
दशरथ जनवासे आए
कर पूजन वशिष्ठ का पहले
अनेक द्विज नृप बुलवाए
नारद वामदेव वाल्मीकि
आए कौशिक और जाबाली
चार लाख उत्तम गाए
दशरथ राजा दान दिए
पा आशीष प्रसन्न हुए नृप
याचक मन चाहे दान दिए
कुछ दिन रहे अवधपति मिथिला
विदा संदेश जनक को भेजा
शुभ दिन गए कुँवर चारों
विदा कराने बहुओं को
माता सिय गोदी बैठाई
सप्रेम नारि धर्म सिखाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सास, ससुर, गुरु सेवा करना
पति रुख तुम सदा निरखना
सदा रहो तुम पति की प्यारी
चिरकाल रहो सुहागवती
सब बेटी माता बुलवाईं
आँचल भर आशीषें दीं
तब रामचंद्र कर जोड़े
विदा सासुओं से माँगे
हुई स्नेह शिथिल सब रानी
आशीष दमादों को देतीं
आकुल माँ बेटी कंठ लगाती
सखियाँ समझा उन्हें हटातीं
सिय पाले मृगशावक पक्षी
व्याकुल कहे कहाँ वैदेही
विदेह भ्राता संग आए
प्रिय वैदेही गले लगाए
योगी मन संयम टूट पड़ा
अश्रुधार से तन भीगा
शुभ लगन पिताओं ने जानी
पालकी बेटियाँ बैठाईं
कुलधर्म बताया नारी का
गणेश सिद्धि का नाम लिया
दास-दासियाँ साथ दिए
जो विश्वासी सीता के
मंगलकारी बाजे बजते
रथ-घोड़े सजे बराती के
दे अनेक दान द्विज याचक
दशरथ बारात ले चले अवध
कहते बार-बार जनक से
नहीं लौटाते प्रेम बँधे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रथ रोक अवधपति बोले
लौटिए बहुत दूर हैं आए
बोले हाथ जोड़ जनकजी
कैसे प्रशंसा करूँ आपकी

कर संबंध आपसे नृपवर
बड़ाई के हम पात्र हुए
फिर मुनिजन को शीश झुकाए
शुभ आशीष नृप पाए

दामादों से जनक मिले
कर जोड़ रामचंद्र से बोले
कैसे गुण गाऊँ राम तुम्हारे
तुम शिव मन मानस हंस विराजे

सर्वव्याप्त सगुण रूप तुम
चिन्मय अविनाशी ब्रह्मरूप
योगी तज काम भोग ममता
करते जिसके लिए तपस्या

वह रूप देख सफल नैना
हरि अपना जान मुझे अपनाया
माँगू तुमसे एक वरदान
मन छोड़े न चरण तुम्हारे राम

गुरु पिता तुल्य ससुर जाने
राम जनक सम्मान दिए
बारात चली बजा डंके
शंख नगाड़े झाँझ बजे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वरवधू आगमन

अवध बाजार सब गली सजी
सुगंध अरगजे से सीचीं
अति दिव्य राजमहल सजाए
मंगल कलश चौक पुराए

कौशल्यादि सब माता पूजी
गुरु, गणेश, महेश, भवानी
शिथिल अंग उत्साह भरी
बनी राम दरशन की प्यासी

हल्दी, दूब, दधि, तुलसी पल्लव
अक्षत, रोली, पान, पूगफल
मंगल थाल रची आरती
माता श्रृंगार कर मंगल गाती

धूप धुआँ सुगंधित उड़ता
सावन की मानों घिरी घटा
नभ पुष्प माल की लगी झड़ी
चंचल बाला चढ़ी अटारी

गुरु वशिष्ठ मुहूर्त शुभ देखे
दशरथ नगर प्रवेश कराए
मागध सूत भाट चतुर नट
गाते उज्ज्वल यश रघुनंदन

चहुँ ओर वेद मंगलमय वाणी
जय ध्वनि दिशा-दिशा में गूँजी
नगर निवासी करते वंदन
नारियाँ निरख रहीं दुलहिन

वर-वधू राज द्वार ले आए
हरषित करती परछन माताएँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पुत्र सहित वधू आरती
न्यौछावर वस्त्राभूषण करती
बहू सहित चारों सुत देखी
परमानंद निधि माता पाई
सिया-राम पावन छबि देखी
अपना जीवन सफल मनाती

कुल रीति पाँवड़े अर्घ्यदान
माता बहुएँ ले चली भवन
सिंहासन वर वधू बैठाए
धूप, दीप, नैवद्य से पूजे
सब पितर देव माताएँ पूजीं
कल्याण वर पुत्रों के माँगी
सुर नैन छिपे आशीषें देते
माता प्रसन्न लेती आँचल भर

बाराती दशरथ सम्माने
भूषण वाहन वस्त्र दिए
मन चाही वस्तु याचक को दी
बाजे वालों को किया सुखी
गुरु आज्ञा देते जैसी
वैसा करते राजा - रानी
सब द्विज के चरण पखारे
पूजन कर व्यंजन दान किए

कौशिक चरणधूल सिर रखी
वशिष्ठ चरण वंदना की
राजकुमार सहित बहू
चरण पड़े राजगुरु
रखी गुरु चरण सम्पदा
पैर पड़े दशरथ कौशल्या
ले नेग गुरु अपना
सबको आशीर्वाद दिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सिया - राम हृदय में रखे
वशिष्ठ भवन गए अपने
सब कुटुंब बेटी बहिनें
दशरथ नेग वस्त्र दिए
पूजनीय अतिथि पूजे
सबका सत्कार सम्मान किए
परिजन पुरजन तुष्ट हुए
दशरथ प्रसन्न रनिवास गए

सब सुत को बैठाए गोदी
फिर पुत्र वधू अंक में ली
राजा कही विवाह कथा
मिथिलापति का शील सराहा
सुन आनंद पूर्ण सब रानी
सुख सरिता रनिवास बही
नृप स्नान किए पुत्र संग
भोजन किए कुटुंबी संग

कर आचमन पान लिए
विभूषित फूल इत्र हुए
राजा बुलवाए बोले रानी
बहुएँ अभी बहुत हैं छोटी
बड़े जतन से इनको रखना
जैसे पलकें रखती नैना
थके पुत्र नींद आ रही
जाकर शयन कराओ जल्दी

कनक पलंग जड़े मणि माणिक
श्वेत फेन सी बिछे विछावन
रत्नदीप जले शयन घर
आज्ञा पा सब भाई सोए
रघुवर स्याम अंग निहारी
प्रेम भरी सब माता बोलीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राह कँटीली कानन भारी
कैसे तात ताड़का मारी
मारीच सुबाहु अति भयकारी
कैसे मारे जो बलशाली
मुनि यज्ञ करी रखवाली
तुमने सारी विद्या पाली
लगते ही चरण धूल तुम्हारी
तरी अहिल्या मुनि की नारी
कठोर वज्र सम शिवधनु तोड़ा
नृप समाज मद चूर किया
विश्व विजय कर मिली जानकी
विवाह किए अनुज भाई
राम नहीं ये कर्म मनुज के
दिखलाई गुरुकृपा जिसे
समझाए राम मृदुल वाणी
माताएँ संतुष्ट हुईं
निद्रा वश नैन किए
शंभु नाम ले रघुवर सोए
कुल रीति करी पूर्ण रानी
सुदिन देख कंगन खुलवाई
नित नवीन आनन्द सुखद
सुर जन्म कामना करें अवध
विश्वामित्र विदा तब माँगे
नृप प्रेम पूर्ण मुनि चरण गिरे
बोले संपति राज्य आपका
मैं तो तुच्छ दास आपका
दे अशीष मुनि वन को जाते
गुण शील बड़ाई नृप की करते
राम रूप नैन में धारे
उत्सव विवाह स्मृति हरषाते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम वनवास

विवाह हुआ रघुवर घर आए
सुख एश्वर्य नगर भर छाए
जन जन मन जागी अभिलाषा
पाएँ रामचंद्र पद राजा

बैठे दशरथ राज्य सभा
दर्पण देखा मुख अपना
मन सोचे देख श्वेत केश
क्यों न करूँ राम अभिषेक

गुरु से बोले मन की बात
बोले न देर करें शुभ कार्य
मंत्री सुमंत सभा बुलवाए
हर्षित पंच स्वीकार किए

बोल उठे गुरु पुलकित
ले आओ श्रेष्ठ तीर्थ का जल
फल-फूल मूल वस्त्र गिनाए
औषधि मंगल वस्तु लिखाए

बोले हाट बाजार सजाओ
मणि मंडप चौक द्वार पुराओ
रोपो फल लगे वृक्ष नगर
आम सुपारी केले के

घर-घर कलश ध्वजा फहराओ
तोरण रथ हाथी तुरग सजाओ
कुल देव गजानन गुरु को पूजो
प्रसन्न नमन भू देव करो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस समय आकर प्रेम मगन
भ्राता कंठ लगे लखन
मंगल वाद्य अनेक बज रहे
सब भरत आगमन मना रहे

इधर देव स्वर्ग में बैठे
मानो शतरंज चाल सोचते
त्याग राज राम बन जाए
पापी दुष्ट असुर मारे

छू चरण शारदा से की विनती
माता बड़ी विपत्ति हमारी
मंथरा कैकई की दासी
देवी उसकी मति फेरी

सजी देख अवध नगरी
सुन घर - घर गूँज बधाई
लोगों से मंथरा पूछी
राजतिलक सुन हृदय जली

तन मन कुटिला दासी सोचे
बनती बात बिगाड़ूँ कैसे
रोती अश्रु पोंछती पहुँची
कारण पूछी कैकई रानी

रही मौन उत्तर न देती
बिगड़ी रानी चुप रही पापिनी
बैठी अश्रु रही ढरकाती
साँपिन सी गहरी साँसें लेती

भय से कैकई फिर पूछी
क्यों नहीं बोल रही दासी
नृपवर राम, भरत, लक्ष्मण
कुशल तो है रिपुसूदन

बोली कुशल राम आज
जिसको नृप बना रहे युवराज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कौशल्या अभिमान बढ़ा
देखो जा आज नगर शोभा
सुत परदेश तुम्हें न चिंता
सोती रहतीं तुम पलंग सदा
नहीं कपट राजा का देखा
जानी सदा उन्हें अपना
दासी वाणी मन को भाई
किंतु झिड़क कर बोली रानी
बहुत बोलती है घर फोड़ी
कटवाऊँ जिह्वा मैं तेरी
सूर्यवंश की रीति यही
होता बड़ा तिलक अधिकारी
रघुवर मेरे हैं अनुरागी
प्रीति परीक्षा कर मैं देखी
कौशल्या सम माने राजा
सुन राजतिलक दुख कैसा
फिर किस कारण तू जलती
सच - सच बात बता दासी
दे रही तुझे सौंगंध भरत
सच बता बात छोड़ कपट
बोली दासी मैं कहते डरती
दिया नाम मेरा घर फोड़ी
अशुभ तुम्हारा देख न सकती
इस कारण सत्य बात कहूँगी
विश्वास हुआ रानी का पक्का
बोली दाँव लगा मंथरा
तुम कहतीं राम प्रीति करें
किंतु दिन वे बीत गए
सौत खोदती जड़ें तुम्हारी
सचेत उपाय करो रानी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुँह मीठे मन मैले राजा
ननिहाल तुम्हारे सुत को भेजा
तुम सुहाग बल नहीं जानतीं
कौशल्या ने बात बना ली

राजा की अधिक चहेती रानी
इस कारण तुम खटक रहीं
रचा जाल फाँसा अवधपति
राजतिलक की लगन कराई

कपट बात गढ़ दासी बोली
सौत कथा अनेक सुनाईं
मति रानी की उलट गई
भावी वश दासी लगी हितैषी

बोली दासी दूध मक्खी सी
होगी अब तुम जल्दी रानी
पुत्र सहित करो चाकरी
तब ही घर रह पाओगी

सुन कठोर वचन मंथरा
भावी भय रानी कंठ सूखा
पीत वर्ण पसीना भीगी
केले पत्ते सी थरथर काँपी

दासी बोली सुधि कर रानी
नृप पास धरोहर दो वर रखी
माँगो भरत राज्य एक
दूजे से राम बनवास

जाओ रानी कोप भवन
काम बनाओ आज रात
सौगंध राम की जब ले राजा
सावधान वर तभी माँगना

पहने काले जीर्ण वसन
रानी गई कोप भवन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इधर हर्ष छा रहा नगर
मंगल साज सजे घर-घर
साँझ हुई प्रेम में डूबे
दशरथ कैकेई भवन गए
रानी कोप भवन गई
सुन सहमे होश उड़े अवधपति
निढाल पड़ी भू पर रानी
मोटे अमंगल वस्त्र पहनी
फेंके इधर-उधर आभूषण
देख भूपति हुए द्रवित
कर स्पर्श किए पृथ्वीपति
पूछे क्यों हो रूठी रानी
झटक हाथ राजा को देखी
जैसे कोई नागिन काली
राजा बोले प्राण प्रिया
कर सके कौन अमिष्ट तुम्हारा
कह दे किसे आज मैं मारूँ
या देश निकाला उसको दूँ
सम्पत्ति राज्य प्राण मेरे
पुत्र प्रजा सब वश तेरे
नहीं झूठ बोलूँ तुझसे
कसम राम की ले मुझसे
जो चाहे वस्तु माँग हर्षित
सुंदर अंग सजा आभूषण
विचार कर तनिक अपने मन
प्रिय त्याग अशुभ वेश
सुन राम शपथ तुरत उठी
आभूषण लगी पहनने रानी
मानो हिरण फाँसने कोई
तैयार भीलनी फंदा रचती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कैकेई को सुहृदय जाना
प्रेम पुलक बोले राजा
मन भावन बात बनी तुम्हारी
युवराज राम बनेंगे कल ही
जागा क्रोध छुपाई रानी
कुटिल हँसी हँस बोली
माँगो - माँगो कहते स्वामी
दो वर अब तक दिए नहीं
बोले हँस राजा दोष न मेरा
दो के अब चाहे चार माँगना
रघुकुल रीति सदा से आई
प्राण जाए पर बचन न जाई
फिर सौगंध राम की खाई
सीमा मेरे सत्कर्म स्नेह की
कुटिल कैकई बोली हँसकर
सुनिए प्रियतम मेरे दो वर
एक बचन से भरत तिलक
दूजे से चौदह वर्षों तक
वेष तपस्वी का कर धारण
बन में वास करे रघुनाथ
सुन कैकई की कोमल वाणी
और वचन प्राणघाती
तन पर मानो वज्र गिरा
तरु हरा पीत वर्ण हुआ
बंद नेत्र कर सोचे राजा
फल रहा कामना का तरु मेरा
कुचली रानी पागल हथिनी सी
जो फलता तरु उखाड़ फेंकती
अवध उजाड़ा बोई विपदा
नारी से भ्रष्ट हुए राजा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जैसे सिद्धि समय अविद्या
फल विनाश करती योगी का
जब बेहाल नृप को देखी
हो क्रुद्ध कैकई बोली
भरत पुत्र नहीं आपका
मुझे खरीद लाए हैं क्या
बुरे लगे वचन हमारे
तो क्यों न आप सम्हल बोले
सत्यव्रती रघुकुल के राजा
उत्तर कहिए हाँ या ना
कहे वर दो नहीं दीजिए
छोड़ सत्य अपयश लीजिए
वर में क्या आपने सोचा
खाने को माँगूँगी चबैना
दधीचि शिवि बालि राजा
तन धन त्याग वचन प्रण राखा
कहती वचन कठोर कैकई
मानो जलते पर नमक छिड़कती
सिर धुन राजा पछताते
ऐसा वार करती रानी
धीरज धर नैन उघाड़े
देखे सम्मुख मौत खड़ी
फिर कोमल वाणी बोले
सच कहता शंकर साक्षी
भरत राम दोनों बेटे
मेरी आँखों की हैं पुतली
ननिहाल दूत प्रातः भेजूँगा
भरत शत्रुघन बुलवाऊँगा
शुभ मुहूर्त भरत को टीका
दे दूँगा बजवा डंका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम बड़े हैं इस विचार से
बना रहा युवराज उन्हें
नहीं राम को लोभ राज्य का
भरत उन्हें प्राण से प्यारा

राम शपथ मैं सच कहता
कुछ नहीं कही कौशल्या
किया बिना यह तुझ से पूछे
इस कारण मिटे मनोरथ मेरे

क्रोध त्याग, शुभ साज सजा
कुछ दिन में भरत तिलक होगा
किंतु राम का दोष बता
जो वर माँगा ऐसा

जल बिन चाहे मीन जिए
मणि बिन नाग जिए, दुख झेले
राम बिना न जीवन मेरा
इस कारण प्रिये माँग वर दूजा

सुन मृदु वचन जली कैकई
जैसे पड़ा आग में घी
बोली आप राम सयाने
कौशल्या कैसी सब पहचाने

होते प्रातः मुनि वेष किए
यदि नहीं राम बन को जाते
तो मेरा मरण आपका अपयश
राजा समझे इसको निश्चित

ऐसा कह कुटिला खड़ी हुई
जैसे नदी क्रोध की उमड़ी
लेगी प्राण डुबो मेरे
राजा पल में समझ गए

चरण पकड़ बैठा बोले
दे दूँ अपना सिर यदि माँगे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किंतु मार न राम विरह
अथवा पछताए तू जीवन-भर
देख असाध्य शीश धुने
राजा के कंठ गात सूखे
कटे पेड़ से भूमि गिरे
राम! राम! हा राम! पुकारे
बोली रानी वचन छोड़िए
अथवा मन धीरज रखिए
तन स्त्री पुत्र धाम धरणी
तृण सम गिनते सत्यव्रती
दशरथ बोले दोष न तेरा
पिशाच लगा काल बन मेरा
जो तुझसे कहलाता यह सब
नहीं भरत राज्य के लोलुप
पुनः अवध शोभित फूलेगी
गुण धाम राम प्रभुता फैलेगी
किंतु कलंक धरती पर तेरा
इतिहास कभी न पोंछ सकेगा
मर कर भी मेरा पछतावा
धरती पर रहेगा छाया
दूर आँख से हो जा मेरी
जब तक जीवित चुप हो बैठी
सब उपाय कर राजा हारे
हठ ना छोड़े रानी
कपटी बैठी मौन साधती
जैसी प्रेत मंत्र जोगिनी
पंख कटे पक्षी से राजा
पड़े तड़पते रहे धरा
हुई सुबह बजी वीणा
द्वारे शंख निनाद हुआ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मंत्री सेवक द्वार खड़े
क्यों नहीं अवधपति आज उठे
सुमंत गए राज महल
देख दशा भूपति को ठिठके

पीले पड़े भूमि पर राजा
जैसे कमल मूल से उखड़ा
अशुभ वेष कैकई बैठी
बोली नींद न राजा आई

राम-राम कह रात बिताई
रघुवर शीघ्र लाइए मंत्री
रानी कुचाल सुमंत कुछ जाने
नृप रुख देख चले तुरंत

आदेश पिता ज्योहीं सुन पाए
राम त्याग सब शीघ्र चले
बिना छत्र युवराज संग मंत्री
देख भवन नर नारी शंकित

अचेत भूमि पड़े पिता
बैठी समीप क्रोध में माता
दुख उमड़ा राम हृदय
न था दुख से पहले परिचय

कैकई से पूछा माता
पिता दुखी कारण क्या इसका
किसी तरह दुख करूँ दूर
बोली तुमसे प्रेम अधिक

यह असली नृप का दुख कारण
मुझे कहे देने को दो वर
मैंने माँगा भरत टीका
चौदह वर्ष वनवास तुम्हारा

अब संकोच हो रहा तुम्हारा
उधर वचन की कठिन प्रतिज्ञा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आज्ञा शीश धरो राम
दूर करो यह क्लेश तुरत
राम स्वयं आनंद निकेतन
बोले मुस्काते मन ही मन
बड़ भागी वह पुत्र कहलाता
जो माता - पिता वचन मानता
भरत प्राण प्रिय होगा राजा
संत समागम मेरा होगा
सब भाँति भलाई है मेरी
फिर क्यों इतने पिता दुखी
नहीं बोल रहे मुख अपने
भारी अपराध हुआ क्या मुझसे
कुटिला बोली सौगंध तुम्हारी
दूजा कारण ज्ञात नहीं
दशरथ मूर्च्छा दूर हुई
राम-राम कह करवट बदली
बोले सुमंत आए रघुपति
राजा ने आँखें खोलीं
सुमंत सहारा कर बैठाए
राम पिता के चरण छुए
अवधेश लगाए अपनी छाती
अश्रु धार नैनों से निकली
बार - बार वक्ष लगाते
किंतु न मुख से वचन बोलते
मन ही मन मना रहे शंकर
वचन त्याग रघुराज रहें घर
पिता प्रेम पाश बँधे
देख राम विनय कर बोले
यह तुच्छ बात पिता आप
झेल रहे हैं दुःख अपार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

माता सब मुझे बतलाई
ग्रह मंगल घड़ी नहीं शोक की
बीते अवधि शीघ्र लौटूँगा
माता से विदा माँग आता

पल में फैली बात नगर
जैसे बिच्छू का चढ़े जहर
जो सुनता सिर धुन लेता
कोई न किसी को धैर्य बँधाता

कैकई को सब देते गाली
जो कुल अपने बनी कुल्हाड़ी
करती सदा राम से प्रीति
फिर क्यों घर में आग लगाई

विधि बनती हुई बात बिगाड़े
कुछ राजा का दोष बताते
कहते कुछ उनको धर्म धुरंधर
कोई सम्मति कहे भरत

किंतु नगर नर - नारी जाने
प्राणों से राम भरत के प्यारे
चाँद आग भले ही उगले
भरत राम प्रतिकूल न होंगे

बड़ी बूढ़ियाँ अरुंधती मिल
कैकई से कही बहुत
अभागिन बनी रही दुर्बद्धि
ऐसा सिखा गई कुबड़ी

उल्लास हृदय प्रसन्न मुखड़ा
राम गए निकट कौशल्या
बोली बेटा तिलक तुम्हारा
लेती आज बलाएँ माता

मृदु बोले रघुवर धर्म धुरीणा
मुझे पिता ने आज दिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चौदह वर्ष राज्य कानन
आज्ञा दो माता प्रसन्न
हो मंगलमय बन जाना मेरा
करने कुछ बड़े काम वहाँ
वश प्रेम कभी भयभीत न होना
हो दुखित नहीं शीघ्र लौटूँगा
वचन राम के वाण समान
डूबी रानी दुख सागर
बोली नृप के प्यारे सुत
फिर बनवास दिया किस कारण
तब सब मंत्री सुत बतलाया
मौन हुई सुन कौशल्या
प्रेम पुत्र का धर्म पतिव्रत
बोली कौशल्या कर तोलन
कह राजपाट बनवास दिया
दुख मुझे नहीं व्यापा इसका
किंतु भरत, नृप और प्रजा
बिना तुम्हारे सुखी भला
है दोनों माता-पिता की आज्ञा
तो बन भी होगा अवध सरीखा
बन देवी देव पिता-माता
खग मृग करे तुम्हारी सेवा
पितृ देव करेंगे रक्षा
हे सुत तुम सबके सुखदाता
बन बड़े भाग्य का अवध अभागा
हे रघुवर जो तुमको त्यागा
बनवास राम का सुन वैदेही
विह्वल चरण सास के पकड़ी
बैठी मौन अश्रु बहाती
खोद रही नख से धरती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसे देख कौशल्या बोली
राम सुनो सीता सुकुमारी
रखा जिसे प्राण की नाईं
संग तुम जाना सोच रही

जिसके पिता शिरोमणि राजा
ससुर सूर्य कुल भानु पताका
जिसने रखे न पैर धरा
सह पाए बन के दुख क्या

बोले रघुवर हे सुकुमारी
रहो भवन तुम यही भलाई
भरे हुए कुश काटे बन पथ
कोमल चरण नहीं बन लायक

कठिन भयंकर कानन भारी
वर्षा, घाम, शीत, अँधियारी
कंदर खोह नदी नद नारे
भालु बाघ हिंसक पशु बन के

शयन भूमि वस्त्र पत्तों के
फल-फूल अहार सदा नहिं मिलते
तुम चंदन बदनी योग्य न बन के
माता-पिता संग रहना सुख से

नैन अश्रु भरे वैदेही
तजना चाहे राम सनेही
फिर धैर्य धरी पृथ्वी की बेटी
अश्रु बाढ़ हृदय में रोकी

छू चरण सास के सीता बोली
क्षमा करो धृष्टता मेरी
मन विचार मैं कहती माता
पिय-वियोग सम दुख न दूजा

प्राण - नाथ बिना तुम्हारे
सुरपुर भी नरक समान मुझे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्नेह प्रेम जगत के नाते
नहीं सुहाते बिना पति के
बन के दुख-सुख मुझको देंगे
प्रियतम तुम मेरे संग रहोगे
यदि नाथ मुझे अवध छोड़ेगे
तज शरीर प्राण जाएँगे
बन पथ चलते नहीं थकूँगी
पिय सेवा हर भाँति करूँगी
मृदु सूरत देख तुम्हारी
धूप न पवन सताएगी
बोले रघुवर दो शोक छोड़
अब शीघ्र चलो मेरे संग बन
अश्रु पोंछ कौशल्या बोली
फिर कब देखूँ सुंदर जोड़ी
बार-बार लाल रघुवर कह
माता चूम रही सुत का मुख
स्नेहाकुल कातर माता देखी
ढ़ाँढस दे समझाए रघुपति
सिया सास के चरण लगी
गले लगाकर माता बोली
जब तक गंगा-जमुना धारा
सौभाग्य अचल रहे तुम्हारा
समाचार जब लखन सुने
व्याकुल हृदय तुरत उठ आए
कंपित तन नैन अश्रु बहाते
अधीर राम के चरण गहे
मन में सोचे स्वामी मेरे
मुझे तजेंगे या संग लेंगे
लछमन को देखा कर जोड़े
देह गेह सब नाता तोड़े

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहा राम ने धर्म तुम्हारा
मात - पिता, गुरु सेवा करना
यही नीति कहती भाई
कुटुंब प्रजा न रहे दुखी
भरत शत्रुघन नहीं भवन में
पिता वृद्ध शोक में मेरे
होगा अवध अनाथ दुखी
ले चलूँ संग यदि तुमको भाई
व्याकुल लछमण चरण पड़े
अवरुद्ध कंठ बिलखकर बोले
यदि तज दो तो क्या वश मेरा
तुम स्वामी मैं दास तुम्हारा
किंतु आज मैं सच कहता
न जानूँ गुरु, मात - पिता
स्नेह प्रेम विश्वास जगत के
सब कुछ भैया तुम ही मेरे
धर्म नीति के वे अधिकारी
जो नर श्रेष्ठ धर्म व्रतधारी
धन वैभव यश की चाह नहीं
रहा तुम्हारा पद अनुरागी
शिशु सा स्नेह छाँह तुम्हारी
क्या मुझको भी तज दोगे भाई ?
कहे राम तुरंत चलो बन
माता से विदा माँग लो लछमन
मुख प्रसन्न माता पग छुए
माँगी विदा बात सब बोले
सिर धुनी विपति अग्नि सम देखी
धीरज रख सुमित्रा बोली
बन जाओ लछमन बड़ भागी
छलहीन राम चरण अनुगामी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मात-पिता सिय राम तुम्हारे
बन में उनको क्लेश न पहुँचे
लखन संग सिय राम चले
पिता पास भवन आए
मैथिली सहित दोनों सुत देखे
नृप हो बेकल हृदय लगाए
शीश झुका पिता चरण
अति प्रेम भरे बोले रघुवर
आज्ञा आशीष पिता मुझे दो
कर्तव्य विमुख न होने दो
बोले नृप राभ तुम्हें कहते मुनि
जड़ चेतन जग का स्वामी
शुभ - अशुभ कर्म जो करता
वैसा फल ईश्वर देता
अपराध नहीं राम तुम्हारा
क्यों हो रही तुम्हें सजा
कोई भुगते अपराध किसी का
अति विचित्र तुम्हारी लीला
सिय गले लगा बोले राजा
बेटी अवध रहो या मिथिला
सीताराम चरण अनुरागी
बन से अच्छा घर लगा नहीं
अरुंधती चतुर नारियाँ बोलीं
तुमको बनवास नहीं वैदेही
सास - ससुर संग रहो सुखी
सियनैन सजल वाणी आई
यह सुन कैकई तमक उठी
मुनि पट भूषण ले आई
बोली मधुर कंठ रख आगे
राम प्राण प्रिय तुम राजा के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बन जाने को नहीं कहेंगे
परलोक सुयश नष्ट सब होंगे
इसलिए करो जो तुम्हें रुचे
मूर्च्छित नृप बचन बाण गिरे
मुनि वेष तुरंत राम बनाए
मात - पिता को शीश झुकाए
चले जाने की लखन समेत
हुए भवन के लोग अचेत
गुरु वशिष्ठ दरवाजे आए
विरह व्यथित लोग खड़े
प्रेम वचन सबको समझाए
दासी दास गुरु को सौंपे
गुरु चरण राम छुए
सबसे हाथ जोड़कर बोले
परम मित्र वह मेरा होगा
मात - पिता जो सुखी करेगा
फिर शिव उमा गणेश नाम ले
बन की ओर सियराम चले
हा-हा कार अवध में फैला
सुरपुर में हर्ष विषाद हुआ
मूर्च्छा टूटी जागे राजा
बोले सुमंत्र तुम रथ लेकर जाना
बैठा रथ बन दिखलाना
दोनों कुँवर वापस लौटा लाना
यदि न आएँ दोनों भाई
ले आना तुम जनक दुलारी
मंत्री सब उपाय तुम करना
अथवा मरण हमारा होगा
रथ ले गए शीघ्र मंत्री
जहाँ राम लखन वैदेही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर बिनती रथ पर बैठाए
बाहर चले अयोध्या के
अपने घर द्वार नागरिक छोड़े
रथ के पीछे दौड़ पड़े
तमसा तट पर रोका रथ को
कहे राम अब लौटिए घर को
नहीं सुने थक निद्रा आई
रघुवर बोले रथ हाँको मंत्री
भोर हुई नींद खुली
देखा रथ का पता नहीं
चारों दिशा लोग खोजे
व्याकुल लखन राम पुकारे
मिले नहीं दुखित घर लौटे
दर्शन आस सँजोई मन में
शृंगवेर पुर रथ पहुँचा
देखे सब लहराती गंगा
हरषित उतरे राम-लखन, सिय
स्नान पान किया पावन जल
ले बंधु निषाद राज पहुँचा
भेंटे फल - फूल प्रणाम किया
बैठा निकट कुशल प्रभु पूछा
अति हर्षित निषाद बोला
धरणीधर भवन वास आपका
मैं निषाद अति नीच जाति का
स्वामी मेरे नगर पधारे
रघुपति अति प्रेम भरे बोले
पिता दिए मुझे आज्ञा
चौदह साल करूँ बन डेरा
मुनि वेष बना कंद फल खाऊँ
उचित नहीं मैं पुर जाऊँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देख राम, लखन, वैदेही
परस्पर कहें ग्राम नर-नारी
निष्ठुर मात - पिता इनके
कोमल बालक बन भेजे ऐसे
कोमल किसलय कुशा मिलाई
गुह बना साँथरी एक बिछाई
कंद फूल फल सब खाए
लेटे राम अशोक तरु नीचे
स्वामी चरण लखन दबाते
उठे देख जान प्रभु सोए
तरकश धनुष - बाण लिए
कुछ दूर लखन वीरासन बैठे
देख राम सोए धरती
लक्ष्मण से कहे निषाद दुखी
बढ़कर सुंदर इंद्र भवन
सोते थे भूपति राजमहल
सोए वही राम वैदेही
थके हुए आज़ चटाई
विष घोली कुटिला कैकई
सुख समय दुष्ट दुख पहुँचाई
बोले लक्ष्मण व्रत संयम धारी
ज्ञान वैराग्य भक्ति रस सानी
सुख-दुख दे न किसी को कोई
हम अपने कर्मफल भोगी
मृत्यु शत्रु संयोग वियोग
ये सब हैं भ्रम के फंदे
जन्म - मृत्यु कर्म काल
ये सब जगत जंजाल
धरती धऩ घर - परिवार
स्वर्ग - नरक मन के विचार

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह जगत और इसका व्यापार
इनका मूल मोह अज्ञान
सपने राजा बने भिखारी
या रंक बने स्वर्ग स्वामी
जगने पर जैसे लाभ न हानि
वैसे जग प्रपंच है भाई
यह मोह निशा सोते सब प्राणी
देते विविध स्वप्न दिखाई
जागे जोगी इस जगत निशा
भोग विलास विरक्त बना
विवेक जगे तब भ्रम भागे
रघुनाथ चरण चित्त अनुरागे
परम पुरुषार्थ यही सखा
परमार्थ राम ब्रह्म स्वरूपा
इसलिए दोष किसी को न दो
सदा राम पद प्रीति करो
बीती रैन राम गुण कहते
सुबह सुमंत राम से बोले
आदेश नाथ दिए राजा
राम पास तुम रथ ले जाना
बन दिखला गंगा नहलाना
सबको अवधपुरी लौटाना
अब नाथ आज्ञा हमें दीजिए
रो रोकर सुमंत चरण गिरे
बोले राम सत्य से बढ़
नहीं दूसरा धर्म जगत
कर जोड़ पिता प्रणाम कहना
मेरे लिए करें न चिंता
बोले सुमंत राजा का कहना
सीता रहे अवध या मिथिला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोली सीता ऐश्वर्य पिता
बिना पति के नहीं सुहाता
चक्रवर्ति सम्राट ससुर जी
क्या कर पाएँ मुझे सुखी

मैं तो छाया अपने प्रियतम की
कैसे उनसे विलग रहूँगी
प्रभा सूर्य को नहीं छोड़ती
और चाँद को नहीं चाँदनी

दुर्गम पथ नदियाँ पशु बन के
पिय संग रह सुखी करेंगे
बन में मैं हर भाँति सुखी
प्रिय देवर संग वीर पति

सुमंत चले जैसे व्यापारी
लौटे गँवा सम्पदा सारी
हय त्याग घास हिनहिना उठे
निषाद नैन में अश्रु भरे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

केवट भक्ति

मुनि वेष स्याम तन शीश जटा
राम खड़े तट पर गंगा
पद कमल रेणु पराग सम लिपटी
पावन शिव विभूति बनी
रघुवर केवट से माँगें नैया
कहे प्रेम भरे वह छलिया
नाथ चरण में है कुछ औषधि
छुए वस्तु मानुष बन जाती
छूकर शिला बनी मुनि नारी
मेरी नाव तो काठ बनी
पत्थर से है वह हल्की
छू सहज बन जाए नारी
फिर कैसे मैं पेट भरूँगा
वही एक कुटुंब सहारा
मैं तो भगवन लुट जाऊँगा
नहीं जानता दूजा धंधा
अवश्य नाथ यदि जाना चाहें
कहिए मैं चरण पखारूँ पहले
पद कमल धो मैं नाव चढ़ाऊँ
उतराई न तुमसे मैं लूँ
सच कहूँ शपथ ले राम दुहाई
मारें भले तीर लखन जी
पार करूँ न जगत खेवइया
जब तक चरण पखार न लूँगा
सुन अटपट केवट की वाणी
प्रेम भरे छल से लपटानी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम हँसे प्रिय लखन निहारे
रघुवीर भक्त अपना पहचाने
प्रभु बोले हँस करो वही
जिससे नाव न जाय तुम्हारी
जल ला शीघ्र पाँव पखारो
देर हो गई पार करा दो
राम नाम मुख से लेते
जो भव सागर पार कराते
वे राम भक्त से करे निहोरा
पार कराओ केवट गंगा
आज्ञा पा जल केवट लाया
चरण प्रेम से प्रभु के धोया
अपने पी परिवार पिलाया
ले गया मुदित पार नौका
मन में सोच रहे रघुराई
कुछ इसको नहीं मंजूरी दी
उँगली से उतार मणि मुद्रिका
केवट को दे दी सीता
बोले रघुनंदन उतराई लो
केवट चरण पकड़ बोला
क्या आज नहीं नाथ मैं पाया
दुख दरिद्रता दोष मिटा
अब नहीं कामना लेने की
लूँगा जब प्रभु लौटें नगरी
लखन - सिया कहे न लेता
दे भक्ति वर प्रभु किए विदा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम वन-पथ में

गंगा जल मे राम नहाए
शिव पूजन कर शीश झुकाए
कर जोड़े सिय बोली माता
करो पूर्ण हृदय कामना
निर्मल जल से वाणी आई
सिय, पति देवर संग लौटोगी
मनोकामना पूरी होगी
सुयश कीर्ति जगत फैलेगी
प्रातः प्रयागराज के दर्शन
चले राम सिया संग लक्ष्मण
त्रिवेणी जल स्नान किए
विधिवत् तीर्थराज को पूजे
भारद्वाज के आश्रम आए
दे आशीष मुनिवर बोले
जप, तप, योग सफल मेरे
राम तुम्हारे दर्शन से
रघुवर सकुचा कर बोले
मुनि जिसे आप बड़ाई देते
जग में महान गुणी वह बनता
नाथ न कुछ मेरी प्रभुता
मुनि सिद्ध अनेक वहाँ आए
राम - लखन का दर्शन करने
विनीत राम सबको कर जोड़े
आनंदित सब घर लौटे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुनि तब शिष्य चार दिए
बन मार्ग दिखलाने को आगे
कर पार नहाए जमुना जल
हर्षित देखे जो तन स्यामल

तटवासी काम - काज छोड़े
दरशन करने दौड़े आए
राम, लखन, सिय रूप निरखते
अपने बड़े भाग्य सराहे

वयोवृद्ध कथा तब कहते
मात - पिता उनको बन भेजे
कहते दुख पूरित नर - नारी
उचित किए न राजा-रानी

एक तपस्वी बालक आया
लघु वयस तन तेज पुंज सा
मन क्रम वचन राम पद प्रेमी
कवि अनजान वेष वैरागी

गिरा चरण इष्ट पहचाने
राम उठा हृदय लगाए
छुए लखन पद भेंटे छाती
सिय पद रज शीश लगाई

शिशु सम दी आशीष सिया
निषाद ने उसको कर जोड़ा
नैनों के संपुट से पीता
पियूष रूप इष्टदेव का

जन्मा वह बालक घर हुलसी
मानस का हुआ श्रेष्ठ कवि तुलसी
रघुवर आज्ञा गृह लौटा
पथ बढ़े राम, लखन, सीता

दो वीर पुरुष पथ पैदल जाते
देख पथिक चिंता से कहते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राजा के लक्षण अंग तुम्हारे
ज्योतिष झूठ हमारे जाने
गिरि अगम्य पथ कानन आगे
सुकुमारि नारि साथ तुम्हारे
बाघ सिंह हिंसक पशु बन के
कहिए हम चलें संग तुम्हारे
जाएँ जहाँ तक पहुँचा देंगे
शीश झुका हम लौटेंगे
पथिक प्रेम पुलक पूछते
रघुवर स्नेहपूर्ण लौटाते
पथ में गिरि बन बिहग देखते
राम, लखन, सिय आगे बढ़ते
कभी किसी तरु नीचे बैठे
सर सरिता जल कहीं नहाए
पद कमल जहाँ रखते रघुपति
धन्य धरा कोमल हो जाती
बादल छाया करते जाते
सुर फूल नभ से बरसाते
जब वे ग्राम निकट से जाते
नर-नारी-वृद्ध साथ हो जाते
राम - लखन का रूप देखते
मानो खिंचे हुए पथ चलते
कोई एक टक उन्हें निहारे
नैन राह छबि हृदय बसाए
सुध भूल एक आनंद में डूबा
कोई संपत्ति खजाना पाता
कोई वट की शीतल छाया
कोमल पर्ण बिछा कर कहता
तनिक थकान मिटा लो अपनी
फिर जाना तुरंत या प्रातः ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

एक कलश भर जल लाता
अति प्रेम आचमन उन्हें कराता
रघुनाथ सिया जब जान थकी
क्षण भर रुकते वट छाँह घनी
एक टक नर - नारी देखे शोभा
अनूप रूप धरती पर उतरा
रघुवर तरुण तमाल स्याम छबि
लछमन स्वर्णिम दामिनी ज्यों दमकी
कर कमल धनुष बाण लिए
जटा शीश कटि तरकश बाँधे
मुनि जैसे वस्त्र अंग सुहाते
चरण उघाड़े बन पथ जाते
संग देख नारी सुकुमारी
ग्राम वधूएँ सीता पूछी
देवि कौन दो कुँवर तुम्हारे
सकुचा सिया कहें प्रेम से
जो सहज सुभग गौर वर्ण
लखन नाम है मेरे देवर
फिर शशि तन पर आँचल डाली
तिरछी चितवन स्याम निहारी
खंजन से चंचल नैन सिया के
सैन कहे पिय कुँवर साँवरे
आशीष बड़ी बूढ़ी मिल देतीं
चिर रहो अचल सौभाग्यवती
आगे का पथ लखन पूछते
चिंतित लोग परस्पर कहते
विधि इनको बनवास दिए
तो क्यों न राह में फूल बिछाए
भोग - विलास जगत के झूठे
व्यर्थ महल बने राजा के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हे भगवन इन्हें हमें देते
अपनी पुतली में रख लेते
निश्छल वाणी कुछ कहते
धन्य पिता - माता इनके
धन्य नगर जहाँ से आए
सुख देते परम स्नेही जैसे
जहाँ - जहाँ दो भाई जाते
आनंद घन बरसते जैसे
राम, लखन, सिय पथिक कहानी
बन के गाँव - गाँव में गूँजी
आगे राम तपस्वी मग में
वीर लखन चलते पीछे
सिया बीच में शोभित थीं ऐसे
ब्रह्म जीव में माया हो जैसे
सुंदर वन वैभव राम देखते
बाल्मीकि आश्रम में पहुँचे
निर्झर जल पावन कमल खिले
विचरें वे पक्षी पशु वैर भूले
स्वागत करने मुनिवर आए
दंडवत कर रघुवर कथा सुनाए
पूछे कहाँ निवास करूँ
बोले मुनिवर मैं सत्य कहूँ
नर रूप नारायण राम तुम्हीं
शक्ति सिया संकल्प तुम्हारी
करती सृजन संहार जग पालन
शेषनाग अवतार लक्ष्मण
परे बुद्धि दृष्टि वाणी
वेद 'नहीं यह नहीं' बखानी
विधि हरि हर सोच-सोच थके
वे भी भेद न जाने सके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जिसे जनाते वही जानते
जान स्वरूप तुम्हारे होते
कृपा तुम्हारी तुमको भगवन
जाने भक्त तुम्हें रघुनंदन
कहते हो कहाँ निवास करूँ
हो कहाँ नहीं मैं तुमसे पूछूँ
अब कहूँ राम निवास तुम्हारे
वहीं रहीं लखन संग सीते
जिनके कर्ण रंध्र जलधि से
होते पूर्ण न कथा सरित से
प्यासे बने नैन चातक से
एक झलक घनस्याम दरश के
दिव्य प्रसाद गंध पाने की
तत्पर सदा नासिका जिसकी
जिह्वा बनी हंसिनी जिसकी
राम नाम गुण मोती चुगती
कंठ राम मंत्र जप करते
हाथ तुम्हारी सेवा करते
तुमको अर्पण कर भोजन करते
पर भूषण तुम्हें चढ़ा जोर लेते
पर दोष नहीं गुण सदा देखते
जिनके पद तीर्थ तुम्हारे जाते
जो नहीं किसी की करते निंदा
तुम्हें छोड़ आश्रय न दूजा
जो सत्य बचन प्रिय सदा बोलते
हे राम बसो तुम मन उनके
सांसारिक रूप तुम राम धरे
सुख मय आवास कहूँ तुमसे
चित्रकूट गिरि रम्य सुहाना
पशु-पक्षी का किल्लोल जहाँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करते मुनि श्रेष्ठ जहाँ तपस्या
बसो वहीं संग लखन सिया

गंगा धार वहाँ मंदाकिनी
पावन वह स्थल करती
अनुसूया अत्रि मुनि पत्नी
उसको अपने तप बतलाई

राम चित्रकूट गिरि पहुँचे
मंदाकिनी जल स्नान किए
धनुषाकार नदी पय देखी
मंदाकिनी उसमें लगी डोर सी

लगा घाट राम को रुचिकर
पर्ण कुटीर बनाए लछमन
रहने लगे राम, लखन, सिय
सुन ऋषि-मुनि आए पदवंदन

कोल किरात भील बनवासी
ले आए कंद मूल आहारी
करे जोहार राम से बोले
धन्य भाग्य कोशलपति आए

बीहड़ बन गुफा पहाड़ नदी
हैं सब अपनी जानी-पहचानी
बचा आपको हिंसक पशु से
हम सेवा सब भाँति करें

राम चित्रकूट जब आए
बना गहन बन मंगलदायक
लद गए वृक्ष फूल पत्ते से
तन गए लताओं के मंडप

मृदु गुंजार मधुप करते
लेती शीतल पवन हिलारें
पशु-पक्षी रव सदा गूँजते
मृग बाघ वैर भूल विचरते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

चित्रकूट गिरि बना महान
यश गाते सुमेर कैलाश
गोदावरि कृष्णा गंगा गाती
उज्ज्वल कीर्ति मंदाकिनि

भैया - भाभी का प्रेम मिला
भूले लखन पिता - माता
राम - सिया के चरण निहारे
स्नेह कुटुंब भ्राता का बिसरे

प्रतिदिन प्रेम पति का बढ़ता
देख मगन रहती सीता
पल - पल पिय मुखचंद्र देखती
सुखी हुई कुटुंब घर भूली

करते वही राम जिससे
सीता लखन प्रसन्न रहें
कभी याद मात - पिता की
तीनों को व्याकुल कर जाती

तब धीरज रख कथा सुनाते
प्रसन्न राम दोनों को करते
नित सेवा करते लखन जानकी
विविध भाँति राम चरण की

पथ में देखा गुह लौटते
व्याकुल सुमंत रथ ले जाते
सेवक संग दिए अपने
पहुँचाने सुमंत अयोध्या में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दशरथ शोक एवं मरण

राम विरह से मंत्री पीड़ित
धिक्कार रहे अपना जीवन
क्यों न प्राण गए संग रघुवर
बने पाप भागी वे जीकर

यह सोच हृदय धैर्य भागा
क्या बोलूँ जब पूछेगी माता
नृप को कैसे जा बोलूँगा
कुँवरों को बन मैंने छोड़ा

इसी भाँति सुमंत्र सोचते
तमसा तट पर आ पहुँचे
दिन भर बिता पेड़ के नीचे
प्रवेश किया नगर अँधेरे

रथ छोड़ा राज भवन द्वारे
मंत्री अंदर चुपचाप गए
नगर निवासी रथ पहचाने
घोड़े दीन दुखी देखे

लगे सुनसान नगर भयानक
जैसे हो पिशाच निवास
कौशल्या गृह पहुँचे
देखे राजा धरा पड़े

'जय जीव' कह प्रणाम किए
राम कहाँ नृप बोले
कहाँ लखन बहू वैदेही
दिखलाओ आँखों को मेरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर वादा राजतिलक बन भेजा
हर्ष विषाद न रघुवर व्यापा
ऐसे पुत्र विरह में मेरे
पापी प्राण नहीं क्यों निकले

सखा सँदेसा प्रिय का बोलो
अभी राम पास पहुँचा दो
देखूँ भर नैन सिया लखन
त्याग रहे प्राण अब तन

मंत्री बोले धीर धुरंधर
ज्ञानवान आप नृपवर
जन्म - मरण विछोह मिलन
हानि - लाभ आधीन कर्म

यह सोच हृदय धैर्य रखिए
शोक त्याग सबका हित करिए
अब संदेश राम का सुनिए
पहले दिन तमसा तट ठहरे

रहे दूसरे दिन जल पीकर
राम, लखन, सिय गंगा तट पर
निषाद राज बहुत सेवा की
शृंगवेरपुर रात बिताई

प्रातः वट क्षा दूध मँगाए
राम लखन शिर जटा बनाए
पहले सीता नौका बैठाई
ले धनुष तीर बैठे दो भाई

व्याकुल मुझे देख कहा
प्रणाम पिता से मेरा कहना
सब माता से मेरी विनती
चिंता कभी न करें हमारी

गुरु से कर जोड़ करूँ विनती
पिता सोच न करें हमारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राजा बने भरत से कहना
नीति धर्म न भाई तजना

कटु बचन कुछ लखन बोले
मना किया मुझको कहने से
नैन अश्रु तन कंपित वाणी
बोली प्रणाम सबको वैदेही

तब केवट ने नाव चला दी
आँखें पत्थर बन रहीं देखती
कैसे कहूँ दुःख मैं अपना
जीवित लेकर संदेशा लौटा

सुन राजा वचन सारथी के
खा पछाड़ भूमि गिरे
करने लगीं रुदन सब नारी
हा - हाकार मचा नगरी

दशरथ प्राण कंठ में अटका
रविकुल सूरज अस्त हो चला
धीरज धर बोली कौशल्या
कर्णधार आप इस नौका

रखिए धैर्य कठिन समय
हम पार करेंगे अवधि वास
दोनों सुत सिय आँखें देखे
नहीं तो कुटुंब प्रजा डूबे

नृप ने आँखें खोलीं पूछा
कहाँ लखन राम सीता
कौशल्या को श्राप सुनाया
जो था दिया तपस्वी अंधा

बोले जीवन धिक्कार करूँ
जो बिना राम के तन रखूँ
हा सीता-राम, लखन हे प्यारे
कह दशरथ राजा प्राण तजे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब रानी फूट-फूट कर रोतीं
डूबे दुख सिंधु सब प्राणी
कुटुंब प्रजा दास - दासी
रो - रो गाली देते कैकई

सुबह हुई वशिष्ठ गुरु आए
ज्ञान कथा दुख दूर किए
राजा शव डुबो तेल में रखा
दूत भरत को लाने भेजा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भरत शोक

ननिहाल भरत चिंताकुल रहते
दुःख सपने आते रातों में
जैसे ही दूत वहाँ पहुँचे
तुरंत वेग रथ हाँक चले

जैसे प्रवेश किए नगर
हुए अपशकुन भयंकर
भयानक अवध पुरी लगी
उदास दुखी नगरवासी

केवल हँसती मिली कैकई
ले आई वह सजा आरती
चिंताकुल देख भरत से पूछा
कुशल कहो सुत नैहर का

कह कुशलक्षेम भरत ने पूछा
प्यारे भाई पिता कहाँ
सब माता कहाँ गईं मेरी
और कहाँ सीता भाभी

कपट नीर नैन भर बोली
बेटा मैंने बात बना ली
बिगड़ी कुछ बात बीच में
पिता सिधारे स्वर्ग तुम्हारे

सुन शोकाकुल भरत हुए
रो - रो बिलख विलाप करें
फिर धीरज रख बोले माता
क्या कारण था पिता मरण का

कही कैकई अपनी करनी
गिरी भरत पर मानो बिजली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भूल गए पिता मरण
सुन बनवास राम-लखन
बोली देख उदास भरत
बेटा दुःख त्याग करो राज
बोले भरत कुल नाशिनी
क्यों न जनमते मुझको मारी

तुझ पर किए पिता विश्वास
हरण हुई मति अंत समय
रघुवर जड़ जीवों के प्यारे
उनको बैरी तू जानी कैसे
दुःख हुआ नहीं वरदान माँगते
गली न जीभ पड़े न कीड़े
कालिख पोत हँस अपने पर
हो आँख ओंट बैठ दूर

अंतस विद्रोही मैं रघुवर का
दिखलाया जग आज विधाता
यह सब दोष भाग्य का मेरे
बेकार झूठ कहूँ तुझसे
उस समय मंथरा दासी आई
अंग - अंग आभूषण पहनी
मारी लात क्रोधित शत्रुघन
कूबड़ फोड़ा बहा खून

बोली मैंने तो भला किया
क्यों देते ऐसा फल उल्टा
रिपुसूदन चोटी पकड़ घसीटे
दया दान दे भरत छुड़ाए
उदास मलिन कौशल्या बैठी
देख भरत को उठ दौड़ी
गिरी भूमि सिर चक्कर आए
गिरे चरण भरत अकुलाए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोले माता पिता कहाँ
कहाँ राम, लखन प्रिय भ्राता
सीता भाभी कहाँ हैं मेरी
कैकई क्यों इस जग में जन्मी
जन्मी तो क्यों बाँझ हुई ना
मुझसा पुत्र कंलकी जन्मा
कुल का जिसने नाश किया
प्रियजन बैरी बना अभागा

मैं हूँ जड़ इस सारे दुःख की
माता मुझसे दुर्गति तेरी
पिता स्वर्ग बन भटके भ्राता
धिक्कार हुआ यह जीवन मेरा
सुन भरत वचन उठी कौशल्या
गोदी बैठा अश्रुजल सींचा
फिर शत्रुघन को गले लगाया
बोली उल्टा हुआ विधाता

बन गए राम, लखन, वैदेही
मेरी नहीं इन नैनों देखी
किंतु पुत्र पिता तुम्हारे
तजना देह जानते थे
करने लगे रुदन दो भाई
क्रंदन करें भवन नर - नारी
बोले भरत पाप जो लगता
माता-पिता, गौ, स्त्री वध का

वही पाप माँ मुझे लगे
यदि मेरी मति हो इसमें
बोली माता मन तन वाणी
राम चरण में प्रीति तुम्हारी
रघुवर के हे प्यारे भाई
सम्मति इसमें नहीं तुम्हारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुई सुबह सचिव गुरु आए
वामदेव द्विज आदि पधारे

सुंदर विमान सजा दशरथ का
विधि से करवाए दाहक्रिया
भरत दशगात्र विधान किए
दे दान शुद्ध हुए

राज सभा वशिष्ठ बुलवाए
जिसमें सचिव श्रेष्ठ जन आए
दोनों भाई निकट बैठाए
नीति धर्म कथा सुनाए

रानी की कही कुटिलता
भूप धर्मव्रत शील सराहा
सीता लखन प्रीति सराहा
स्नेहिल दुखी हुए मुनि ज्ञानी

बोले गुरु भरत से बिलखा
भावी प्रबल न दोष किसी का
हानि - लाभ मरना - जीना
यश - अपयश हाथ विधाता

नृप ने तुम्हें राज्य दिया
अब आज्ञा पालन धर्म तुम्हारा
माता प्रजा जन सुख भोगें
देना राज्य राम के आए

बोलीं कौशल्या कुटुंब प्रजा
भरत तुम्हारा एक सहारा
हाथ जोड़ मंत्रीजन बोले
गुरु आज्ञा भरत मानिए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भरत भी बन में

आँसू बहने लगे भरत के
बोले धीरज रख कर जोड़े
उचित कहा गुरु मात पंच ने
किंतु हृदय संतोष न मेरे

पिता स्वर्ग राम सिय बन में
दे रहे मुझे राज्य भोग
क्या इसमें मेरा हित होगा
अथवा बड़ा काम आपका

बिना राम, लखन, सिय भाभी
यह तुच्छ राज्य मुझे दुखदाई
फिर दे राज्य सुख करे कामना
मरुभूमि जैसे मृग मरीचिका

मैं दुष्ट कुटिल राम विरोधी
अरे धरातल जाए पृथ्वी
पापी मुझ जैसा नहीं जगत में
सिय राम गए बन मेरे कारण

बिन देखे चरण राम सिया के
उपहास प्राण ने बहुत सुना
कैकई काम बनाई मेरा
आप मुझे देते टीका

राम सिया को छोड़ सभी
कहें इसमें सम्मति मेरी
प्रातः मैं बन चल दूँगा
अपनाएँगे मेरे भैया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आज्ञा आशीष आप मुझे दें
मेरी सुन राम अयोध्या लौटें
मैं हूँ दुष्ट कुमाता जन्मा
फिर भी मुझे भरोसा प्रभु का

भरत वचन सबके मन भाए
राम प्रेम अमृत रस साने
विरह व्यथा विष में डूबे
सुन बीच मंत्र जैसे सब जागे

बोले उचित भरत जी कहते
प्रातः हम राम पास चलें
भर उठा हर्ष हृदय सबके
प्राणों के प्राण भरत बने

रथ अनेक पालकी बुलाईं
बन जाने की हुई तैयारी
विश्वासी जन भरत बुलाए
संपति महल खजाने छोड़े

प्रातः सचिव बुलाकर बोले
तिलक वस्तु साथ ले चलिए
मुनि पत्नी संग रथ बैठे
द्विज नागरिक वाहन बैठे

चित्रकूट प्रयाण किया
चली पालकी पर सब माता
भरत, शत्रुघन पैदल जाते
देख लोग भी वाहन उतरे

तब माता ने विनय करी
रथ पर बैठे दोनों भाई
पहले दिन तमसा तट ठहरे
दूजे दिन रुके गोमती तीरे

कुछ भोजन करते एक समय
रहते कुछ दूध फल खाकर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

त्यागे सब लोग भोग भूषण
व्रत नियम करें रघुवर दर्शन

वह रात सई तीर बिताई
शृंगवेर पहुँचे नगरी
समझा निषाद भरत सेना ले
युद्ध राम से करने जाते

बोला सब बंधु घाट को रोको
गंगा पार, न जाने दो
किंतु विचार उठा मन उसके
भरत भेद मिल लूँ पहले

कंदमूल फल ले गुह पहुँचा
मुनि से कह नाम प्रणाम किया
आशीष दे बोले गुरु ज्ञानी
भरत निषाद राम पद प्रेमी

दौड़ पड़े रथ छोड़ भरत
जैसे आए बंधु लक्ष्मण
जाँति पाँति भेद भूले
अपनी छाती लगा लिए

गले लगाए उसे शत्रुघन
जोहार किया गुह मात पूज्यजन
अपने दास बुलाकर बोला
उचित बनाओ बन में डेरा

गंगा जल में रामघाट
सुखी हुए सब कर स्नान
सेवा वंदन कर मात चरन
निषाद संग चले भरत

थाम हाथ निषाद का बोले
हे सखा दिखलाओ तनिक मुझे
कहाँ रात भैया भाभी
सोए कहाँ लखन प्रिय भाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शीतल अपने नैनो को कर लूँ
मन की आग तनिक बुझाऊँ
तब अशोक तरु नीचे देखा
बिछी हुई कुशा की शैया

जोड़ हाथ परिक्रमा की
चरण चिह्न रज आँख लगाई
वंचित आभूषण से भाभी के
गिरे स्वर्ण कण माथे रखे

बोले भरत दुख कातर वाणी
सोई यहाँ थी जनक दुलारी
रघुवंश मणि अवधेश दुलारे
बिछा कुशा यहाँ पर सोए

बन दुख सहे लखन लघु भाई
देख न फटती छाती मेरी
कुल कलंक रचा मुझे विधाता
स्वामी द्रोह सिखलाई माता

बोला निषाद विधि की करनी
शायद फेरी मति कैकई
उस रात बार बार हे स्वामी
राम सराहे प्रीति आपकी

लोगों ने वह स्थल देखा
बार बार पथ करी परिक्रमा
दोष सब कैकई का कहते
निषाद की प्रशंसा करते

प्रातः पार किए गंगा
चढ़ीं पालकी पर सब माता
निषाद राज चले पथ आगे
रथ पर गुरु द्विज बैठ चले

भरत चले पथ में पैदल
बोली माता बैठे न वाहन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहे राम गए बन पैदल
उचित मुझे जाना सिर के बल
सिया राम को जपते-जपते
भरत प्रयागराज पहुँचे
श्वेत श्याम त्रिवेणी का जल
स्नान किए बोले जोड़े कर
धन धर्म काम रुचि मैं न माँगूँ
शुभ गति निर्वाण नहीं चाहूँ
जन्म - जन्म रघुवर पद प्रीति
वर माँगूँ तीर्थ एक यही
त्रिवेणी जल से वाणी आई
भरत सदा राम पद प्रेमी
राम तुम्हारे अति अनुरागी
सुन धन्य धन्य सुरवाणी गूँजी
भारद्वाज मुनि आश्रम आए
मुनि भेंटे भरत प्रेम भरे
संकोच देख मुनि बोले
विधि करनी वश नहीं मनुज के
नहीं दोष था कैकई का
उसकी मति फेर गई शारदा
दोषी कहे तुम्हें जो कोई
तो वह दुष्ट अधम अज्ञानी
अनर्थ राम बनवास हुआ
किंतु भरत वह भावीवश था
तुम राज भोगते दोष न होता
तुमको दिए राज्य राजा
सुख त्याग रामपद प्रीति लगाई
जीवन धन बनी प्राण की नाई
यह मंगल मूल सदा सुखदाई
हे भरत धन्य तुम हो विजयी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम भक्ति रस सिद्धि का
श्री गणेश तुमसे भरत हुआ
दर्शन कर हम सब बड़भागी
हे दशरथ सुत रघुवर प्रिय भाई
यश निर्मल चंद्र सदा चमकेगा
आकाश जगत में भरत तुम्हारा
कलंक भले यह तुमको होगा
हम सबको उपदश हुआ

हे भरत कहूँ झूठ नहीं
राम, लखन, सिय तुम पर वारी
तुम पर रघुवर प्रीति घनेरी
जीवन सुख से जैसे नर की
तुम जैसा प्रेम पात्र न कोई
जिसमें रघुवर प्रीति समाई
मेरी मति यह भरत कहे
तुम राम प्रेम शरीर धरे

रोमांचित तन भरत हुए
नैनों से आँसू छलक पड़े
कर जोड़ गद्गद वाणी बोले
झूठ न बोलूँ मुनि समाज में
सोच नहीं माता की करनी
पतित कहे जग शोक नहीं
न परलोक बिगड़ने का डर
और न दुख पिता गए स्वर्ग

दुख दावानल हृदय धधकता
सिया सहित दोनों प्रिय भ्राता
धर मुनिवेष पैर उघाड़े
बन - बन आज भटक रहे
वल्कल वस्त्र अहार फूल फल
पर्णकुशा बिछा कर सोते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शीत घाम वर्षा बयार सह
वृक्षों की साया में रहते

इस दुख जलती छाती मेरी
भूख न नींद मुझे आती
औषधि मेरे इस कुरोग की
लौटें राम अवध नगरी

मुनि बोले चिंता न करिए
राम चरण देख दुख जाए
स्वीकार करो कंदमूल फल
बनो प्रेम प्रिय अतिथि भरत

मुनि तप बल सिद्धि सब आई
बोले सेवा करो अतिथि की
सबहैं राम विरह से व्याकुल
दुख हरो पूर्ण करो मन काम

सुंदर आवास रचे रिधि सिधि
सुख वैभव साज सजाए बहु विधि
अपने तप बल रचे मुनि
वैभव एश्वर्य बढ़ इंद्रपुरी

मुनि आज्ञा भरत रहे
भर रात भोग विलास के पिंजड़े
तनिक छुआ मन तन नहीं
जैसे डरा हुआ पंछी

प्रातः तीर्थ राज नहाए
मुनि आशीष शीश धरे
चले चित्रकूट भरत
रथ त्याग राह में पैदल

राम लखन सिय पथिक कथाएँ
गुह से विभोर हुए सुनते
राम वास के ठौर जब देखें
उमड़े प्रेम नैन घन बरसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बेसुध प्रेम भरत पथ जाते
देख देव फूल बरसाते
बादल करते जाते छाया
शीतल पवन डुलाती पंखा

पृथ्वी देह बनी कोमल
बन मार्ग बना था मंगलमय
जो पथ जाते उनको देखे
परम पद उस क्षण वह पाए

यह शक्ति देख इंद्र डरे
गुरु वृहस्पति से बोले
कुछ करिए ऐसा छल
भरत राम से हो न मिलन

राम संकोची अधिक प्रेमवश
भरत गंभीर प्रेम के सागर
बनती बात बिगड़ने वाली
हँस बोले गुरु देख चतुराई

मायापति सेवक से माया
देव सुरों पर भारी होगा
अपराध भक्त का जो करता
वह राम क्रोध अनल जलता

राम भक्त जगत हितकारी
बने भरत भक्त शिरोमणि
राम जिन्हें जपता है जग
वे राम जपे सदा भरत

एक दिवस राह रुके
प्रातः जमुना पार किए
सादे वस्त्रों में भरत-शत्रुघन
सबसे पीछे जाते पैदल

पथ वनिता कहतीं आपस में
राम लखन सखि ये लगते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वयस वही गुण शील वही
पर मुनि जैसा वह वेष नहीं
नहीं संग सीता सुकुमारी
सेना इनके साथ चल रही
नहीं प्रसन्न दुखी मुखड़ा
इस कारण संदेह हमें होता
चतुर सखी कहे सबसे
त्याग राज जो पिता दिए
ये भरत जा रहे राम मनाने
नंगे पैर कंद फल खाते
उस दिन लोग वहीं ठहरे
रघुवर दर्शन भोर चले
हो रहे शिथिल अंग उनके
किंतु हृदय उत्साह भरे
गिरि चोटी को कर इंगित
बोला गुह कामद गिरि पावन
वहीं राम पय नदी किनारे
सीता लखन संग रहते
सबने कर जोड़ प्रणाम किया
जय सीता राम घोष किया
अधिक प्रेममय लोग हुए
आगे पैर नहीं उठते
जल सुविधा देख समीप रुके
बीती रैन तब भरत चले
उधर स्वप्न वैदेही देखी
आए संग समाज भरत जी
बुरी दशा सासुएँ देखीं
जनता दुःख से त्रस्त खड़ी
कहे राम हे लक्ष्मण भाई
अप्रिय खबर सुनाए कोई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्नान पूजा कर रघुनंदन
बैठे मुनि जन का कर बंदन
देखा उत्तर में धूल उठी
और भागते पशु पक्षी

राम चकित हो खड़े हुए
समाचार आ भील दिए
सेना सहित भरत जी आते
रघुवर प्रसन्न फिर लगे सोचने

देख सोच स्वामी का लक्षमण
बोले प्रभु आप सरलचित
सब पर विश्वास नाथ आपका
किंतु पाप भरत मन आया

पा पद राज घमंड हुआ
असहाय राम को जान रहा
निष्कंटक राज्य करे धरती
सेना ले आए दोनों भाई

मैं भी क्षत्रिय दास आपका
रण में आज दिखा दूँगा
कह कटि तरकश जटा शिर बाँधे
कर जोड़ धनुष वाण ले बोले

बहुत सहा मन मार भरत का
आज क्रोध निकालूँ पिछला
समर सेज सोएँ दो भ्राता
फल पाए राम निरादर का

उसी समय हुई नभ वाणी
लछमन वीर अतुल बलशाली
जो सहसा कर पछताएँ पीछे
उन्हें वेद विद्वान न कहते

सुन सौमित्र हृदय सकुचाए
सादर बैठा सीतापति बोले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

होगा नहीं भरत राजमद
पा भी ले विधि हरिहर पद
फट सकता क्या क्षीर सिंधु भी
यदि काँजी की कुछ बूँद गिरीं
सौगंध पिता और तुम्हारी
नहीं भरत सा जग भाई
देवों ने सुन प्रभु की वाणी
कहा धर्म धुरीण भरत जी
राम तुम्हारे सिवा भरत का
गुणगान अन्य कौन कर सकता
इधर नहा पुनीत मंदाकिनी
गुह लिए संग चले दो भाई
सब लोग नदी तट पर ठहरे
कुतर्क भरत के मन उठते
सुन मेरा नाम भैया भाभी
अन्यत्र चले न जाएँ कहीं
माता सम्मति जान मुझे
परित्याग मुझे वे कर सकते
जो भी करे थोड़ा होगा
मैं अब शरण राम पादुका
दें दंड अथवा करें क्षमा
भारी मेरा अपराध हुआ
आश्रम निकट भरत पहुँचे
त्रिविध ताप दुःख दूर हुए
बन पर्वत मोर चकोर देखे
सुख आनंद विभोर हुए
ऊपर चढ़ भुजा उठा गुह बोला
फल वृक्षों से घिरा हुआ
वह वट वृक्ष के नीचे
रामकथा शास्त्र सुनते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तरु निकट नदी पय बहती
वहीं पर्ण कुटीर राम की
घनी छाँह तुलसी के पौधे
लछमन सीता स्वयं लगाए

वट छाया बनी हुई वेदी
सीता अपने कर कमल बनाई
कर प्रणाम चले दो भाई
तन उमंगित नैन में पानी

देख राम पद अंकित धरती
शीश धरी रज नैन लगाई
निषाद मार्ग प्रेमवश भूला
सुर ने आकर उसे बताया

ज्यों ही प्रवेश किए आश्रम
भरत मिटे दुःख दाह विषम
देखे लखन खड़े प्रभु आगे
कर में धनुष तीर लिए

वेदी पर मुनि समाज बैठा
विराज रहे राम सिया
मुनि वसन सोहे शीश जटा
कर फेरे धनुष हँसे दुःख हरना

भरत गिरे दंड से धरती
कह नाथ करो अब रक्षा मेरी
पहचाने प्रिय बचन लखन
यद्यपि पीछे की ओर भरत

प्रभु को कैसे पीठ दिखाए
सोच लक्ष्मण खड़े रहे
बोले भरत यहाँ आए
कर रहे प्रणाम तुम्हें भइया

हो गए खड़े रघुवर अधीर
पट गिरा कहीं पर कहीं तीर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बरबस उठा धरा से भाई
लगा लिया अपनी छाती
भरत राम का मिलन परस्पर
देख लोग सुधि बुधि भूले
राम शत्रुघन गले लगाए
मिले गुह से प्रेम भरे
भरत लखन को कर जोड़े
शत्रुघन को लखन दुलारे
चरण धूल ली सीता भाभी
शत्रुघन भरत आशीषें पाई
तब केवट बोला हे स्वामी
गुरु माताएँ नगर निवासी
सेवक मंत्री दुःख से व्याकुल
आए हैं प्रभु के दर्शन
तुरंत गए राम लछमन
जहाँ समाज माता पूज्य जन
गुरु देख धनुष रख किए दंडवत
लगा लिए वशिष्ठ वक्षस्थल
पहले मिले राम कैकई
दे भक्ति बुद्धि शुद्ध की
फिर दोनों मिले माताओं से
गुरु पत्नी के पैर पड़े
पूज्य जन को आश्रम लाए
सीता छुई पैर सबके
वैधव्य वेष सासुएँ देखीं
परम दुखी हुई जानकी
माताओं के चरण लगी
सौभाग्य वर आशीष कही
करने लगीं रुदन सब रानी
आश्रम करुणा सरित बही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सबको गुरु ने शांत किया
परमार्थ ज्ञान की कही कथा
स्वयं पिता मरण का कारण
जान राम हुए दुखित

सब माता संग सीता लछमन
बेकल करने लगे रुदन
निर्जल व्रत उस दिन सब रखे
रघुवर क्रिया कर्म किए

इसी तरह दिवस दो बीते
तब रघुवर बोले गुरु से
नाथ अयोध्या है सूनी
नहीं आप सब यहाँ सुखी

बोले गुरु लोग विरह पीड़ित
रहें साथ तुम्हारे दो दिन
बन घूमेंगे सुख पाएँगे
सुन सब बन विहार चले

देखे तरु पर्वत कानन शोभा
सुंदर पक्षी पशु कलरव मीठा
जल पी झरनों का अमृत सा
पुरवासी जीवन धन्य हुआ

कोल किरात भील बनवासी
देते कंद मूल अहारी
कर प्रणाम दाम न लेते
बड़े भाग्य अपने को कहते

सीता सदैव तत्पर रहतीं
सेवा में तीनों सासों की
कैकई दुःख ग्लानि जलती
देख प्रीति राम लखन की

भरत सोच में डूबे रहते
अभिषेक राम का हो कैसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बुलवाए एक दिन गुरु देखा
बोले सबसे भरी सभा
सत्य प्रतिज्ञ धर्म धुरंधर
राम वेद के हैं रक्षक
उनका आदेश करें हम पालन
तब हो सकता सबका हित
चतुर सभासद आप कहें
रघुवर अभिषेक करें हम कैसे
यह सुन लोग मौन हुए
तब भरत कर जोड़ बोले
हमसे उपाय पूछना गुरु का
दुर्भाग्य नहीं तो क्या है मेरा
जब आशीष आपका स्वामी
रोक सके विधि की भी गति
गुरु बोले राम लखन वैदेही
लौटें बन से अवध पुरी
बदले में भरत और शत्रुघन
दोनों भाई जाओ कानन
भरत कहें सुख बढ़ इससे
जग में कोई नहीं मुझे
चौदह साल नहीं जीवन भर
बनवास करूँ हो जाए सच
महिमा अगम अपार भरत की
विस्तृत सागर सी गुरु ने देखी
मुनि की बुद्धि पार न पाई
अबला समान तट खड़ी रही
उनके हृदय भरत भाए
आकर रघुवर से बोले
करिए उपाय ऐसा रघुनाथ
जिससे मात भरत कल्याण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सबको गुरु ने शांत किया
परमार्थ ज्ञान की कही कथा
स्वयं पिता मरण का कारण
जान राम हुए दुखित

सब माता संग सीता लछमन
बेकल करने लगे रुदन
निर्जल व्रत उस दिन सब रखे
रघुवर क्रिया कर्म किए

इसी तरह दिवस दो बीते
तब रघुवर बोले गुरु से
नाथ अयोध्या है सूनी
नहीं आप सब यहाँ सुखी

बोले गुरु लोग विरह पीड़ित
रहें साथ तुम्हारे दो दिन
बन घूमेंगे सुख पाएँगे
सुन सब बन विहार चले

देखे तरु पर्वत कानन शोभा
सुंदर पक्षी पशु कलरव मीठा
जल पी झरनों का अमृत सा
पुरवासी जीवन धन्य हुआ

कोल किरात भील बनवासी
देते कंद मूल अहारी
कर प्रणाम दाम न लेते
बड़े भाग्य अपने को कहते

सीता सदैव तत्पर रहतीं
सेवा में तीनों सासों की
कैकई दुःख ग्लानि जलती
देख प्रीति राम लखन की

भरत सोच में डूबे रहते
अभिषेक राम का हो कैसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बुलवाए एक दिन गुरु देखा
बोले सबसे भरी सभा
सत्य प्रतिज्ञ धर्म धुरंधर
राम वेद के हैं रक्षक
उनका आदेश करें हम पालन
तब हो सकता सबका हित
चतुर सभासद आप कहें
रघुवर अभिषेक करें हम कैसे
यह सुन लोग मौन हुए
तब भरत कर जोड़ बोले
हमसे उपाय पूछना गुरु का
दुर्भाग्य नहीं तो क्या है मेरा
जब आशीष आपका स्वामी
रोक सके विधि की भी गति
गुरु बोले राम लखन वैदेही
लौटें बन से अवध पुरी
बदले में भरत और शत्रुघन
दोनों भाई जाओ कानन
भरत कहें सुख बढ़ इससे
जग में कोई नहीं मुझे
चौदह साल नहीं जीवन भर
बनवास करूँ हो जाए सच
महिमा अगम अपार भरत की
विस्तृत सागर सी गुरु ने देखी
मुनि की बुद्धि पार न पाई
अबला समान तट खड़ी रही
उनके हृदय भरत भाए
आकर रघुवर से बोले
करिए उपाय ऐसा रघुनाथ
जिससे मात भरत कल्याण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोले रघुवर जो गुरु आज्ञा
उसका पालन धर्म हमारा
गुरु बोले ठीक तुम्हारा कहना
पर मान भरत तुमने न रखा

कहूँ पुकार पुकार सीता पति
मति हुई भरत भक्ति वश मेरी
मेरे जान भरत रुचि रखिए
फिर सबका हित करिए

हँस बोले राम स्नेह गुरु का
पा अहो भाग्य भरत का
सत्य नाथ सौगंध आपकी
नहीं श्रेष्ठ भरत सा भाई

जो भरत कहे हम करें वही
हो सबका हित शंकर साक्षी
मुनि बोले संकोच त्यागकर
अपनी मन की कहो भरत

तन पुलक भरत खड़े सभा
बोले नैन भरे कर जोड़ा
मुनि ने मेरी बात सुनाई
इससे अधिक कहूँ क्या अपनी

जानूँ स्वभाव भैया का अपने
पापी पर भी क्रोध न करते
मुझ पर कृपा विशेष रही
हारा खेल जिताते फिर भी

मेरे नैन प्रेम के भूखे
होते तृप्त न प्रभु दर्शन से
मेरा दुलार ना सहे विधाता
माता करतूत बहाने छीना

मैं सच्चा नीच है माता
करूँ पाप कहूँ यदि ऐसा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब ओर सोच हृदय से हारा
हे नाथ शरण तुम्हारी आया
बन गए राम लखन वैदेही
सुना किंतु फटी न छाती
अब देख रहा आँख से अपनी
संहता दुःख जीवित हूँ फिर भी
शत्रु लगे जिसको रघुनंदन
उस जननी का पुत्र भरत
दुसह दुःख यह छोड़ मुझे
कौन सहेगा धरती पर
कहा राम ने जीवन की गति
आधीन ईश्वर के भाई
कहे वही कैकई को दोषी
गुरु संगति जिनको नहीं मिली
यदि कोई तुमको कुटिल कहे
परलोक लोक नष्ट उसके
पाप प्रपंच दूर सब होंगे
भरत नाम तुम्हारा लेते
भाई व्यर्थ ग्लानि तुम्हारी
वैर प्रेम छुपे न छुपाई
मैं तुमको जानूँ भैया मेरे
क्या करूँ आज दुविधा मन मेरे
नृप त्यागे मुझे प्रण रखे अपने
तन तजे सत्य की रक्षा में
मन दुःखी तोड़ते वचन पिता का
पर उससे अधिक तुम्हारी चिंता
संकोच त्याग मन मुदित कहो
आज करूँ जो रुचे तुम्हें
गुरु मुझे दिए यह आज्ञा
सुन अति प्रसन्न हुई सभा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सुन राम वचन इंद्र डरे
मन ही मन राम शरण गए
देख राम हुए भक्त वश
चरण भरत के रखे हृदय

बोले वृहस्पति डरो न सुरगण
तुमने किया भक्त का सुमिरण
ब्रह्मा सब बात बनाई
भरत राम की है परछाईं

भरत सोच रहे प्रिय भाई
मेरे हित सत्य प्रतिज्ञा टाली
अब कल्याण इसी में मेरा
रखूँ शीश स्वामी की आज्ञा

कर जोड़ कहा हे मेरे स्वामी
मन कल्पित सोच मिटे दुखदायी
माता कुचक्र दुर्भाग्य में डूबा
बचा प्रभु प्रण पाले अपना

अनुकूल रहे प्रभु आप सदा
हो जाए जगत भले उल्टा
प्रसन्न मन करिए हित सबका
करुणा सागर मैं दास तुम्हारा

अभिषेक हेतु साज मैं लाया
चाहे उपयोग करें उसका
लौटें भाभी संग आप लक्ष्मण
मैं जाऊँ बन सहित शत्रुघन

अथवा हम तीनो बन जाएँ
भाभी संग आप अयोध्या लौटें
या फिर मैं संग रहूँ आपके
लखन शत्रुघन नगरी जाएँ

मार दिया मुझे आपने
धर्म नीति न ज्ञान मुझे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं विवेक आर्त्त को होता
सदा उसे स्वार्थ सूझता
दुःख क्षोभ रहित संकोच त्यागिए
हे कुपालु अब आज्ञा करिए
सत्यभाव सौगंध आपकी
शिरोधार्य हम सबको होगी
सुन देवता फूल गिराए
पड़े नागरिक सोच द्वंद में
रघुवर संकोच वश मौन हुए
जनक दूत उसी क्षण पहुँचे
सुखी हुए सुन जनक आगमन
ग्लानि हुई कैकई के मन
दोनों समाज एक दूजे भेंटे
धैर्य त्याग बिलख सब रोते
दुःख से विदेह बने जनक
ऐसा उमड़ा करुणा सागर
गुरु वशिष्ठ धैर्य बँधाए
उस दिन निर्जल व्रत लोग धरे
किए स्नान दिवस दूसरे
वट छाया सब मिल बैठे
कौशिक से रघुवर बोले
नाथ ग्रहण आहार कीजिए
बनवासी मीठे कंदमूल फल
भर - भर ले आए काँवर
पूज पितर देवता गुरु मुनि
पहले भोजन दिए अतिथि
दोनों समाज रहे कामद गिरि
हिलमिल संग राम वैदेही
बन लगे सुखद घर से सुंदर
बीते सुखमय चार दिवस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कौशल्या से मिली सुनयना
नैन अश्रुजल तन सूखा
दोनों प्रेम मूर्ति बनीं
बोली रानी विधि गति टेढ़ी

बोली कौशल्या राम लखन सिय
बन में हैं कुछ होगा शुभ
मुझे भरत की है चिंता
गूढ़ प्रेम राम से उनका

रघुकुल दीपक भरत होंगे
राजा यही कहे मुझसे
रानी अपने पति से कहिए
भरत जाएँ बन लक्ष्मण लौटे

माता साथ गई वैदेही
प्रेम पूर्ण परिवार मिली
बोले पिता गले लगा सिय
पवित्र किए बेटी दोनों कुल

भरत दशा जब जनक सुनी
कहे नैन में भर पानी
नहीं बुद्धि मेरी छू सकती
महिमा छल से भी उनकी

भरत जाएँ बन लक्ष्मण लौटें
सबका होगा कल्याण इसी में
किंतु भूलकर भरत नहीं
आज्ञा टाले रघुवर की

सुबह नहाकर रघुनंदन
बोले गुरु से कर वंदन
नाथ कष्ट बन में रहकर
किसी तरह करिए सबका हित

बोले वशिष्ठ बिना तुम्हारे
घर - बार नर्क समान लगे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्राणों के प्राण सुखों के सुख
हे राम हमारे जीवन - धन तुम

गुरु जनक सलाह किए दोनों
बोले राजा भरत सुनो
आज्ञा जो तुम दोगे
वही कहें हम रघुवर से

बोले भरत हाथ जोड़कर
पिता समान ज्ञान के सागर
गुरु वशिष्ठ कौशिक महान
स्वामी आप तुच्छ मैं सेवक

दास धर्म में न कुछ मेरा
जीवन सर्वस्व हुआ स्वामी का
सत्य धर्म रखिए भाई का
हित करिए सम्मति से सबका

सब लोग निकट रघुवर पहुँचे
गुरु भरत जनक बात कहे बोले
जो आदेश राम तुम दोगे
हम सब उसे शीश धरेंगे

बोले जहाँ गुरु और मिथिलापति
मेरा कहना होगा अनुचित
जो आदेश आपका होगा
शपथ आपकी शीश धरूँगा

सबकी दृष्टि गई भरत पर
खड़े हुए वे हाथ जोड़कर
आवेग रोक सुमिर सरस्वती
बोले स्वामी मैं विद्रोही

तुम और पिता बचन न माना
सहित समाज यहाँ मैं आया
मैंने बहुत करी ढिठाई
पर तुमने सेवा मानी अपनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रेम कृपा मुझ पर बरसाई
बने दोष भी भूषण मेरे
जगत प्रसिद्ध रीति तुम्हारी
वेदों ने भी करी बड़ाई

क्रूर कुटिल दुष्ट कलंकी
कर जोड़े जो शरण तुम्हारी
नहीं दोष उसके चित धरते
उल्टे भक्त शिरमौर बनाते

शरणागत बिगड़ी बात बनाते
दे कुशल क्षेम प्रण अपना रखते
अपनी करनी न स्वप्न समझते
उल्टे हृदय सोच प्रभु करते

प्रण कर भुजा उठा मैं कहता
ऐसा स्वामी नहीं है दूजा
शरणागत की करते रक्षा
हर भाँति किया तुमने हित मेरा

चरणों का दर्शन मैंने पाया
अनुराग मिला भरपूर आपका
अब आज्ञा रूप प्रसाद मुझे दे
कह भरत राम चरण शिर रखे

पकड़ हाथ प्रेम से रघुवर
बैठाए अपने निकट भरत
सबको राम प्रेममय जाना
इंद्र कपट जाल फैलाया

चंचल मन सब लोग हुए
घर कभी याद कभी बन भाए
छोड़ जनक मुनि सचिव भरत
सब सुरमाया के वशीभूत

दुखित लोग देखे रघुवर
बोले स्नेह शील गुण सागर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हे भरत तुम धर्म धुरंधर
मनसा वचन कर्म से निर्मल
विदित तुम्हें रघुकुल रीति
सत्य प्रतिज्ञ पिता कीर्ति
शत्रु मित्र लाज गुरुजन की
सबका अपना धर्म मेरा भी
प्रजा कुटुंब हम पितृहीन के
केवल गुरुकुल जनक सहारे
भरत करो रक्षा रविकुल की
परिवार प्रजा को करो सुखी
सबने मेरी विपदा बाँटी
तुम्हें अवधि भर अति कठिनाई
कुसमय में श्रेष्ठ सहायक भाई
होते हैं यह जग की रीति
दुख मिटे भरत मन तुष्ट हुआ
बोले फल जीवन का पाया
हे स्वामी दो अवलंब मुझे
काटूँ चौदह वर्ष जिससे
गुरु आज्ञा से लाया था
अभिषेक हेतु जल तीर्थ का
उसके लिए प्रभु क्या आज्ञा
जैसा कहे करूँ वैसा
पावन तीर्थ चित्रकूट के
दर्शन की अभिलाषा मन में
कहा राम ने अत्रि मुनि
दिखला देंगे पुण्य भूमि
तीर्थों का जल मुनि आज्ञा से
स्थापित किया सिद्ध स्थल में
भरत कूप वह कहलाया
पावन तीर्थ बना वहाँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पैदल भरत भ्रमण करते
बन कुंड गिरि दर्शन करते
स्नान ध्यान कहीं करते
कहीं बैठ सिय-राम भजे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भरत का अयोध्या लौटना

रहे पाँच दिन भरत घूमते
तब आए भाई से विदा माँगने
सकुच राम खडाऊँ दी
भरत शीश सादर बैठाई

कर जोड़ भरत प्रणाम किए
भर लिए राम अपनी बाँहें
राम नैन अश्रु बहाते
देख जनक गुरु भी रोते

सियाराम की चरण धूल ले
भरत शत्रुघन लखन मिले
राम लखन नृप गुरु वंदन कर
मिले सब माताओं से

सब सास लगी गले सीता
फिर मिली गले पिता-माता
लखन सियाराम रख हृदय
दोनों समाज चले बेसुध

गुह को रघुवर विदा किए
लौटे पर्ण कुटी आए
भरत अयोध्या नगरी पहुँचे
चार दिनों तक जनक रहे

सौंप राज भरत और गुरु
राजा चले गए तिरहुत
भरत सेवा भार माता का
सौंपे अपने छोटे भ्राता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सचिवों को राज-काज समझाए
सब द्विज का आशीर्वाद लिए
आदर से सिंहासन रखी
चरण पादुका रामचंद्र की

नंदी ग्राम बनाई कुटिया
मुनि वस्त्र शीश पर बना जटा
धरती खोद कुशा बिछाए
रहने लगे भरत संयम से

तन मन भोग - विलास त्यागे
भरत अनासक्त हुए
दुबला तन तेजस्वी मुखड़ा
नित राम प्रेम पुष्ट होता

तन पुलकित सिय राम हृदय
अश्रु नैन जीभ करे जप
नित रामचंद्र खडाऊँ पूजे
राज - काज भरत सम्हाले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम ऋषि समागम

रहकर रामचंद्र कानन
किए अनेक चरित पावन
शृंगार किए फूल वैदेही
एक बार बैठाई गोदी
भ्रमित इंद्र का बेटा देखा
पुरुषार्थ राम परखना चाहा
कौवे की जयंत देहधरी
वैदेही पद चोंच गड़ाई
बहा रुधिर रघुवर देखे
धनु चढ़ा सीक मंत्र चलाए
भयभीत सुरलोक वह भागा
पर ब्रह्म वाण करता पीछा
ब्रह्मा शिव इंद्रलोक भगाए
नारद दया दिखाकर भेजे
जयंत राम की शरण गया
चरण पकड़ रघुवर से बोला
त्राहि - त्राहि रघुनाथ गोसाईं
मैं महामूर्ख तुम अतुल प्रतापी
सुन आर्त्तनाद दया दिखाई
छोड़े राम नैन एक फोड़ी
राम चित्रकूट गिरि छोड़े
लखन सिया संग बन-बन घूमे
पहुँचे अत्रि मुनि के आश्रम
महर्षि किए राम पद पूजन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोली! सीता से अनुसूया
नारि धर्म पतिव्रत शिक्षा
आभूषण वस्त्र सीता पहनाए
नित नवीन दिव्य जो बने रहे

विराध दैत्य मार राघव
आए शरभंग ऋषि आश्रम
मुनि राम रूप हृदय रखे
योग क्रिया से देह जलाए

खाए मुनि जो असुरों द्वारा
आस्थि ढेर बन में देखा
राम किए प्रण भुजा उठा
असुर विहीन मैं करूँ धरा

मुनि अगस्त्य के शिष्य सुतीक्ष्ण
सुने राम लखन आगमन
प्रभु मिलन को आतुर दौड़े
अपने तन का ज्ञान भुलाए

दिशा पंथ न मुनि को सूझे
कौन कहाँ मैं जाता भूले
जाएँ आगे घूम फिर लौटें
गाएँ कभी मगन नाचे

तरु ओट राम भक्त देखा
हृदय कमल निज रूप दिखाया
मुनि अचल बने राह चलते
राम प्रेम से भक्त जगाते

हटा रूप राम ने अपना
चतुर्भुज का रूप दिखाया
व्याकुल मुनि की आँखें खुलीं
देखे राम, लखन, वैदेही

गिरे दंड सम राम चरण
कर उठा लगाए राम कंठ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्तुति कर मुनि वर माँगा
सिय लखन सहित प्रभु हृदय बसना
साथ सुतीक्ष्ण रघुकुल नायक
आए ऋषि अगस्त्य आश्रम
मुनि दिवस रात जिनको जपते
दौड़े देख द्वार वे आए
राम - लखन ने चरण छुए
अति प्रेम लगाए मुनि गले
मुनि वृंद अनेक वहाँ विराजे
सब हर्षित राम - लखन देखे
मुनि सादर दो भाई बैठाए
कंदमूल फूल रख पूजे
रघुवर ऋषि से माँगे मंत्र
सुर द्रोही राक्षस के संहारन
मुनि बोले पंचवटी दंडक वन
गोदावरि तीर करें प्रभु पावन
गौतम कठोर श्राप हरिए
गृह पर्ण बना रघुराज रहे
गिद्ध जटायु मिलने आया
दंडक वन फिर रमणीय बना
करे विहार निर्भय पशु-पक्षी
गई त्रास मुनिवृंद सुखी
एक बार लखन ने पूछा
वैराग्य, ज्ञान, माया क्या भइया
वह भक्ति शीघ्र, रीझते जिससे
ईश्वर जीव भेद कहिए
बोले राम मैं मेरा
तू तेरा है माया
इंद्रिय विषय मन विचार
है माया जिसके वश जीव

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विद्या और अविद्या भाई
माया यह दो भेद वाली
दुखी जगत में एक ढकेले
दूजी प्रभु रत सृष्टि रचे

अभिमान परे ज्ञान वह भ्राता
सबमें ब्रह्म दिखा जो देता
जानो वही परम वैरागी
सिद्धि, तीन गुण तृण सम त्यागी

लछमन जीव वही कहावे
ईश्वर माया निज रूप न जाने
बंधन मोक्ष प्रेरक माया का
सबसे परे ईश्वर कहलाता

वैराग धर्म से ज्ञान योग से
मिलता मोक्ष ज्ञान प्राप्ति से
जिससे द्रवित शीघ्र मैं भाई
मेरी भक्ति परम सुखदाई

वह भक्ति स्वतंत्र अबलम्बहीन
विज्ञान - ज्ञान उसके अधीन
मुझको भक्ति सुहाए मेरी
करे कृपा संत तब मिलती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राक्षसों से युद्ध

एक बार रावण बहिनी
शूर्पणखा आई पंचवटी
दो कुँवर देख हुई कामातुर
धर अनूप रूप पास गई रघुवर

इठलाती बल खाती बोली
तुम सा पुरुष न मुझ सम नारी
विधि बनाए बात निराली
अब तक इस कारण रही कुँवारी

सिया देख रघुवर बोले
कुँवारा मेरा भाई छोटा
कहा लखन पराधीन मैं
वे समर्थ कोशलपुर राजा

गई पुनः राम के पास
फिर से भेजा पास लखन
मना किए तब उसे लक्ष्मण
पहुँची राम पास हो क्रुद्ध

दिखलाया अपना रूप भयंकर
काटे नाक - कान लक्ष्मन
खर - दूषन पास गई रोती
सब बात बता धिक्कारा भाई

खरदूषण तैयार किए सेना
चले लिए आगे शूपर्णखा
ले अस्त्र - शस्त्र असुर भयंकर
मारो पकड़ो कहते दौड़े

सावधान कर- लक्ष्मण संग
सीता भेजी गिरि कंदर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्वयं धनुष - बाण लिए
रघुवर सेना सम्मुख आए
देख राम मुग्ध खर-दूषण
बोले वध करूँ न राजकुँवर
दे यदि नारि छिपाई हमको
हँस कहे राम हे असुरो
क्षत्री हम शिकार बन आए
तुमसे दुष्ट जानवर खोजे
रक्षा करते साधु - संत सुर
शक्ति नहीं तो लौटो घर
खर - दूषण को क्रोध हुआ
कटार परशु ले दौड़ी सेना
राम धनुष टंकार किए
असुर व्याकुल बधिर बने
राक्षस सावधान हो दौड़े
रघुवर पर अस्त्र बरसाए
तिल सम उनके अस्त्र काटे
फिर भयंकर बाण राम छोड़े
लगी भागने राक्षस सेना
खर - दूषण त्रिशिरा ललकारा
रिपु बाहू शीश कटते
चिंघाड़ मार धड़ भू गिरते
चौदह हजार थी राक्षस सेना
राम युद्ध अकेले करते
एक दूजे को राम समझते
आपस में काट असुर मरते
विषम शत्रु रघुनंदन जीते
नभ से सुमन देव गिराए
ऋषि मुनि दुःख दूर हुए
सीता - लखन चरण छुए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सीता हरण

खर - दूषण का वध देखा
रावण पास गई शूर्पणखा
बहिन कान - नाक बिन देखी
पूछा दुर्गति कौन की तेरी

शूर्पणखा सब कथा सुनाई
खर-दूषण त्रिशिरा विनाश कही
सुन रावण अति क्रोध चला
सागर तीर मारीच जहाँ

जब गए लखन फूल लेने
रघुवर वैदेही ही से बोले
कुछ दिन सीते अग्नि रहो
तब तक मैं मारूँ दुष्टों को

समा गई अग्नि में सीता
रख ली प्रभु ने उनकी छाया
शील रूप स्वभाव वही
लछमन भी जाने भेद नहीं

रावण मरीच को शीश झुकाया
बोला कपट मृग बन जाना
छल से राम दूर ले जाना
इधर चुरा लूँ मैं सीता

बोला मारीच राम जगत पति
कर बैर भलाई नहीं किसी की
गाली देकर रावण बोला
बता कौन वीर मुझ जैसा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दोनों ओर मौत वह देखा
उचित लगा रघुवर शर खाना
स्वर्ण हिरण मारीच बना
सुंदर मणि जड़ी बीच-बीच

कंचन मृग देख जानकी बोली
प्रिय ला दो इसका चर्म अभी
तीर धनु रख राम कहे
लक्ष्मण असुर रूप बन घूमे

सिय रखवाली करना उनसे
कह दौड़ पड़े राम मृग पीछे
छुपता कभी प्रगट मृग होता
रघुवर वन में दूर ले गया

कठोर वाण राम चलाए
भूमि गिरा 'हा लक्ष्मण' कहते
असुर रूप दिखलाया असली
मार उसे लौटे रघुपति

आर्त्तनाद सुन बोली सीता
लखन राम पर संकट आया
बोले संभव यह न भाभी
कटु बचन तब बोली वैदेही

खींच एक रेखा आश्रम
बन की ओर गए लछमन
साधु वेष धर रावण आया
भय प्रीति दिखा डराई सीता

पार कर सका न रेखा
तब वह धूर्त सिया कर पकड़ा
रथ पर सीता बैठाई जबरन
आकाश मार्ग चला रावण

नभ कण - कण में गूँजी
घायल पक्षी-सी चीख सिया की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हा राम मुझे किस कारण त्यागा
हा लक्ष्मण नहीं दोष तुम्हारा
सीता की सुन व्याकुल वाणी
जड़ चेतन जीव हुए दुखी
रघुकुल नारि जटायु पहचाना
बोला डर मत पुत्री सीता
नाश करूँगा इस राक्षस का
कहते क्रोध भरे दौड़ा
बाल पकड़ भूमि गिराया
चोंच मार विदीर्ण किया
रावण अति क्रोध खिसियाआ
चंद्रहास कृपाण निकाला
काटे खग पंख गिरा भूमि
ले गया रावण वैदेही
गिरि बैठे बंदर सिय देखी
अपने भूषण वस्त्र गिराई
भय प्रीति दिखा जब हारा रावण
तब सीता रखी अशोक वन
आते देख राम - लक्ष्मण
चिंतित वैदेही के कारण
आश्रम देखे दोनों भाई
कहीं न सीता की सुधि पाई
बन खग मृग तरु रघुवर पूछे
क्या तुम सिय मृगनयनी देखे
तब घायल गिरा जटायु देखा
शिर सहला राम हरी पीड़ा
कहा गिद्ध ने सिय को रघुवर
ले गया दशानन दक्षिण ओर
इतना कह प्राण तजा
किए राम दाह क्रिया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम-शबरी के आश्रम

राम लक्ष्मण चले खोजते
जनक नंदिनी पर्वत कानन
कंबंध राक्षस राह मिला
राम तीर से उसको मारा

दोनों शबरी आश्रम पहुँचे
बाट देख रही वह कब से
मतंग ऋषि कहे थे उससे
घर आएँ राम - लखन तेरे

देख द्वार चरणों से लिपटी
दे आसन चरण प्रेम जल धोई
मीठे बेर सामने रखी
बड़े स्वाद खाए रघुराई

कर जोड़ खड़ी हो शबरी बोली
स्तुति कैसे करूँ तुम्हारी
नाथ नीच जाति मैं नारी
उस पर मति मंद गँवारी

कहे राम सुन री वनिता
तेरा मेरा भक्ति का नाता
राघव नवधा भक्ति बताई
अति प्रेमपूर्ण सुनी शबरी

पहली भक्ति संत जन संगति
मेरी कथा प्रसंग रति दूजी
तीसरि भक्ति गुरुपद सेवा
चौथी गुणगान कीर्तन मेरा

मंत्र जाप विश्वास हृदय
पंच भक्ति दिखाए वेद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

षष्ठी दंभ इंद्रिय मन वैरागी
धर्म विनय शील व्रतधारी
सप्तम जगत राम मय देखा
मुझसे मेरा भक्त हो प्यारा
अष्टम संतोष लाभ यथा
कभी दोष न दूजा पाया
नवम हर्ष विषाद हीन मन
प्रभु आश्रय एक सरल चित
तब पूछे रघुवर सुन शबरी
कहाँ मिले मुझे जानकी ?
बोली पम्पासर पर होगी
प्रभु सुग्रीव से भेंट आपकी
रघुवर पद मन शबरी रखी
योगक्रिया से देह जलाई
गए राम पम्पा सरोवर
बन शोभा उनका चित्त चुराए
सुर सिद्ध मुनि वहाँ के आए
स्तुति कर अपने धाम गए
नारद विरह युक्त हरि देखे
शोक हुआ सोच मन अपने
मेरा शाप शीश धर भगवन
कष्ट अनेक झेलते बन-बन
निकट गए राम मुस्काए
विनीत जोड़ कर नारद बोले
वरदान एक मैं माँगूँ स्वामी
यद्यपि तुम हरि अंतर्यामी
जग में नाम अनंत तुम्हारे
राम नाम हो प्यारा सबसे
एवमस्तु रघुवर बोले
शीश झुका महर्षि चले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम-सुग्रीव सौहार्द

लछमन राम चले बन आगे
निकट रिष्यमूक गिरि पहुँचे
सुग्रीव सचिव संग वहाँ
भाई बालि के डर रहता

देख धनुर्धारी दो कानन
भेजा पता लगाने हनुमत
विप्र रूप गए पवन सुत
बोले कौन आप घूमें बन

राम - लखन दशरथ के बेटे
कहना मान पिता हम आए
हरी दैत्य ने मेरी पत्नी
करते खोज यहाँ हम उसकी

हमने अपना चरित सुनाया
विप्र सुनाओ परिचय अपना
हनुमत इष्टदेव पहचाने
चरण पड़े मुख बोल न आवे

रुचिर वेष की रचना देखी
अपने प्रभु की स्तुति गाई
तन दिखला चरण पड़े कपि
उठा गले लगाए रघुपति

बोले नाथ कपीश गिरि रहते
वह दीन उसको अभय दीजिए
उससे नाथ करिए मैत्री
वे खोज कराएँगे वैदेही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दोनों भ्राता पीठ उठाए
कपि सुग्रीव पास ले आए
सुग्रीव राम मित्रता कराई
साक्षी अग्नि प्रीति गाँठ दी

कपि बोले क्रंदन करती नारी
आकाश मार्ग जाते थी देखी
ले राम नाम गिराए गहने
देख राम - लखन पहचाने

बोले सुग्रीव प्रयत्न करूँगा
अवश्य आप पाएँगे सीता
पूछे रघुवर सखा बताओ
छिपकर क्यों वन में रहते हो

बोले सुग्रीव बालि नाम का
भाई मेरा शत्रु बना
स्त्री, परिवार, धन मेरा छीना
घर से मुझको मार निकाला

रघुपति बोले मारूँगा मैं
दुष्ट बालि एक बाण से
बोले सुग्रीव सुनो रघुवीर
बालि महाभट शूरवीर

दुंदुभी अस्थि तरुताल दिखाए
राघव उसे पैर हटाए
देख अमित बल रामचंद्र का
कपिराज के मन हुआ भरोसा

दे साहस उसको रघुवर भेजे
गरजा वह जा पास बालि के
घूँसा बालि उसे मारा
पास राम के वापस आया

सिर स्पर्श गले में माला
रघुवर बल दे फिर से भेजा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्वयं वृक्ष ओट रघुवर
दोनों भाई का युद्ध देखते
देख हारते हुए सखा
छाती में वाण बालि के मारा
गिरा भूमि तुरत उठ बैठा
धनुधारी राम देख बोला
साईं धर्म हेतु जग आए
छिप कर मुझ पर तीर चलाए
हे नाथ मुझे तुमने मारा
मैं बैरी क्यों सुग्रीव प्यारा
बोले राम बेटी के जैसी
अनुज वधू तुने जो रखी
अंगद कर सौंप हाथ रघुपति
तजे प्राण वर माँगा बालि
तारा को रघुपति समझाए
लक्ष्मण को किष्किंधा भेजे
बनाया सुग्रीव को राजा
अंगद को युवराज बनाया
रहे राम प्रवर्षण गिरि
बीती वर्षा आ गई शरद ऋतु
कपिराज भोग-विलास भूले प्रण
याद दिलाई उनको हनुमत
बानर लाने दूत दौड़ाए
लखन क्रुद्ध नगरी में आए
कर जोड़ क्षमा लखन से माँगे
सुग्रीव राम के चरण गिरे
विविध रंग के भालू बंदर
राम चरण में शीश झुकाए
बोले सुग्रीव दिशा चारों
जनक नंदिनी पता लगाओ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कपि वीर चतुर धैर्यवान
जामवंत, अंगद, हनुमान
खोजो दक्षिण दिशा सिया
कार्य करो रघुनंदन का

सबने राम चरण छुए
मारुत सुत आए पीछे
रघुवर सिर स्पर्श किए
हाथ मुद्रिका देकर बोले

हनुमत विरह बल मेरा कहना
सीता मिल शीघ्र तुम आना
सफल जन्म पवन सुत जाना
कपि खोज चले वन गिरि गुफा

बानर ढूँढ़ रहे घन कानन
व्याकुल बने प्यास के कारण
देखे मारुति चढ़ि गिरि पर
गुफा एक धरती के अंदर

प्रसन्न हुए कपि उसमें जाकर
सुंदर उपवन देख सरोवर
तपमूर्ति नारि बैठी मंदिर
शीश झुकाए उसको बानर

कपि उसको कथा सुनाए
बोली नहा फल खाओ मीठे
जनक नंदिनी को पाओगे
आँख मूँद कर बाहर जाओ

मूँद आँख बाहर जब आए
सागर तट अपने को पाए
देखी नहीं वहाँ सीता
बानर बैठे घोर निराशा

संपाती गिद्ध वहाँ रहता
बोला तुमको मैं खाऊँगा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोले अंगद धन्य जटायु
रघुपति कार्य बिताई आयु
वृद्ध गिद्ध सुन भ्राता नाम
दे अभय वचन पूछा वृतांत
अंगद ने पूरी कथा सुनाई
दे तिलांजली बोला संपाती
हम दोनों भाई एक बार
पहुँचे उड़कर सूर्य के पास
लौट गया जटायु पहले
किंतु पंख जले मेरे
दिखलाए चंद्रमा मुनि दया
अभिमान देह छुड़ाया मेरा
बोले त्रेता युग में होगा
मनुज रूप अवतार हरि का
होगी हरण उनकी पत्नी
हरि दूत मिलेंगे तुमसे आकर
पता कहेगा तू वैदेही
तब फिर तेरे पंख जमेंगे
गिरि त्रिकूट के ऊपर लंका
रावण जहाँ राज है करता
अशोक वन वैदेही बैठी
देखूँ गिद्ध दृष्टि मेरी
वीर चतुर तुममें जो होगा
शत योजन सागर यह लाँघेगा
जिसे भरोसा राम कृपा का
कार्य करेगा वही राम का
सबने देखा संपाती के
नूतन पंखों से देह भरी
सब बानर अपने तन-मन में
अपना बल अनुमान लगाते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोले जामवंत मैं बूढ़ा
अंगद कहे पार जा सकता
संशय कुछ लौटती बेला
तब बोले जामवंत, पवनपुत्र
विवेक बुद्धि विज्ञान विशारद
पवन समान शक्ति तुम्हारी
जग के कौन कार्य कठिन
कर सकते जो पूर्ण नहीं
मारुत सुत अवतार तुम्हारा
राम काज के लिए हुआ
सुन कपि हुए मूधरा कारा
तन तेज रंग स्वर्ण सा चमका
करते बार - बार गर्जना
लाघूँ मैं यह सागर खारा
रक्षक सहित रावण मारूँ
गिरि त्रिकूट उखाड़ मैं लाऊँ
जामवंत बतलाओ इतना
उचित मुझे अब क्या करना
बोले जामवंत तुम जल्दी
जाकर सुधि लाओ वैदेही
सुंदर वचन जामवंत के
पवनपुत्र के मन अति भाए
बोले तुम सब बाट जोहना
कंद मूल फल खा दुख सहना
लौटूँ देख नैन वैदेही
सब सुख पाए कार्य यह रघुपति
कह ऐसा शीश झुकाए हनुमत
हर्षित किए राम का सुमिरन

•

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हनुमान शौर्य

राम नाम हृदय कर धारण
चढ़े कूद कपि सुंदर भूधर
उछले बड़े वेग पवन सुत
धँसा धरातल क्षण वह पर्वत

अमोध वाण राम का जाता
हनुमान चले वैसे लंका
श्रम हारी गिरि मैनाक खड़ा
पर विक्रम मन विश्राम कहाँ

सुर देखे हनुमत नभ जाते
बल बुद्धि परीक्षा सुरसा भेजे
सुर भोजन दिए आज घर बैठे
सुन पवन कुमार वचन बोले

राम कार्य कर जब मैं लौटूँ
सीता खबर राम सुनाऊँ
तब तेरे मुख में जाऊँगा
अभी मुझे जाने दे माता

सुरसा किसी भाँति न मानी
बोले कपि मुझको खा माई
योजन भर वह मुँह फैलाई
कपि ने दुगुनी देह बनाई

सोलह योजन फैलाई सुरसा
कपि रूप बत्तीस कियां
जितना मुँह सुरसा फैलाती
दुगुना रूप दिखलाए कपि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शत योजन मुख फैलाया
कपि रूप किया अति छोटा
मुँह में गए बाहर फिर आए
माँगी विदा शीश झुकाए
बोली बल बुद्धि तुम्हारा जाना
जिस हेतु मुझे देवों ने भेजा
हे वानर रघुवर कार्य करोगे
सुन हर्षित कपि चले आगे
राक्षसी एक सिंधु में रहती
छल कर जीव गगन के खाती
जीव जंतु जो नभ के चारी
जल देख पकड़ लेती परछाईं
पकड़ छाँह वे उड़ न पाई
इस तरह उन्हें मारकर खाती
वही छल किया हनुमत् से
कपि उसे मार पार आ पहुँचे
गिरि पर चढ़ देखी लंका
विशाल दुर्ग अति सुदृढ़ बना
चारों ओर जलधि लहराता
स्वर्ण दिवार चमकता घेरा
गली हाट पुर चारु बना
हाथी, घोड़े, रथ, पैदल सेना
बन उपवन सर कूप मनोहर
घूमे बलशाली पुर में रक्षक
मच्छर सा रूप लिए छोटा
हनुमान चले निशि में लंका
लंकिनी नाम एक निश्चरी
लंका के द्वार पर रहती
बोली सिर बिना झुकाए जाता
लंका चोर आहार है मेरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

घूँसा मारे बजरंग बली
गिरी खून की कर उल्टी
बोली उठ हाथ जोड़ लंकिनी
पहचान मुझे ब्रह्मा ने दी
जब कपि मार विकल तू होगी
असुरों का नाश जान तभी
बानर मैंने किसी पुण्य से
राम दूत नैन से देखे
जो है रामकृपा का भाजन
बनता सागर गोपद समान
उसके शत्रु करे मित्रता
विष बदले अमृत बनता
अग्नि में आए शीतलता
सुमेर धूल समान गिरता
घरे रूप पवन सुत छोटा
नगर भवन में जाकर देखा
रावण के भवनों में ढूँढ़ा
कहीं न वैदेही को पाया
एक महल में तुलसी विरवे
धनुष तीर अंकित द्वारे
हनुमान वहाँ मिले विभीषण
जो सीता का पता बताए
पहुँचे हनुमान अशोक वाटिका
देखी कृश तन दुखी सीता
बैठी राम चरण चित लाए
तरु पल्लव हनुमान छिपे
उस समय वहाँ रावण आया
साम दाम भय भेद दिखाया
बोला देखो मुझे सुंदरी
कर दूँगा महारानियाँ चेरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तिनका ओट करी वैदेही
मन रख प्रियतम की छबि बोली
राम बाण तू नहीं जानता
दुष्ट मुझे सूने हर लाया
निर्लज्ज, धूर्त, नीच रे पापी
जुगनू सी तुच्छ ज्योति तेरी
रघुवर प्रताप दिनकर तेजस्वी
जिसे देख कमलिनी खिलती
अपमान शब्द सुन रावण बोला
सीता शीश काटूँ मैं तेरा
बोली या तो भुजा राम की
या चंद्रहास गले डालूँगी
रावण पुनः मारने दौड़ा
समझाई उसको मय तनया
बोला सब बुलवा राक्षसी
जाकर भयभीत करो वैदेही
एक मास का देकर अवसर
चला गया धमकी देकर
रूप भयंकर धरे पिशाचिनी
तरह तरह से सिया डरातीं
बोली राम भक्त त्रिजटा
सिय से साधो हित अपना
देखा स्वप्न रात में ऐसा
बंदर ने लंका नगर जलाया
मरी पड़ी है रावण सेना
नग्न गदहे पर यमपुर जाता
सिर कटे कटी हैं बीस भुजा
लंका राज्य विभीषण पाया
पड़ रही रामचंद्र दुहाई
तब सीता रघुनाथ बुलाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सच होगा कुछ दिन में सपना
सब राक्षसी गिरीं चरन सीता
बोली सीता त्रिजटा माता
तन तजने को चिता सजा
राम तेज कह त्रिजटा बोली
अग्नि मिले न रात में पुत्री
कहती सीता विरह व्यथा में
गगन बने तारे अंगारे
चाँद उगल रहा अग्नि
फिर भी अंगार गिरा रहा नहीं
अशोक नाम तू सच कर अपना
कर दूर शोक अंगार गिरा
उसी समय कपि डाले मुँदरी
अंगार जान सिया उठाई
राम नाम से अंकित मुँदरी
पिय की चकित सिया पहचानी
हनुमान लगे राम गुण गाने
सुन सीता के दुख भागे
बोली सम्मुख आओ भाई
श्रवणामृत सी कथा सुनाई
तब हनुमान सिय निकट गए
फेरी मुख सीता विस्मय से
कपि बोले रामदूत मैं माता
करुणानिधान शपथ मैं लेता
स्वामी की दह मुँदरी लाया
राम चिह्न रूप दिया
विश्वास हुआ सुन कपि की वाणी
प्रभु सेवक जान प्रीति हुई
तन पुलक नैन अश्रु भर बोली
कपि कहो कुशलता दोनों भाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कोमल चित कृपाल रघुराई
काहे घरे हृदय निठुराई
किस कारण नाथ मुझे त्यागे
क्या मुझे याद रघुनाथ करे ?

राम-लखन की कुशल सुनाई
तब कपि कहे विरह रघुराई
जग के सारे सुख हे सीते
तेरे वियोग में पीड़ा देते

तप्त तेल बरखा की बूँदें
त्रिविध समीर सर्पिणी साँसें
मन की बात कहूँ मैं किससे
वह तो सदा पास है तेरे

सुन रघुपति संदेश जानकी
मगन प्रेम तन सुधि-बिसराई
बोले कपि मिलती खबर आपकी
बिलंब न कभी करते स्वामी

अब धीरज रखिए माता
प्रभु पहुँचेगे ले कपि सेना
निश्चर सारे विध्वंस करेंगे
साथ आपको ले जाएँगे

बोली सीता बलवान राक्षस
तुम सम होंगे छोटे बानर
मेरे हृदय परम संदेह
सुन कपि प्रगट किए निज देह

कनक पर्वताकार तन देखा
वैदेही मन हुआ भरोसा
राम शौर्य हनुमान बखाना
फिर के रूप लिया छोटा

सीता दी आशीष कपि को
अजर अमर हे पुत्र रहो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बलनिधि ज्ञान शील गुणसागर
कृपा करें रघुनायक तुम पर

छुए चरण कपि बोले माता
आशीष पा मैं धन्य हुआ
फल लगे वृक्ष हूँ मैं भूखा
डर नहीं मुझे रखवारे योधा

देख वीर चतुर कपि को
बोली सुत मीठे फल खाओ
शीश झुका उपवन में पहुँचे
फल खाकर तरु लगे तोड़ने

योद्धा रक्षक मार गिराए
बोले जा कुछ रावण से
नाथ एक आया कपि भारी
जिसने अशोक वाटिका उजारी

फल खाता तरु तोड़ गिराता
रक्षक मसल मसल मारता
बलवान वीर रावण ने भेजे
हनुमान सब मार गिराए

अक्षय कुमार रावण का बेटा
भारी सेना लेकर आया
तरु उखाड़ उसे ललकारे
मार जोर कपि दहाड़े

कुछ मारे मसले धूल गिराए
कुछ जा बोले वीर है बानर
सुन पुत्र निधन रावण बिगड़ा
बलवीर मेघनाद सुत भेजा

बोला बाँध उसे ले आना
देखें कहाँ का बानर आया
चला इंद्रजित अतुल योद्धा
भाई मरण क्रोध उपजा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कपि देखा वीरभट आते
कट कटा बड़े जोर से गरजे
उखाड़ एक तरु उस पर फेंका
बेचारे का रथ टूटा
मसल रख दिए योधा सारे
तब कपि मेघनाद भिड़े
घूँसा मार चढ़े तरु ऊपर
मूर्च्छित हुआ इंद्रजित क्षणभर
उठ मेघनाद फैलाई माया
अंजनिसुत से वह हारा
तब उसने ब्रह्मास्त्र चलाया
कपि शीश झुका स्वीकार किया
मूर्च्छित हनुमान भूमि गिरे
दब मरे अनेक असुर तन से
बाँध नाग पाश असुर
ले चले सभा दैत्यराज
कपि देख रावण खूब हँसा
सोच निधन सुत क्रुद्ध हुआ
बोला तू कौन नीच बानर
क्यों तूने नष्ट किया अशोक बन
क्या सुना नहीं तूने यश मेरा
मूर्ख निडर तू बना हुआ
किस अपराध निशाचर मारे
क्या तुझे नहीं प्राण हैं प्यारे
किसका बल पा तू कूद रहा
बोले कपि पा बल उसका
जिस बल माया ब्रह्मांड रचाती
शेष नाग शिर रखते धरती
सृजन विधाता विष्णु पालते
शिव जग का संहार करे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अनेक देह धरती पर आते
तुझसे दुष्ट सीख सिखाते
शिवधनुष तोड़ तेरा मद चूरा
मारे बालि खर-दूषण-त्रिशिरा
लेश मात्र बल पा जिसका
संपूर्ण विश्व तूने जीता
रावण मैं दूत राम का
जिनकी पत्नी तू हर लाया
बहुत कीर्ति सुनी तेरी
सहसबाहु से करी लड़ाई
कर युद्ध बालि से तू हारा
सुन रावण हँस बात टाला
भूख लगी फल मैंने खाए
मुझे निशाचर लगे मारने
मैंने जब उनको मारा
मुझे तुम्हारे सुत ने बाँधा
विनती करूँ कर जोड़ रावण
नर रूप लिए राम नारायण
तज अभिमान राम शरण जा
मेरे कहे जानकी देना
अपराध तुम्हारे क्षमा करेंगे
फिर अचल राज्य करना लंका में
हँस बोला रावण अभिमानी
दुष्ट मृत्यु आई है तेरी
विक्रम बोले उल्टा होगा
रावण बोला वध करो कपि का
दौड़े सब राक्षस वध करने
शीश झुका विभीषण बोले
नीति नहीं दूत वध कहती
अन्य दंड इसे दें स्वामी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोला रावण पट तेल डुबो
पूँछ बाँधकर आग लगा दो
पूँछ हीन बानर जब जाए
अपना स्वामी संग ले आए
सुन कपि मन ही मन मुस्काए
काम बनाई आज शारदे
रहा न नगर तेल - घी - कपड़ा
बढ़ी पूँछ कपि ने की लीला
असुर ढोल बजा दे ताली
घुमा नगर में पूँछ जला दी
आग देख हुए कपि छोटे
कनक अटारी पर जा कूदे
उस पल मरुत उन्चास चली
कपि गरजे देह विशाल करी
दौड़े एक भवन से दूजे
कूद - कूद कर आग लगावे
उठीं भयंकर अग्नि की लपटें
हाय - हाय निशाचर कहते
पल में लंका नगर जलाया
विभीषण का घर एक बचा
सागर में कूद आग बुझाई
हो लघु गए निकट जानकी
कर जोड़ चिह्न कुछ माँगी
सीता अपनी चूड़ामणि दी
बोलीं प्रणाम राम से कहना
जयंत कथा याद दिलाना
नहीं एक माह प्रभु आएँ
जीवित नहीं मुझे पाएँ
दे धीरज कपि शीश झुकाए
लाँघ सिंधु पार इस आए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

किलकारी मार हर्ष जनाए
बानर सब नव जीवन पाए
मुख प्रसन्न तेज तन देखा
राम काज हुआ था पूरा
बातें करते सब उपवन पहुँचे
अंगद सम्मत मीठे फल खाए
रखवाले देख सुग्रीव से बोले
बन उजाड़ रहे युवराज
सुन कपीश हर्ष उठे
कर आए वानर राम काज
यदि सीता सुधि न पाते
उपवन के फल छू न सकते
बानर सुग्रीव के चरण हुए
बोले मारुत सुत काम किए
कपिवर बानर कंठ लगाए
सब मिल रघुवर पास गए
राम - लखन के चरण लगे
पूछे कुशल राम मुस्काए
चतुर जामवंत सुनाई
पवन पुत्र की सुंदर करनी
नाथ जिस पर कृपा आपकी
त्रिलोक कीर्ति फैलती उसकी
अति आदर प्रेम निहारे रघुवर
उठ हरषित गले लगाए हनुमत
पूछें कैसी है जनक नंदिनी
कैसे प्राणों की रक्षा करती
बोले हनुमान नाम आपका
दिन-रात प्राण पर पहरा देता
ध्यान कपाट, नैन ताले
प्रभु किस बाट प्राण जाएँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कपि दिए सीता चूड़ामणि
ले रघुनाथ हृदय लगाई
नाथ लिए नैन में पानी
बचन कही जनक दुलारी
लखन सहित पद पड़ी तुम्हारे
करुणा सिंधु दीन दुख हारे
बचन कर्म मन पद अनुरागी
किस कारण नाथ मुझे त्यागी
अवगुण एक नाथ मैं मानी
बिछुड़ प्राण निकले न पापी
सो नाथ अपराध नैन का
तन त्यागे प्राण करे बाधा
विरह अग्नि पवन साँसें
तन तूल पलक भर में जल जाए
दरशन हित नैन सींचते पानी
देह न जले विरह आगी
सीता पल-पल युग सम बीते
रघुनाथ भुजा बल शत्रु जीतिए
चलें शीघ्र लाएँ वैदेही
प्रभु सीता की विपति घनेरी
बोले राम तुझ सम उपकारी
जग में देव न मुनि तन धारी
प्रत्युपकार करूँ क्या तेरा
मन तेरे सम्मुख नहीं ठहरता
नहीं उऋण तुमसे हो सकता
मन अपने मैंने यह देखा
कह राम पुलक तन अश्रु भरे
कपि अकुलाए प्रभु चरण गिरे
प्रभु बार - बार उठाना चाहे
कपि प्रेम मगन चरण न छोड़े

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहे दास की रक्षा करिए
प्रभु कर धरें शीश सहलाए
अटल भक्ति प्रभु पद कपि माँगी
एवमस्तु कहें रघुराई
प्रभु उठा लगा कपि बोले
हनुमान जलाई लंका कैसे
अभिमान हीन पवन सुत बोले
मैं बानर जाऊँ डाल-डाल पर
प्रभु बल पा मैं सागर लाँघा
बन उजाड़ जलाई लंका
तब रघुपति सुग्रीव बुलाए
बोले सेना प्रस्थान कराएँ
अतुलित बल वाले झुंड - झुंड
बानर भालू विविध रंग
राम - लखन पद शीश झुकाते
कृपा रूप बल हरि का पाते
उछल उछलकर चले गरजते
सेना संग राम लखन चले
नख शस्त्र गिरि पत्थर धारी
तरु पर्वत हाथ लिए बनचारी
सिंहनाद सम गर्जन करते
भू तथा गगन में दौड़ चले
लगी डोलने डगमग पृथ्वी
चिंघाड़े दशों दिशा के हाथी
सागर चंचल पर्वत काँपे
दुख दूर हुए सुरनर मुनि के
पहुँचे राम सिंधु के तीर
फल खाते जहाँ तहाँ कपि रीछ
इधर सुनी मंदोदरि रानी
अति व्याकुल रावण से बोली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जिनके वीर दूत की करनी
काँपे अब तक सोच निश्चरी
उनका आना कौन भलाई
प्रियतम लौटाओ वैदेही

श्री हरि से जो बैर ठानता
शंकर भला करें न उसका
हँस रानी को कंठ लगाया
चला गया दसशीश सभा

दूतों ने खबर करी हे स्वामी
रघुवर सेना तट पर आई
पूछा सचिवों से रावण
बोले हमें न काल का डर

शीश झुका विभीषण बोले
भैया सीता वापस करिए
भुवनेश्वर राम मनुज तन धारी
शरण जाइए भ्राता प्रभु की

मुनि पुलस्त्य मुझसे बोले
बात कही आपसे मैंने
माल्यवंत मंत्री बोला
उचित विभीषण का कहना

सुन रावण अति कुद्ध हुआ
मंत्री राज्य सभा निकाला
हाथ जोड़ विभीषण बोला
बसी कुमति आपके भ्राता

रखिए नाथ दुलार मेरा
लौटाएँ रामचंद्र को सीता
दशशीश कुपित बोला दे गाली
रे मूर्ख मौत शिर नाच रही

खिला पिलाकर मैंने पाला
रिपु का पक्ष सदा तू लेता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिल जाकर तू तपसी जन
रावण मारा चरण विभीषण
ले मंत्री अपने नभ जा बोला
दोष न मेरा कोई देना
मैं जाता अब शरण राम की
रावण सभा ग्रास काल की
राम पास चले विभीषण
उठे हृदय अनेक मनोरथ
देखूँ चरण कमल रघुवीरा
जिनकी धूल तरी अहिल्या
मन मानस शिव हंस विराजा
दंडक वन फिर से किया सुहाना
दौड़े जो कपट हिरण पीछे
सीता जिन्हें सँजोई मन में
विभीषण आते बानर देखे
उनको रख रघुवर से बोले
प्रभु बोले आदर से लाना
प्रण मेरा शरणागत रक्षा
किए विभीषण बानर आगे
दो भ्राता अति सुंदर देखे
नैनाभिराम आनंद दाता
छविधाम स्याम देख कर जोड़ा
नाथ दशानन का मैं भ्राता
सुन बल सुयश तुम्हारा आया
शरण सुखद भंजन भव पीड़ा
रक्षा करो नाथ रघुवीरा
देख विभीषण करे दंडवत
उठे कंठ लगाए रघुवर
बोले था पहले लोभ राज्य का
चरण देख प्रभु दूर हुआ!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अब स्वामी अपनी भक्ति दीजिए
रघुवर एवमस्तु बोले
सिंधु नीर से टीका कर
लंका राज्य दिया विभीषण

रघुवर हँस बोले कहो सखा
उस पार जाएगी कैसे सेना
बोले गुरु आपके सागर
पहले करें प्रार्थना जाकर

कहे लखन यह उचित नहीं
कर क्रोध सिंधु सुखाओ भाई
बोले रघुवर धीरज रखना
जो कहते मैं वही करूँगा

सागर समीप गए रघुवीर
सिर झुका बिछा कुश बैठे तीर
इधर दूत रावण के पहुँचे
भेद राम सेना का लेते

पकड़े बानर लखन छुड़ाए
देकर पत्र दूत से बोले
रावण कर देना यह पाती
गुण गाते दूत गए नगरी

रावण देख खूब हँसा
बोला बहुत चकित तू लगता
खबर बता विभीषण की
मृत्यु निकट आई जिसकी

कह बंदर भालू सेना हाल
जिन्हें खींच लाया है काल
दो तपसी की कह बातें
क्या मेरा यश सुन भाग गए

बोला शुक नाथ श्री रामचंद्र
लंका राज्य दिए विभीषण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रभु पूछे हरि सेना हाल
कपि भालू भयंकर अति विशाल
नगर जलाया जो सुत मारा
उसका बल सब कपि से थोड़ा
अट्ठारह पद्म केवल सेनापति
योद्धा अनेक अतुल बलधारी
द्विविद, मयंद, नील, नल, अंगद
दधिमुख, सठ विकटास्य केशरी
गदनिसठ जामवंत रीछ
योद्धा सुग्रीव सब असीम
भ्राता विभीषण के कहने
श्रीराम सिंधु से पथ माँगे
शत सिंधु सोखने की है शक्ति
पर राम हृदय करुणा बसती
अट्टाहास कर रावण बोला
तब ही तो लाए बानर सेना
रे मूरख कर रहा बड़ाई?
रिपु बलबुद्धि थाह मैं पाई
डरपोक विभीषण जिसका मंत्री
जग में विजय विभूति न उसकी
लिया वाम कर रावण चिट्ठी
बुलवा सचिव उससे पढ़वाई
हे रावण विरोध तू राम का करता
बचा न पाएँ हरिहर ब्रह्मा
तज अभिमान शरण में आजा
राम क्रोध तू बने पतंगा
रावण डरा कपट हँस बोला
बकवास तपस्वी छोटा करता
बोला शुक है सच दो प्रभु सीता
रावण मार लात निकाला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इधर सिंधु जब सुना नहीं
तीन दिवस रघुवर बिनती
क्रुद्ध अग्नि वाण लिए कर
ज्वाला सागर में उठी भयंकर

विप्र रूप ले माणिक भुक्ता
सागर राम चरण गिरा
रघुवर हँस पूछे किस प्रकार
सेना पार करे सागर

नाथ नील-नल कपि दो भाई
बचपन ऋषि आशीषें पाईं
उनके हाथों से छूने पर
पत्थर तैर करें सागर

हे राम इस तरह पुल बनवाएँ
जिससे तीन लोक यश गाएँ
इस शर से उत्तर तट वासी
हे नाथ मारिए जो अति पापी

कृपालु राम ने तीर चलाया
तुरत हरी सिंधु की पीड़ा
बल पौरुष रामचंद्र का देखा
प्रभु वंदन कर सिंधु गया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम का सेतु बंधन

कपि रीछ खेल - खेल दौड़ते
उखाड़ गिरि तरु कर लेते
देते जाते नल - नील करों में
जो दृढ़ सेतु बनाते

देख जगह पावन रघुवर
बोले यहाँ रखूँ शिव शंकर
महर्षि श्रेष्ठ वहाँ बुलवाए
स्थापित शिव लिंग किए

बोले विधिवत् कर पूजा
शिव समान प्रिय मुझे न दूजा
शिवद्रोही बने भक्त जो मेरा
सपने नहीं मुझे पा सकता

जो करे यह रामेश्वर दर्शन
जाएँ मेरे लोक त्याग तन
गंगाजल ला जो इन्हें चढ़ाए
मुझसे एकाकार हो जाएँ

कपटहीन रामेश्वर सेवा
मेरी भक्ति देवे शिवदेवा
मेरे इस पुल का मात्र दर्शन
दिलवाए मानव को मोक्षपद

बाँध सेतु अति सुदृढ़ बना
चढ़ उस पर सागर रघुवर देखा
जलचर देखे करुणासागर
सैन्य चली आज्ञा पा उस पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस पार राम ने डेरा डाला
खाते फल कपि जहाँ-तहाँ
राक्षस मिले राह जो कोई
काटें कान नाक उसकी

रावण सुन राम सिंधु बाँधा
घबड़ा दशों मुख से बोला
सिंधु उदधि पयोधि जलानिधि
क्या सचमुच बाँधा रघुपति

मंदोदरि ने आँचल फैलाया
प्रियतम सुहाग बचाएँ मेरा
बोला दंभी भुजा बल अपने
काल देव भी रण में जीते

पूछा सचिव बुला उसने
बोले वे बानर भोज्य हमारे
बोला प्रहस्त न हमने खाया
बानर जो लंका जला गया

कहते सब ये ठकुर सुहाती
पिता दीजिए राम वैदेही
रावण उसे बहुत धिक्कारा
सुत समझ गया अंत पिता का

लंका शिखर अखाड़ा होता
नृत्य देखने रावण बैठा
वीणा करताल मृदंग बजते
किन्नर रावण का गुण गाते

राम सुबेल गिरि पट लेटे
कपिराज गोद में शीश धरे
अंगद, हनुमान चरण दबावे
लक्ष्मण बैठे वीरासन में

धनु तरकश दाएँ बाँए रखे
बाण सुधारे हाथों से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विभीषण कर्ण मे कुछ कहते
शशि उगा देख रघुवर बोले
दूर किया अँधियारा शशि ने
नभ में मुक्ता से बिखरे तारे
घटा घमंड दक्षिण दिशि देखी
बोले ओलों की बरखा होगी
विभीषण कहे नहीं मेघ यह
है रावण छत्र मेघडम्बर
बिजली नहीं कर्ण फूल ये
चमक रहे मंदोदरि के
मृदंग ताल घुँघरू के स्वर
नहीं मेघ का है गर्जन
दश शीश अखाड़े में बैठा
देख रहा है नाच रंग
रिपु मद देख राम मुस्काए
धनु पर चढ़ा तीर चलाए
छत्र मुकुट कर्ण फूल
एक वाण गिरे धूल
तरकश में वाण लौटा
हरषे सुख देख प्रभुलीला
रस भंग अपशुगन देख महा
भयभीत हुई दशशीश सभा
मंदोदरी मन चिंता व्यापी
पवन चला न धरती काँपी
अस्त्र शस्त्र नैन न देखे
फिर कर्ण फूल गिरे भू कैसे
बोली रावण से मंदोदरि
प्रियतम विश्व रूप रघुपति
चरण शरण जाइए हरि
चिरकाल रहूँ मैं सुहागवती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हँस बोला रावण अभिमानी
आठों अवगुण तुझमें रानी
राम अगर है विश्व रूप
तो मेरे वश संपूर्ण विश्व

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रामदूत अंगद

इधर राम ने दूत बना
अंग्द को भेजा लंका
जैसे ही वे नगर घुसे
रावण पुत्र मिला खेलते
दोनों के बीच हुई झंझट
उसने मारा पैर अंगद
पकड़ पैर युवराज घुमाए
धरती पटक उसे मारे
चुप हुए राक्षस भय खाए
राह बताई बिन पूछे
नगर हुआ कोलाहल भारी
कपि आया जिसने लंक जलाई
राज सभा में अंगद पहुँचा
रावण विशाल काय बैठा
काला काजल सा भूधर
बीस भुजा थीं जैसे तरुवर
दशशीश उसके गिरि की चोटी
कान नाक गुफाएँ जिसकी
रोम लताए तन पर जैसे
बोला रे कौन क्यों आया बानर
बोले अंगद मैं दूत राम का
करने तेरा शुभ मैं आया
सुन मित्र पिता के मेरे
तुम नाती पुलस्त्य ऋषि के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अभिमान मोह वश तुम रावण
सीता जग जननी हर लाए
अब दाँतों में तिनका लेकर
कंठ कुठार डाल अपने
लिए बंधु संग अपने
सीता को सादर कर आगे
जाओ शरण रामचंद्र की
क्षमा करें अपराध सभी
रावण बोला बानर के बच्चे
मुँह सम्हाल हमसे कर बातें
जग जाने मैं शत्रु सुरों का
बोल पिता नाम व अपना
अंगद नाम बालि का बेटा
क्या कभी कहीं तुमसे भेटा
बोला रावण तू कुल हंता
दूत बना तपस्वियों का
कहाँ बालि कुशल कह उसकी
बोला अंगद लग छाती
तुम्हीं पूछना कुशल कैसी
होती उसकी जो राम विरोधी
अपने कुल का यदि मैं नाशक
तो तू क्या पुलस्त्य कुलरक्षक
है गर्व दूत मैं उस तपसी का
जिनकी शंकर करते पूजा
बोला धर्म नीति मैं ज्ञाता
कटु बचन इस कारण सहता
बोले अंगद पर नारि चुराते
धर्म नीति का पाठ पढ़ाते?
डूब मरो चुल्लू भर पानी
तूने निर्लज्ज बहन क्षमा की

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अच्छी करी दूत रखवाली
बोला रावण मैं बीस भुजबली

कैलाश सहित उठाए शंकर
मैंने इन्हीं कमल नाल से
बता कौन राम सेना में
जो आकर मुझसे टकराए

तेरा स्वामी बलहीन विरह में
उदास दुखी छोटा भाई
सुग्रीव और तू तरु तट के
है जामवंत बूढ़ा मंत्री

शिल्पी नल-नील वीर नहीं
बचा एक बानर बलशाली
लंका दहन किया था जिसने
सुन अंगद हँस कर बोले

क्या सच वह छोटा बानर
जला गया दशशीश नगर
अरे वह कपीश हरकारा
उसको तुम योद्धा कहते

नहीं राम सेना में कोई
लड़ तुमसे करे प्राप्त बड़ाई
कहाँ राम मृगराज हमारे
और कहाँ तुम मेंढ़की जैसे

बोला रावण बानर की जाति
उछल-कूद स्वामी हित करती
मैं सुजान धीर गुण ग्राहक
सुनता मैं बानर की बकबक

बोले युवराज तुम्हारा यह गुण
बतलाए थे मारुति नन्दन
बन उजाड़ सुत मारा तेरा
तब भी गुण ग्राहक बना रहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर्तब विख्यात कई रावण के
बता कौन - सा रावण तू रे
गया एक पाताल जीतने
घुड़शाला वाँधे उसको बच्चे
खेल - खेल उसे मारते
बचा लिया उसे बलि ने
एक बार सहस्रबाहु ने
पकड़ा विचित्र जंतु जानकर
बाल खिलौना घर में लाया
मुनि पुलस्त्य ने उसे बचाया
एक बार अनेक दिनों तक
दबा रहा वह बालि काँख
बोला रावण मैं वीर वही
भुजबल गाता कैलाश गिरि
मुझे भवानी पति पहचाने
जिनको शिर कमल काट चढ़ाए
हे मूर्ख पूछ तू दिग्गज से
मूली से दंत उखाड़े जिनके
मेरे चलने से धरती हिलती
ऐसा वीर प्रसिद्ध प्रतापी
उस रावण को कहता छोटा
रे मूर्ख बड़ाई नर की करता
रे दुष्ट असभ्य तुच्छ बानर
मैं जानूँ तुच्छ ज्ञान तेरा
अति क्रोध भरे अंगद बोला
मद चूरा जिसने परशुराम का
हे अधम अभागे वे नर क्या
तू नासमझी बातें बोला
कटें दशशीश राम बाण से
भू लोटेंगे बानर आगे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम बैर काल खाएगा
रे मूर्ख छोड़ गाल बजाना
बोला इंद्रजीत सुत मेरा
भाई कुंभकर्ण बलसीमा
नहीं शौर्य जानता मेरा
जड़ चेतन जग मैंने जीता
कपि मदद लिए सिंधु बाँधा
एक यही राम क़ी प्रभुता
पक्षी समुद्र पार कर लेते
नहीं वीर वे हो जाते
तेरा स्वामी वीर यदि होता
क्यों बार-बार दूत भेजता
करते हुए शत्रु से संधि
क्या लाज उसे नहीं आती
मुझ सम शूर नहीं जग में
शिर कमल अनेक बार अपने कर
काट हर्ष से होम किए
हैं साक्षी नटराज इसके
जलते कपाल जब अपने देखे
विधि लिखे अंक भाल पढ़े
नर हाथ अपनी मृत्यु जानी
खूब हँसा विधि झूठी वाणी
मति भ्रम बूढ़े ब्रह्मा का
क्या यह सत्य कभी हो सकता?
मूर्ख तज लज्जा मर्यादा
अन्य वीर का बल बखानता
बोला अंगद शीश गिरि की
कथा बार-बार सुनाई
हे मूर्ख शीश काटने से क्या
कोई शूरवीर हो जाता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संधि न मैं करने आया
बस तुझे समझाने आया
मैं दास राम के सेवक का
अपने स्वामी से मैं डरता

नहिं तो पटक तोड़ूँ मुँह तेरा
स्त्री सहित सिया ले जाता
किंतु पुरुषत्व नहीं रावण
मरे हुए का करूँ हनन

उग्र बचन सुन अंगद के
रावण ने क्रोधित होंठ चबाए
बोला गुणहीन राम तेरा
इस कारण पिता उसे निकाला

निर्बल डरा हुआ मुझसे
खाएँगे उसे राक्षस मेरे
जैसे ही करी राम की निंदा
तन अंगद के क्रोध भरा

कटकटा बड़े जोर से गरजा
मारे दोनों भुजदंड धरा
धरती कंपित गिरे सभासद
गिरा भूमि सम्हला रावण

मुकुट गिरे सिर उसने रखे
कुछ अंगद फेंके प्रभु पास
मुकुटों को आते देख गगन से
कपि भागे समझ उल्कापात

हँसकर बोले राम मुकुट ये
फेंके अंगद ने रावण के
रावण कहता हो अति क्रोधित
मारो, पकड़ो वह बानर

रीछ, बानरों को जा खाओ
दोनों तपस्वी को पकड़ो

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोले अंगद होकर क्रोधित
अपना गला काट ले रावण
अब भी फटी न छाती तेरी
मेरा पौरुष देख पापी
स्त्री - चोर, नीच, दुष्ट तू
फल देंगे तुझको बंदर- भालू
मन करता तेरे मुख़ तोड़ूँ
लंका नगर सिंधु डुबो दूँ
पर आदेश नहीं स्वामी का
रावण इस कारण तुझे छोड़ता
रावण बोला तू लबार हुआ
तपसी कुमार से मूर्ख मिला
बोला अंगद हे बीस बाहु
तेरी दश जीभ उखाड़ फेंकूँ
ऐसा कह प्रभु को याद किया
अंगद ने पैरों को रोपा
बोले यदि पैर हटा दे कोई
लौटें राम हार वैदेही
रावण बोला हे वीर निशाचर
पैर पकड़ पछाड़ो बानर
इंद्रजीत से वीर अनेक
किए बहुत बल का प्रयोग
हटा सके न पैर अंगद के
शीश झुकाकर बैठ गए
हुआ चूर मद निशाचरों का
फिर से अंगद ने ललकारा
आया रावण चरण हटाने
बोले अंगद पद छू राम के
कर रिपुदल का बल मर्दन
अंगद ने छुए राम चरण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोली पति से मंदोदरी
रेखा जो लक्ष्मन ने खींची
पार कर सके न उसे
युद्ध करेंगे हरि से कैसे

सेवक हनुमान अंगद से
अब भी प्रियतम वैर छोड़िए
पत्नी बचन लगे बाण सम
गया सभा दशशीश सुबह

इधर राम अंगद से पूछे
हे तात बताओ तुमने कैसे
चार मुकुट रावण के पाए
फेंके थे तुम पास मेरे

बोले अंगद राजा के गुण
साम, दाम, दंड, भेद
जान कालवश रावण
वे त्याग उसे प्रभु हुए शरण

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम-रावण युद्ध

लंका दुर्ग चार दुआरे
आक्रमण विचार राम किए
सुग्रीव विभीषण जामवंत ने
दल चार बनाए बानर के

दिए चतुर वीर सेनापति
बोले बल प्रताप रघुराई
बानर जय रघुवीर हुंकारे
गिरि पत्थर लिए कर दौड़े

जा चारों दिशि लंका घेरी
बजा रहे मुख डंका भेरी
जय सुग्रीव जय राम - लखन
बानर गरजे सिंह समान

हुआ कोलाहल लंका नगरी
रावण सैन्य बुलाई अपनी
बोला भूखे निश्चर खाओ
पकड़-पकड़ बानर-रीछों को

फरसे तोमर मुद्गर शूल
तलवार परिध भिंद पाल
धनुष - बाण - बरछी ले पत्थर
राक्षस चढ़े कंगूरों पर

भेरी नफीरी रण के डंके
रावण सेना के जोर बजे
दौड़े बंदर राह बनाकर
विकट पहाड़ घाटियों से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कटकटा गरजते और झपटते
होंठ काटकर उन्हें डपटते
राम दुहाई देते बंदर
रावण जय कहते निश्चर

असुर पर्वत ढूह गिराते
कूद उन्हें ले लेते बंदर
फेंक - फेंक निशाचर मारे
पैर पकड़ भू उन्हें गिराएँ

चंचल चपल तेजस्वी बानर
चढ़ गए किले के अंदर वे
भीतर घुसे महल रावण के
गुणगान रामचन्द्र का करते

पकड़ - पकड़ शत्रु को वे
कूद किले से पड़ते थे
नीचे निश्चर ऊपर अपने
जय रघुवीर बोलते थे

झुंड - झुंड निशाचर भागे
हा - हा कार हुआ लंका में
रोते बालक रोगी नारी
देते मिल रावण को गाली

रावण बोला रण जो भागे
मारूँ कठोर कृपाण उसे
मेरा खाए सब भोग किए
रण में अब प्यारे प्राण लगे

सुन त्रिशूल ले राक्षस दौड़े
बानर रीछों पर टूट पड़े
बानर व्याकुल दुखी हुए
बेकल अंगद हनुमान पुकारे

महावीर थे पश्चिम द्वारे
मेघनाद से लोहा लेते

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

टूटा न द्वार थी कठिनाई
तब कर्ण पुकार साथी की आई

हुए क्रुद्ध केशरी नंदन
चढ़े कूद किले के ऊपर
मेघनाद पर पर्वत फेंका
मरा सारथी रथ टूटा उसका

मारी लात इंद्रजीत छाती
ले गए असुर बैठा रथ में
देख अकेले बजरंग बली
अंगद उछल किले पर पहुँचे

लड़ते हुए क्रुद्ध दो बंदर
चढ़ गए भवन रावण के
कलश सहित भवन ठहाया
रावण देखा भयभीत हुआ

छाती पीट निशचरी कहतीं
अब आए दो कपि उत्पाती
घुड़की दे वे उन्हें डराते
रामचंद्र का सुयश सुनाते

सेना बीच गरज वे कूदे
भुजबल शत्रु मर्दन करते
मार लात दे थप्पड़ कहते
लो फल तुम राम न भजते

एक दूजे को रगड़ मारते
सिर तोड़ रावण पास फेंकते
वीरों के पैर पकड़ घुमाते
रघुवर निकट फेंकते जाते

विभीषण कहें नाम उनके
रघुनाथ परम पद देते थे
विनाश लीला दुर्ग के अंदर
दिखलाए कपि हनुमत अंगद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साँझ हुई दोनों कपि आए
रघुवर के चरण छुए
हँस राम कृपा दृष्टि से देखे
दोनों कपि के श्रम दूर हुए

बंदर सेना रण से लौटी
पीछे से असुर सैन्य आई
दोनों दल के भिड़े योधा
कोई नहीं हार मानता

रचे अतिकाय अकंपन माया
वृष्टि लहू की घिरा अँधेरा
अग्नि वाण राम चलाए
प्रकाश देख बानर दौड़े

फिर से अंगद हनुमत गरजे
निश्चर पकड़-पकड़ जल फेंके
आधी सेना मरी असुर की
रावण ने फिर पूछा मंत्री

बूढ़े माल्यवंत नाना
बोले अब भी मानो कहना
वैर त्याग दे दो वैदेही
भगवान राम अति सनेही

दुर्वचन बहुत बोला रावण
कहा पिता से मेघनाद
प्रातः करतब दिखलाऊँगा
सुन बचन पुत्र का हुआ भरोसा

सुबह डटे द्वारों पर बानर
चारों ओर किला घेरा
लगे गिराने पर्वत निश्चर
तब मेघनाद किले से उतरा

बोला प्रसिद्ध जगत धनुधारी
लखन - राम देते न दिखाई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नल-नील द्विविद सुग्रीव कहाँ
अंगद हनुमान कहाँ बल सीम'
भ्राता द्रोही कहाँ विभीषण
मारूँ उसे आज पा रण
कह बाण सर्प समान छोड़े
बंदर रण छोड़ लगे भागने
योद्धा बानर भूमि गिरे
गरजा मेघनाद जोर से
तब सिंहनाद कर हनुमाना
पर्वत उखाड़ उस पर फेंका
रथ चूरा मरा सारथी
उड़ गया गगन वह मायावी
हनुमान उसे तब ललकारे
भय से वह आया न नीचे
गया राम पास इंद्रजीत
फेंके अस्त्र - शस्त्र बहुत
काटे खेल - खेल रघुनन्दन
लज्जित हुआ अपने ही मन
करने लगा फिर से माया
बरसाने लगा आग अंगारा
हड्डी लहू पीव थी गिरती
मारो - मारो ध्वनि गूँजती
पृथ्वी से निकल पड़ी जलधारा
धूल बरसती हुआ अँधेरा
भयभीत हुए देख बंदर
काटी माया रघुवर ने हँस
लखन क्रुद्ध धनु तीर लिए
अंगद संग रणभूमि आए
अरुण नैन वक्ष चौड़ा
तन उज्ज्वल जैसे हिमगिरि चमका

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देख लखन को राक्षस दौड़े
भिड़े बानर असुरों से
आपस में होता युद्ध भयंकर
उड़ते नभ में रुंड - मुंड

लक्ष्मण मेघनाद वीर दो
रणभूमि भिड़े अति क्रोधित हो
छल-बल दानव जब दिखलाया
क्रोधित अनन्त उसका रथ तोड़ा

देखा टुकड़ा हुआ सारथी
संकट पड़ा प्राण पर उसकी
वीर घातिनी शक्ति चलाई
लगी लखन की जो छाती

गिरे अनन्त भूमि मूर्च्छित
लगा उठाने मूर्ख इंद्रजीत
अगाणित वीर मिल उन्हें उठाए
उठ न सके अवतार शेष के

साँझ हुई सेनाएँ लौटीं
पूछे लखन कहाँ रघुराई
हनुमान उठा उनको लाए
देख अचेत दुखी हुए

बोले जामवंत लंका से
प्रभु सुषेन वैद्य बुलवाइए
पवनपुत्र रूप रख छोटा
लाए सुषेन घर सहित उठा

वैद्य जड़ी पर्वत बतलाए
बल बखान हनुमान चले
रावण को पता चला इसका
कालनेमि राक्षस को भेजा

मुनि वेष कालनेमि धरा
सुंदर सर मंदिर राह रचा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कपि पथ में देखे एक आश्रम
सोचे पी जल दूर करूँ श्रम
कपट साधु को शीश झुकाया
बोला ज्ञान दृष्टि मैं देखा
हो रहा युद्ध राम - रावण का
जीतेंगे राम नहीं है शंका
कपि ने माँगा पीने का जल
उसने बढ़ा दिया कमंडल
बोले नहीं तृप्त मैं होता
इतने थोड़े जल से देवा
बोला तुरंत स्नान कर लौटो
दूँगा ज्ञान दीक्षा मैं तुमको
हनुमान सरोवर सलिल घुसे
मगरी ने उनके पैर धरे
कपि मारे तन वह दिव्य हुई
विमान चढ़ी नभ जा बोली
शाप मुक्त हुई मैं बानर
यह साधु नहीं है घोर निशाचर
कपट साधु निकट जा बोले
मुनि गुरु दक्षिणा लो पहले
सिर लपेट पूँछ उसे गिराया
मरते क्षण वह राम कहा
देखा गिरि बूटी न पहचानी
कपि सहसा उपार लिए पूरा गिरि
लेकर आकाश मार्ग दौड़े
अयोध्या ऊपर पहुँच गए
भरत निशाचर कोई जाने
बेफर तीर तान मारे
कहे राम कपि भूमि गिरे
बोले भरत दीनता से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मन क्रम वचन प्रीति मेरी
हो यदि चरण कमल रघुपति
तो दूर हो कपि की पीड़ा
जय राम कह उठे बलवीरा

भरत लगाए कपि को छाती
सियराम लखन कुशल पूछी
सुन समाचार भरत दुखी
बोले बैठो वाण लिये गिरि

पहुँचाऊँ अभी पास प्रभु के
होगा अकाज भोर होने से
बल भारी जान पवनसुत बोले
पहुँचूँ नाथ प्रताप तुम्हारे

बीत गई निशा आधी
हनुमान न आए ले बूटी
छाती से लगा लखन भाई
बिलखाए राम रघुपति

दुख मेरे तनिक न सहे कभी
ऐसे कोमल मेरे भाई
मेरे हित मात - पिता छोड़े
बन के दारुण कष्ट सहे

कहाँ गया वह प्रेम तुम्हारा
उठे नहीं देख दुख मेरा
विरह जानता लखन तुम्हारा
पिता वचन भी नहीं मानता

बार - बार स्त्री सुत मिलता
मिले न जगत सहोदर भ्राता
अब मुँह कौन अवध लौटूँगा
उठकर तनिक बताओ भइता

जग उपहास करे मेरा
स्त्री कारण भाई प्रिय खोया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हे पुत्र कठोर हृदय मेरा
दुख अपयश दोनों साथ सहेगा
अपनी माता का पुत्र एक
आधार प्राण उसका केवल
कर थमा मुझे उसने सौंपा
अब क्या जाकर उत्तर दूँगा
यह ज़ीवन पंखहीन पक्षी सा
होगा बिना तुम्हारे भैया
नर लीला करते नारायण
बानर भालू देख दुखित
उस क्षण कपि लाए संजीवनि
रघुवर हुए दास आभारी
प्रसन्न कंठ लगाए हनुमत
उपचार किए वैद्य तुरत
प्रसन्न मुख लखन उठे
भेंटा भाई को छाती भर
भालू बंदर प्रसन्न हुए
कपि सुषेन घर पहुँचाए
रावण यह वृत्तान्त सुना
पछताया बार सिर पीटा
कुंभकर्ण निकट गया
अनेक उपाय उसे जगाया
सीता हरण बोला अभिमानी
सेना की दुर्गति बतलाई
दुर्मुख सुर रिपु और नरान्तक
अतिकाय अंकम्पन मरे महोदर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कुम्भकर्ण वध

कुंभकर्ण बिलख कर बोला
जग जननी सीता हर लाया?
अब मूर्ख कल्याण चाहता?
क्यों पहले नहीं मुझे जगाया?

हनुमान सरीखे जिनके दास
वे क्या नर हैं राक्षस राज
अब अन्तिम बार भेंट कर भाई
प्रभु दर्शन की करूँ तैयारी

रावण अनेक भैंसे मँगवाए
करोड़ घट मदिरा के आए
खा पी वज्रघात सा गरजा
राम युद्ध को गया अकेला

छू पैर विभीषण बोला भइया
रावण मुझे लात दे मारा
बोला तू धन्य विभीषण
बना असुर कुल का भूषण

जा भाई मेरे सिर काल नाचता
नहीं पराया अपना दिखता
विभीषण गया राम से बोला
रण में कुंभकर्ण प्रभु आया

वृक्ष गिरि उखाड़े बानर
फेंक कुंभकर्ण पर मारे
फूल समान लगे उसके तन
तब घूँसा मारे उसको हनुमत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लुढ़का उठ कपि को मारा
हनुमान गिरे सिर चक्कर आया
नल नील योद्धा तुरत पछाड़े
बानर सेना भागी भय से

अंगद सुग्रीव हुए मूर्च्छित
दबा काँख ले चला वीर
जागे सुग्रीव खिसक भागे
कान नाक दंत से काटे

बिना कान नाक राक्षस
हुआ क्रुद्ध और भयंकर
बानर जय रघुवीर हुंकारे
अगणित तरु गिरि पत्थर फेंके

बंदर पकड़ पकड़ वह खाता
कोटि कोटि को रगड़ मसलता
कान नाक से निकल निकल
बंदर भाग रहे तन बाहर

त्रस्त देख अपनी सेना
शार्ङ्ग धनुष कर राम लिया
टंकार हुई भयंकर धनु की
रिपु सेना भयभीत हुई

एक वाण लाख का छोड़े
राक्षस योद्धा शीश कटे
बिना झुंड के रुंड दौड़ते
पकड़ो मारो धुनि करते

क्षण में कटे भयंकर राक्षस
लौटे तीर प्रभु के तरकश
क्रोधित दहाड़ कर कुंभकर्ण
फेंके बड़े भयंकर पर्वत

चूर धूल सम सभी हुए
लग रघुवर के वाणों से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लाल रुधिर बहे तन काला
अट्टहास कर कपि को खाता

भागे बंदर भालू कहते
खरारि राम बचा ओ इससे
बानर का आर्त्तनाद सुने
रघुवर सेना सम्मुख आए

शत वाण राम तब संधाने
तन वे उसके समा गए
राक्षस क्रुद्ध रण में दौड़ा
गिरि उखाड़ कर एक लिया

पर्वत डगमग पृथ्वी काँपी
वह भुजा रामचंद्र ने काटी
बाएँ कर ले गिरि दौड़ा
वह भी काटी राम भुजा

उग्र दृष्टि वह रघुवर देखा
विकराल मुँह फैलाकर दौड़ा
बाण मार मुँह राम भरे
पर कुंभकर्ण ना भूमि गिरे

तब बाण मार शीश प्रभु काटे
मुख गिरा जा दशशीश सामने
कुंभकर्ण धड़ रण में दौड़।
नीचे धँसने लगी धरा

दो टुकड़े राम किए धड़ के
गिरि समान जो धरा गिरे
प्रभु मुख राक्षस तेज समाया
आश्चर्य चकित हुए देवता

नभ में बजने लगे नगाड़े
प्रसन्न देव सुमन गिराते
गुण गान वीर रस राम प्रभु का
गाते ऋषि नारद लेकर वीणा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बल अतुल राम खड़े रणभूमि
झलके मुखकंज कनी श्रम की
कमल नयन अरुण रतनारे
रुधिर लाल कण तन छाए
कर लिए धनुष बाण सहलाए
भालू बंदर चहुँ ओर घिरे
घट गई बहुत रावण सेना
भ्राता सिर गले लगा रोता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेघनाद वध

मेघनाद ने दिया भरोसा
समझा कर पिता से बोला
रण पुरुषार्थ दिखाऊँगा कल
दिए मुझे जो इष्टदेव

लंका के चारों द्वारों पर
डट गए सुबह से बंदर
घन नाद माया रथ पर बैठा
नभ में अट्टसास कर गरजा

शक्ति शूल तलवार चला
रघुवर सेना को दुखी किया
बाणों से दशों दिशा छेकीं
मारो पकड़ो की धुन गूँजी

तरु ले बानर नभ जाते
कोई न देख लौट आते
राह घाटियाँ पर्वत कंदर
पिंजड़े समान बनी वाणों से

नल - नील, अंगद, हनुमान
सब शूर व्याकुल कहाँ जाएँ
छलनी हुए वाणों से बिंध
लक्ष्मण, सुग्रीव, विभीषण के तन

बाँधे नागपाश में रघुवर
व्याकुल हुए देख सब बानर
तब बोले जामवंत क्रोधित
दुष्ट खड़ा रह मेघनाद

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोला घननाद छोड़ रहा था
रे मूर्ख तुझे जान बूढ़ा
कह फेंका एक त्रिशूल चमकता
जामवंत कर उसे लिया

मारा त्रिशूल उसकी छाती
मेघनाद गिरा धरती
उसे रीछ जोर से पटका
घुमा पैर फेंका लंका

नारद ने तब गरुड़ बुलाया
रघुवर पास उसे भेजा
माया सर्प गरुड़ ने खाए
बानर देख प्रसन्न हुए

वृक्ष उपार बंदर दौड़े
राक्षस मभ से चढ़े किले
टूटी मेघनाद की मूर्च्छा
पिता देख वह शरमाया

अजेय यज्ञ के लिए गया
गिरि श्रेष्ठ गुफा मंदिर पहुँचा
राघव से विभीषण बोला
प्रभु मेघनाद यज्ञ है करता

यदि सिद्ध यज्ञ कर लेगा
वह अजेय बन जाएगा
अंगद आदि कपि प्रभु भेजे
विध्वंस यज्ञ को करने

कहा लखन से मेघनाद को
जाकर बुद्धि बल से मारो
सुग्रीव, जामवंत, विभीषण
सेना संग करे मदद

प्रभु प्रताप बल हृदय धरे
धनु वाण लिए लखन बोले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यदि आज उसे बिन मारे आऊँ
तो सेवक प्रभु का मैं न कहाऊँ

मेघनाद पूजा में बैठा
आहुति रुधिर भैंस की देता
ध्वंस किए कपि नहीं उठा
तब बानर उसकी करे प्रशंसा

उठा न फिर भी मारी लातें
उठ दौड़ा वह कपि के पीछे
हनुमत, अंगद गिरे धरा
उसने वक्ष त्रिशूल चलाया

प्रचंड त्रिशूल लखन पर फेंका
उसे अनंत, किए दो टुकड़ा
तब मारें उठ हनुमत अंगद
किंतु नहीं हुआ वह घायल

कर घन नाद काल सम दौड़ा
सौमित्र तीर वज्र सम मारा
अंतर्ध्यान वह कभी प्रकट
आता राक्षस रूप विविध

दृढ़ विचार कर राम सुमिर
संधान किए बाण सौमित्र
छाती मध्य तीर लगा
कह राम लखन देह त्यागा

पवन पुत्र उठा उसे
रख दिए द्वार पर लंका के
मेघनाद को देख मरा
सुर ने अनंत का यश गाया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रावण वध

सुन रण में मेघनाद मरा
रावण अचेत भूमि गिरा
छाती पीट मंदोदरि रोती
सब रानी रावण नीच बताती

बोला रावण समझा रानी
जग नश्वर हृदय मैं जानी
बीती रात हुआ सबेरा
भालू कपि सब द्वार छेका

अपने योद्धा संग लेकर
रावण चला पवन से रथ पर
सैन्य चतुरंगिनि अपार उसकी
चली ज्यों उठी काली आँधी

अपशकुन हो रहे रावण फिर भी
बना रहा अंधा अभिमानी
बज रहे जुझाऊ रण के बाजे
वाहन ध्वजा पताका फहरे

मतवाले कुंजर के झुंड चले
वाना पहने रणबीर चले
पृथ्वी सागर डगमगा रहे
दिग्गज दशों - दिशा के डोले

छिप गया सूर्य रुक गया पवन
बजे नगाड़े प्रलय मेघ सम
मारु राग बजी शहनाई
वीरों का जो चित्त चुराई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोला रावण हे वीर निशाचरो
मसल - मसल बंदर सब मारो
मैं मारूँगा दोनों भाई
ऐसा कह उसने फौज बढ़ाई

अनेक रंग के भालू - बंदर
विशाल काय बलवान निडर
तीखे नख दाँतों वाले
दौड़े पंख लगे पर्वत से

दोनों पक्षों में जय - जय होती
इधर राम उधर रावण की
भिड़ गए वीर अपनी जोड़ी
जय कहें नाम लें अपना स्वामी

था रावण रथ पर राम बिना रथ
देख विभीषण बोले शंकित
प्रभु रावण जीतेंगे कैसे
रथ न कवच तन पैर उघाड़े

बोले जय जिस रथ से होती
वह धर्मरथ यह सखा नहीं
दो पहिए उसके धैर्य वीरता
सत्यशील ध्वजा पताका

बल विवेक दम परोपकार
उस रथ के हैं घोड़े चार
क्षमा, दया, समता की डोरी
उन चारों से बँधी हुई

वैराग्य, ढाल, भजन सारथी
दान परशु, संतोष, असि
बुद्धि, शक्ति, विज्ञान धनुष
स्थिर मन तरकश समान

शम-दम नियम अनेक बाण
अमोघ कवच गुरु पूजन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जो सवार सखा यह रथ
जीते संसार यह तो है रण
ललकार रहा उधर से रावण
अंगद - हनुमान इधर हुंकारे
दोनों ओर वीर मतवाले
जोश परस्पर दिखा रहे
ब्रह्मा, शिव, मुनि, सुर देखे
युद्ध राम रावण नभ से
जीत रहे थे बानर रण में
प्रभु प्रताप बल हृदय धरे
पेट फाड़ शत्रु का बानर
अंतड़ियाँ डाल गले लेते
गर्जन करते थप्पड़ देते
रण में मानो खेल खेलते
लाल रुधिर तन बानर बहता
क्रुद्ध काल रणभूमि ज्यों खेला
पैर मसल दंत से फाड़ें
पटक-पटक रिपु धरती पर मारें
देख भागते अपनी सेना
रावण पुकार फिर से लौटाया
बानर - भालू पर्वत फेंके
लग उसके तन चूर हुए
हुआ क्रुद्ध रावण रण में
कपि रीछों को लगा मसलने
हुए त्रस्त आवाज लगाई
भागे छूट पकड़ से उसकी
ले दस धनुष बीस हाथ
प्रचंड तीर चलाया रावण
पुकार उठे बानर व्याकुल हो
हे राम बचाओ यह तो काल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुखी देख सेना को लछमन
कहे क्रुद्ध ले धनुष बाण
बंदर भालू क्यों दुष्ट मारता
मुझे मार मैं काल तेरा

हे सुत घातक रावण बोला
तुझको ही मैं ढूँढ़ रहा
रावण कठिन तीर चलाया
तिल समान लखन ने काटा

शत तीर लक्ष्मण मस्तक मारे
समा गए सर्प गिरि जैसे
फिर शत बाण वक्ष मारा
हो अचेत वह भूमि गिरा

रावण मूर्च्छा जब टूटी
ब्रह्म शक्ति लखन को मारी
गिरे लखन उठाता रावण
दौड़े देख क्रुद्ध पवनसुत

रावण मारा कपि को घूँसा
सम्हले हनुमान क्रोध तन व्यापा
दिया एक जोर का मुक्का
गिरा भूमि राक्षस का राजा

कपि राम पास लखन पहुँचाए
कान पास रघुवर बोले
कालभक्ष तुम सुररक्षक
मन में जानो उठो लखन

उठ बैठे सुन यह लछमन
कराल शक्ति वह गई गगन
रणभूमि पहुँचा पुत्र सुमित्रा
रावण का रथ चूर किया

शत - शत वाण हृदय मारे
लखन असुर को भूमि गिराए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बैठा पुनः दूसरे रथ
ले गए निशाचर उसे भवन
मूर्च्छा टूटी रावण जागा
करने लगा यज्ञ विजय का
खबर विभीषण ने पाई
जाकर बोले हे रघुपति
कर लेगा यज्ञ यदि पूरा
दुष्ट नहीं मारा जाएगा
हुई भोर रघुनंदन भेजे
अंगद हनुमान वीर सरीखे
खेल - खेल लंका में कूदे
निर्भय कपि रावण महल घुसे
करता यज्ञ उसे जब देखा
अति क्रोध भरे अंगद बोला
रे निर्लज्ज युद्ध से भागा
आ यहाँ बुगला ध्यान लगाया
कह कपि उसको लात मारी
फिर भी दुष्ट उठा न पापी
काटे दाँत लात चलाई
बाल पकड़ स्त्रियाँ घसीटीं
क्रोधित रावण उठा वहाँ से
बानर यज्ञ ध्वंस किया
निराश बना उसका जीना
रावण चला सहित सेना
मानो मुँह काल के जाता
गिद्ध बैठते उसके माथा
इधर प्रार्थना सब देव करी
रघुवर से रावण वध की
हँस रामचंद्र वाण सुधारे
कर में शार्ङ्ग धनुष लिए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हाथ धनुष पर लगे फेरने
पृथ्वी पर्वत डगमगा उठे
सुरगण हर्षित फूल गिराए
जय रामचंद्र घोष किए

विशाल रावण सेना आती
तलवार विद्युत-सी चमकाती
घोड़े, हाथी चिंघाड़ रहे
जैसे मेघ काल के गरजे

बानर पूछें सचेत हुई
इंद्रधनुष सी उठी गगन
जल धारा जैसी धूल उड़ी
वाणों की गिरती बूँदें

दोनों सेना पत्थर बरसातीं
रघुनाथ वाण बरसाते थे
घायल हुई निशाचर भूमि
रण में नाले रुधिर बहे

कट - कट वीरभूमि गिरे
कौवा, चील नभ मँडराए
योगिनी पीती खून भर खप्पर
भूत पिशाच नृत्य करे

चामुंडा ले खोपड़ी
करताल बजा गाती नाची
सिर कटे जय-जय धुन करते
धड़ दौड़ लगाते थे रण में

बानर बल बुद्धि परिश्रम
और राम प्रचंड पराक्रम
सोए भूमि निश्चर योद्धा
रावण रण में बचा अकेला

इधर राम के लिए इंद्र
भेजा रथ मातलि के संग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अजर, अमर, मनोहर, चंचल
जुते चार हय मन गति वाले
रथ आरूढ़ देख रघुवीरा
बलवती हुई बानर सेना
अपने को देख अकेला
रावण अपनी फैलाई माया
अनेक राम - लखन रिपु सेना
भय से बंदर रीछ निहारा
शंकित हुए देख लखन भी
तब रामचंद्र ने माया काटी
बोले रघुवीर हे वीरो
द्वंद्व युद्ध मेरा तुम देखो
द्विज चरणों में शीश झुकाए
किया रामचंद्र रथ आगे
बोला राक्षस राज तपस्वी
मैं ऐसा - वैसा वीर नहीं
तुमने खर - दूषण मारा
विराध बालि बेचारा मारा
मारे कुंभकर्ण भट योधा
मेघनाद मेरा सुत मारा
लूँगा बैर निकाल आज मैं
भागे नहीं आज यदि रण से
राम पड़े तुम रावण पाले
भेजूँ तुम्हें काल हवाले
हँस कहा राम हे रावण
दिखाओ छोड़वाद पुरुषार्थ
जग में तीन तरह के लोग
करें न कुछ कहें एक
दूजे बोलें और करें भी
तीजे करें पर कहें नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बोला हँस रावण बनवासी
ज्ञान सिखा रहे रणभूमि
लगे आज प्रिय प्राण तुम्हें
डरे नहीं बैर तब करके

छोड़ा रावण वाण वज्र सम
रघुवर अग्निवाण से काटे
रावण तीक्ष्ण शक्ति छोड़ी
रघुनाथ उसे वापस लौटाई

शतवाण चलाया तब रावण
गिरा दिया मातलि भू पर
रामचंद्र उसे उठाए
हो क्रुद्ध प्रचंड वाण मारे

रथ टूटा गिरी ध्वजा पताका
दशशीश मनोबल टूट गया
दूजे रथ असुर चढ़ा
हय गिरा दिए दश चला

खींच कान तक धनुष राम
हो क्रुद्ध प्रचंड तीर मारे
बींधे दश - दश बाण शीश
बह चले रुधिर के फव्वारे

तीस वाण राम चलाए
कटे शीश बीस भुजा
कटते ही नए हुए
फिर से रघुनायक काटा

बार - बार रघुवर काटे
फिर - फिर सिर भुजा उगे
असंख्य शिर बाहु गगन
दौड़े रघुवर वाणों से कट

कटे हुए शिर रावण देखा
अति क्रुद्ध हुआ रण में दौड़ा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वाण चला रथ राम ढका
हाहाकार सुरलोक हुआ
बाण काट रघुवर सिर काटे
पट गई दिशाएँ और गगन
उड़ते सिर नभ में कहते
कहाँ राम कहाँ लखन
अति भय से बानर भागे
फिर रघुवीर शीश बींधे
प्रचंड शक्ति छोड़ी रावण
जो सम्मुख चली विभीषण के
रामचंद्र शरणागत रक्षक
पीछे किए तुरत विभीषण
छाती झेले क्षम अचेत हुए
विभीषण क्रुद्ध गदा ले दौड़े
काल वश तू हुआ अभागे
कह गदा प्रहार किया सीने
गिरा भूमि रावण उठ दौड़ा
भिड़े परस्पर दोनों भ्राता
हनुमान गिरि एक उठाया
घोड़े तथा सारथी मारा
रावण के सीने लात चलाई
थर - थर कर देह काँपी
कपि को चला मारने रावण
पूँछ उठा वे उड़े गगन
पूँछ पकड़ नभ में जा पहुँचा
दोनों में युद्ध भयंकर होता
बुद्धि बल से मारुति नंदन
गिरा न पाए जब रावण
राम सुमिर मारा घूँसा
दोनों लड़ते गिरे धरा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दोनों की जय सुरगण बोले
बानर दौड़ मदद को आए
राक्षस सबको पैर से मसला
हुआ था रावण रण मतवाला
रघुवीर उसे तब ललकारे
फिर बानर - भालू दौड़ पड़े
पलभर अदृश्य नैन हुआ
फिर अगनित रूप लिए आया
सेना में भालू - बंदर जितने
उतने ही रावण रण लड़ते
धीरज कपि रीछ खोए
जहाँ - तहाँ वे भाग चले
दश दिशा कोटि रावण दिखते
चिल्लाते गर्जन करते
सुर देख विजय आशा त्यागे
पर्वत गिरि कंदर भागे चले
कहते जीता संसार एक
अब तो रावण हुए अनेक
निर्भय सिद्ध मुनी शिव ब्रह्मा
जान रहे थे प्रभु की लीला
बंदर यह कहते भागे
प्राण बचाओ राम हमारे
अंगद-हनुमान नील-नल योद्धा
रावण से लेते लोहा
राम उन्हें जब व्याकुल देखे
माया के सारे रावण काटे
रावण रण एक दिखा
रघुवर स्तुति सुरगण गाया
रघुवर सब बानर लौटाए
साथी पुकार रण में आए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

स्तुति करते देख देवगण
दौड़ा उन पर क्रोधित रावण
हाहाकार देव किए
अंगद उसे भूमि पटके
उठ रावण बड़े जोर गरजा
कर ले धनुष बाण बरसाया
क्रुद्ध राम फिर तीर चलाए
भुजा शीश काट गिराए
बढ़े हुए शिर जब देखे
क्रोधित बंदर - रीछ हुए
अंगद, सुग्रीव, हनुमान कपि
वार किए ले वृक्ष गिरि
दशशीश नल - नील चढ़े
लिलार नखों से फाड़ दिए
देख रुधिर वह हुआ दुखी
पकड़ा किसी तरह कपि
भू नल - नील उसे पटके
भुजा मरोड़ कपि दोनों भागे
फिर तीर चलाया रावण
बानर प्राण किए व्याकुल
हनुमान वीर आदि कपि मूर्च्छित
दौड़े देख शूर जामवंत
सब भालू गिरि वृक्ष उपारे
फेंक - फेंक रावण को मारे
रावण शूर पटकता धरती
तब जामवंत लात मारी
प्रचंड आघात खाया छाती
मूर्च्छित गिरा असुर धरती
बीस हाथ की मुट्ठी बाँधे
बीस भालुओं को था पकड़े

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुई रात ले गया सारथी
रथ बैठा अपना स्वामी
भालू सब सचेत हुए
राम लखन सेवा में पहुँचे
उसी रात त्रिजटा आई
सिय से रण हाल बताई
रावण शीश भुजाएँ बढ़तीं
सुन सीता शोकित बोली
हे माता किस भाँति मरेगा
यह रावण दुखदाई जग का
बोली त्रिजटा मध्य छाती
लगे वाण मरे यह पापी
प्रभु न तीर चलाए छाती
जान निवास तुम्हारा पुत्री
हृदय बसे रघुवीर तुम्हारे
उनमें चौदह भुवन समाए
होंगे नष्ट भुवन सारे
इस कारण तीर न छाती मारे
सिर कटे बार-बार सुधि छूटे
तब हृदय बींध प्रभु रावण मारे
इधर रात आधी जब बीती
रावण की मूर्च्छा टूटी
बुला सारथी को धिक्कारा
हुई भोर रण में पहुँचा
खलबली मची बानर सेना में
तरु पर्वत लिए बानर दौड़े
नख से रावण तन छेदा
निश्चर सेना का मन काँपा
हो अदृश्य रावण प्रगटाये
बेताल भूत धनु वाण लिए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तलवार खोपड़ी ले उपजी
योगिनी नाच रक्त पीती
मुँह फैला खाने जब दौड़ी
बानर सेना भाग चली
गगन धूल आग बरसती
अचेत सुग्रीव आदि कपि
रावण जोर - जोर गरजता
हे राम पुकारे सारे योद्धा
फिर हुए प्रगट हनुमान बहुत से
जो ले पत्थर राघव पर दौड़े
कह मारो पकड़ो पूछ उठाए
रघुवर को घेरा सबने
देख देवगण हृदय काँपा
राम हरण की क्षण में माया
बंदर भालू प्रसन्न हुए
पर्वत तरु ले रण में लौटे
अनेक बार राम फिर से काटे
असुर शीश दस बीस भुजाएँ
फिर भी मारा गया न रावण
तब ताके रघुवीर विभीषण
बोले विभीषण नाभि इसके
निवास अमृत कुंड करे
सुन हरषित रघुवर मुस्काए
कर में धनुष तीर उठाए
हुए बहुत अपशकुन भयंकर
रोने लगे उलूक सियार
दशों दिशा लगी आग
रवि ग्रहण हुआ बिना योग
मूर्ति नैन अश्रु बहाती
थर-थर देह काँपी मंदोदरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कानों तक धनुष खींचकर
इकत्तीस वाण छोड़े रघुवर
एक वाण अमृत सोखा
तीस काटे शीश भुजा
रावण का रुंड लगा नाचने
धरती पाताल लगी धँसने
दो टुकड़ों में प्रभु काटा
रावण मरा कह राम कहाँ

प्रभु में रावण तेज समाया
देख हरषित शिव ब्रह्मा
संपूर्ण ब्रह्मांड धुनि गूँजी
जय हो जय मुकुंद रघुवीर
अति वीर राम रण भूमि खड़े
विजय विभूति भाल चमके
अंबर जटा सुमन ज्यों तारे
विश्वरूप घर कर धनु फेरे

कोमल बलिष्ठ तन रक्त कनी
लाल मुनी सुख से तन बैठी
लोचन अरुण कृपा घन बरसे
सुर मुनि जै-जै कार करे
पति शिर मंदोदरि देखी
पछाड़ खा भूमि गिरी
छाती पीट रानियाँ रोतीं
बल प्रताप रावण का कहती

वरुण कुबेर इंद्र पवन
कालदेव जिसने जीते रण
पड़ी हुई वह देह धरा
ईश्वर को नर उसने समझा
ब्रह्मा शिव सनकादिक नारद
नभ से आ कर जोड़े रघुवर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हुए विभीषण दुख से व्याकुल
धैर्य वँधाए राम लखन
अंतिम संस्कार भ्राता का कर
विभीषण गहे राम चरण
पहुँचे सुग्रीव - लखन लंका
विधिवत् तिलक किया उनका
बोले रघुवर कपि रीछ बुला
पा बल सखा तुम्हारा
प्रबल शत्रु मैंने जीता
मेरे संग नाम तुम्हारा होगा
कहा पवन सुत लंका जाओ
तुरत खबर सिया की लाओ
पहुँचे जब हनुमत लंका
निशाचर करी भक्ति से पूजा
सिय मिल खबर सुनाई
लौटे रघुवर कुशल कही बताई
अंगद विभीषण बजरंगबली
पहुँचे लंका लाने वैदेही
स्नान करा सजा वैदेही
राक्षसी ले चली बैठ पालकी
कपि, रीछ दर्शन के अभिलाषी
उछल - कूद देखे वैदेही
कहा राम सखा विभीषण
लाओ जानकी को पैदल
चाहें बानर माता सी देखें
जय - जय बंदर भालू बोले
अग्नि में रघुवर पहले
सिया का असली रूप रखे
उसी रूप को फिर से पाने
कटु वचन रामचंद्र बोले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करने लगी विरोध निश्चरी
पति वचन शीश धरी जानकी
बोली अग्नि जलाओ लछमन
पति धर्म में बनो सहायक

लछमन नैनों में अश्रु भरे
खड़े रहे दोनों कर जोड़े
राम आज्ञा लछमन देखी
लाए लकड़ी आग जलाई

अग्नि प्रबल देख सिय बोली
मैं मन-क्रम-वचन यदि राम की
तो शीतल अग्नि बन जा
कह चली गईं अग्नि में सीता

प्रतिबिंब जला सीता कर थामे
अग्नि देव धरे तन आए
राम वाम सीता बैठाई
सागर श्रीमति हरि ज्यों सौंपी

सुरगण हरषित सुमन गिराते
बजे निशान नभ किन्नर गाते
चढ़ी विमान अप्सरा नाचे
बंदर सियाराम जय बोले

रामचंद्र की आज्ञा पाई
ले गया इंद्र का रथ मातलि
आए सुरगण परम स्वार्थी
जोड़ राम सिया विनय करी

दीन बंधु करुणामय स्वामी
अजित अनामय सहज उदासी
नाथ कृपा हम पर दरशाई
सुरद्रोही रावण मारा पापी

नृसिंह मत्स्य परशु कच्छप
वामन वराह अवतार लिये

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब - जब कातर देव पुकारे
तन धर तुम दुख निवारे
यह दुष्ट अधम परम पद पाया
अति विचित्र तुम्हारी माया
इस पद के हम अभिलाषी
स्वारथ वश भूले भक्ति तुम्हारी
हम जन्म मृत्यु चक्र फँसे
पदचिह्न चले अब राम तुम्हारे
पूजन कर देव स्वर्ग गए
तब ब्रह्मा रघुवर स्तुति गाए
जय सुख धाम राम गुण सागर
विश्व प्रतापी वीर धनुर्धर
अनुपम स्याम छबि मन मोहे
कवि मुनि गाते नहीं अघाए
पापी रावण निश्चर मारे
भू के दारुण दोष हरे
बिन कारण दीन दयाल विभो
मेरी विभेद मति दूर करो
हे अखंड अनाम अगोचर
सब रूप रमे हो किंतु छिपे
कृत कृत्य हुए बानर ये
जो सदा देखते रहे तुम्हें
दशरथ नंदन अजिर बिहारी
प्रचंड शक्तिधारी अघ हारी
कमल नयन हे लक्ष्मी रमणा
प्रणाम तुम्हें रघुनंदन सीता
उस समय दशरथ जी आए
पुत्र देख नैन जल छाए
राम - लखन दोनों कर जोड़े
आशीष दिए रघुपति बोले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हे पिता पुण्य कर्म तुम्हारे
अजित निशाचर मैंने जीते
नहीं मोक्ष दशरथ माँगा
थे राम भक्त सगुण स्वरूपा
सुरपति कर जोड़े शीश नवाए
रघुनंदन के चरित सुनाए
शोभा धाम राम रघुनायक
जय-जय शरणागत पालक रक्षक

कटि तरकश धनु वाण धरे
भुज बल प्रचंड शक्ति धरे
खर-दूषण रावण निश्चर मारे
बल मर्दन मद चूर किए
था मैं अभिमानी दरशन पाया
दुख भ्रम मेरा दूर हुआ
हे राम संग लखन सीता
मेरे मन मंदिर बसो सदा

बरसा कर इंद्रदेव अमृत
जिला दिए सब भालू बंदर
नहीं जिए असुर अमृत से
रामाकार रणक्षेत्र हुए
आए अवसर पा गौरीपति
पुलकित करी राम की विनती
हे राम रमापति धनु कर धारी
रघुनंदन रक्षा करो हमारी

अलख अनूप चरित तुम्हारा
पल - पल नैन सदा मैं पीता
हृदय बसे पद कमल तुम्हारे
जाऊँ वहीं जहाँ ले जाएँ।
आज सफल प्रभु नैन हमारे
दुर्जन राक्षस रण में मारे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जब धरती पर पाप बढ़े
आना प्रभु अपना विरद बचाने
काम, क्रोध, मोह, भ्रम भारी
पल में दूर करे खरारी
दिव्य प्रताप सूर्य तुम्हारा
भय करे दूर मिटे अँधियारा
तन स्याम कमल नैन दुख मोचन
दीन बंधु हे रघुकुल चंदन
लखन जानकी सहित निरंतर
बसो सदा मेरे मन मंदिर
विभीषण करी राम से विनती
घर पावन मेरा करिए स्वामी
संपति राज्य भवन तुम्हारा
ले चलिए नाथ मुझे अयोध्या
भर आए जल राजीव नैना
बोले सच सब कुछ है मेरा
किंतु याद भरत जब आती
पल युग से बन जाते भारी
जल्दी नैनों से देखूँ भ्राता
हे मित्र करो उपाय ऐसा
बीते अवधि नहीं जाऊँ
अपना भाई जीवित न पाऊँ
भर पुष्प विमान विभीषण
लाए वस्त्र रतन आभूषण
कहे राम सखा गिराओ
नीचे विमान से इन सबको
लेगा जो मन जिसके भाए
बानर विस्मित रतन देखते
फिर उसको मुँह में रखते
फीका लगे उन्हें उगलते .

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देख राम लखन सिय हँसते
कपि रीछ विनोद हँसी करते
पहन वस्त्र आभूषण बानर
राम लखन सिंय पड़े चरण

कहे राम अब घर जाओ
भय न करो मन रखना मुझको
मन रखे राम कपि चले
मुड़-मुड़ बार-बार प्रभु देखे

सिया - राम विमान चढ़े
लखन विभीषण संग लिए
नल - नील अंगद पवन पुत्र
सुग्रीव जामवंत बैठे

उत्तर दिशा विमान चला
बोले सब जय जय राम सिया
नभ स्वच्छ सुखद पवन बहे
बरखा सुमन गिरे नभ से

बोले रघुवीर यहाँ हे सीते
मेघनाद लखन मारे
देखो असुर रणक्षेत्र पड़े
अंगद हनुमान वीर जो मारे

कुंभकर्ण रावण दुखदाई
मैंने मारे हो यहाँ जानकी
सिंधु सेतु यहाँ बनवाया
स्थापित शिव लिंग किया

रामेश्वर देख राम सिया
शीश झुका प्रणाम किया
जहाँ राम रुके थे पथ में
वे स्थल सिय को दिखलाते

दंडक वन विमान रुका
अगस्त अनेक मुनि वहाँ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शीश झुका आशीष लिए
चित्रकूट जगदीश्वर आए
सब मुनि का परितोष किए
यमुना जल प्रभु पार किए
पावन सुरसरि प्रणाम किए
प्रयाग राज को कर जोड़े
सिय को अवधपुरी दिखलाई
सजल नैन शीश झुकाई
उतर स्नान किए त्रिवेणी
द्विज दान दिए तुष्टि करी
कुशल भरत की मँगवाई
भेजे प्रभु हनुमत अवधपुरी
भारद्वाज आश्रम में आए
सिय राम लखण आशीष लिए
चढ़ विमान पार की गंगा
निषादराज भेंटने दौड़ा
सीता गंगा माता पूजी
वर पाई प्रसन्न हुई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राम राज्य

एक दिवस अवधि बाकी
हो उठे अधीर अयोध्यावासी
राम विरह आर्त्त नर-नारी
तब हुए शगुन सुंदर शुभकारी

चली बयार त्रिविध सुखकारी
कहती जो प्रभु आवन की
दाईं भुजा भरत की फड़की
सोचे अब तक न आए भाई

जीवन धन्य लखन बड़भागी
सदा रहा राम अनुरागी
मुझको कपटी भैया जाने
इस कारण नहीं साथ रखे

फिर भी दृढ़ विश्वास हृदय में
भाई मिले शगुन शुभ होते
दीन बंधु प्रभु आरत हरणा
अवगुण दास हृदय न माना

राम वियोग भरत थे डूबे
नौका सम विप्र रूप कपि आए
शीश जटा कुशासन बैठे
जपे राम लोचन जल छाए

देख पुलक पवनसुत बोले
दिन-रात नाथ जिसे जपते
वे कुशल सीता लखन सहित
रिपु जीत आ रहे कोशलपुर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सियाराम अयोध्या आते
सुन भरत अंग उमंग भरे
कौन सखा कहाँ से आये
अमृतमय बचन सुनाए
मारुत सुत जाति मैं बानर
हनुमान नाम राम का किंकर
सुन उठ भरत मिले सादर
सब समाचार कहे हनुमत
शीश झुका प्रभु पास गए कपि
चढ़ विमान चले सीता पति
भरत अयोध्या नगरी आए
शुभ समाचार गुरु से बोले
रनिवास में तब खबर कराई
सुन माता हर्षित उठ दौड़ी
समाचार नगर में फैला
जो जैसा वैसा ही दौड़ा
दधि दूर्वा फूल फल रोली
अक्षत मंगलमय दल तुलसी
वनिता हेम थाल सजाई
गाती गीत चली गजगामिनी
गुरु भ्राता द्विज बंधु सहित
रघुवर लेने चले भरत
नारियाँ बहुत चढ़ीं अटारी
नभ विमान सहर्ष देखतीं
बोले इंगित कर राम सखाओ
पावन अवधपुरी यह देखो
प्यारी जन्मभूमि यह मेरी
अति प्रिय मुझे यहाँ के वासी
लोगों को जब आते देखा
नगर निकट विमान उतारा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रघुनाथ उतर बोले विमान को
अब कुबेर पास तुम जाओ

वामदेव वशिष्ठ मुनि देखे
राम तीर धनुष भू रखे
गुरु चरण दौड़ धरे दो भाई
गुरु लगा गले कुशल पूछी

कहें राम गुरु दया आपकी
नाथ कुशल हमारा रखती
सब द्विज को शीश झुकाए
तब पद पंकज भरत गहे

पड़े भूमि न उठे उठाए
बरबस कृपासिंधु उठाए
तन स्याम पुलकित रोम खड़े
नैनों से अविरल अश्रु बहे

लोचन कमल अश्रु बहाते
घनश्याम पुलक तन भले लगे
अति प्रेम गले लगा लघु भाई
पूछें कुशल त्रिलोकी साई

बोले कंपित अधर भरत
हे कोशलनाथ दिए दरशन
मैं आर्त्त कर थामा तुमने
बचा लिया नाथ डूबते

शत्रुघन को रघुवर गले लगाए
भरत लक्ष्मण गले मिले
भेंटे लखन मिले लघु भाई
भाभी चरण पड़े दो भाई

राम देख पुरवासी हर्षित
विरह काल दुख दूर हुए
राम असंख्य रूप लिए
क्षण में यथा योग्य मिले

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
आगे चले राम रघुराई
कौशल्यादि सब माता दौड़ीं
मृदु बोल रघुवर तुष्ट किए
दुःख दूर हुए माताओं के
लछमन मात सुमित्रा भेंटी
राम मिली कैकई लजाती
बार - बार गले जा लगते
लखन रोष न मन से जाए
सासुओं से मिली मैथिली
दे अशीष सब गले लगाई
रघुपति मुख कमल निहारी
ले स्वर्ण थाल आरती उतारी
बार - बार सोचती माता
कैसे लंकापति रावण मारा
कोमल शरीर पुत्र दो मेरे
कठोर भयंकर निश्चर होते
राम लखन सीता का मुखड़ा
पल - पल देख रही कौशल्या
परमानन्द हृदय भर लेती
बार - बार न्यौछावर करती
जामवंत, नल - नील, विभीषण
सुग्रीव, हनुमान, अंगद
भरत प्रीति प्रशंसा करते
हुए मनुज तन उनके
सखा बुला राम सिखलाए
गुरु चरण कमल लगिए
ये वशिष्ठ कुल पूज्य हमारे
इनकी कृपा राक्षस रण मारे
फिर कहा गुरु सखा ये मेरे
जीता युद्ध सहारे इनके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मेरे हित प्राण दाँव पर रखे
मुझे अधिक भरत से प्यारे
अति प्रसन्न सुन सखा हुए
कौशल्या पद शीश झुकाए
बोली माता आशीष दिए
रघुवर समान मुझे तुम प्यारे
सुमन वृष्टि गगन भू छाई
राजमहल को चले रामजी
करतें दर्शन नगर निवासी
चढ़े अटारी ऊँची अपनी
कंचन कलश विचित्र सँवारे
घर - घर द्वार सजाए अपने
ध्वजा पताका बंदनवार
मंगल चौक बने घर-घर
गली-गली सुंगध से सींची
न्यौछावर करते नर - नारी
कंचन थाल सजा आरती
करे आरती आरति हर की
विरह सूर्य अस्त हो गया
रघुवर शशि उदय हुआ
शुभ शगुन निशान बजे गगन
तब अपने भवन चले रघुनाथ
लज्जित देख कैकई रघुवर
पहले उनके भवन गए
समझा-बुझा उन्हें किया सुखी
तब अपने भवन चले रघुपति
बोले वशिष्ठ बुलवा द्विज गण
शुभ घड़ी सुदिन आज लग्न
हरषित आदेश दीजिए मिलकर
रामचन्द्र बैठें सिंहासन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

द्विज बोले एक मत वाणी
अभिषेक राम का जग सुखदायी
अब विलंब न मुनिवर करिए
रामचंद्र का तिलक कीजिए

सुमंत्र से मुनिवर बोले
वे प्रसन्न रथ हय सजवाए
जहाँ तहाँ जन दौड़ाए
मांगलिक वस्तु तुरंत मँगाए

अवधपुरी सजाई सुंदर
सुर सुमन वृष्टि की झड़ी लगाए
राम बुला दासों को बोलो
नहलाओ सखाओं को पहले

फिर राम भरत को बुलवाए
उनकी जटा कर से सुलझाए
तीनों भ्राता को नहलाए
तब अपनी जटा राम खोले

गुरु आज्ञा स्नान किए
फिर आभूषण वस्त्र धरे
शोभित अंग - अंग प्रभु के
शत कामदेव भी लजा रहे

सादर सास सिया नहलाई
दिव्य वसन भूषण पहनाई
राम वाम शोभित सीता
चढ़ विमान देखे शिव ब्रह्मा

देख राम मुनि मन उमंगा
सिंहासन एक दिव्य मँगवाया
सब द्विज रघुवर शीश झुकाए
रवि सम तेज सिंहासन बैठे

देखे रघुवर जनक सुता
हर्षित मुनि समुदाय हुआ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

वेद मंत्र द्विजगण पढ़ते
सुर जय-जय नभ में करते

पहले वशिष्ठ गुरु तिलक किए
फिर द्विज से टीका करवाए
राम देख माताएँ हर्षित
बार - बार आरती करतीं

दान बहुत द्विजगण को देतीं
याचक को धनवान बनातीं
सिंहासन बैठे त्रिभुवन साईं
सुर देखे दुंदुभी बजाई

नभ में विविध बजे नगाड़े
किन्नर गंधर्व गीत गाते
अप्सरा वृंद नृत्य दिखाएँ
परमानंद सुर मुनि पाते

भरत छत्र चँवर लछमन
व्यजन शत्रुघन असि अंगद
हनुमान ढाल विभीषण धनु ले
सुग्रीव सुशोभित शक्ति से

श्री संग बैठे रघुकुल भूषण
छबि कोटि अनंग विराज रही तन
नव नीरद गात पीत पट शोभित
सुर मुनि देख-देख मन मोहित

मुकुट बाजूबंद विचित्र भूषण
अंग-अंग सजे धन्य नर देखे
अंबुज नैन विशाल भुजाएँ
आनंद परम निधि सुर मुनि डूबे

कर स्तुति सुर धाम गए
तब चारण वेष वेद धर आए
आदर किए राम पहचाने
वेद राम गुणगान किए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
जय सगुण निर्गुण रूप राम
नृप शिरोमणि सौंदर्यधाम
रावण प्रचंड दुष्ट निशाचर
प्रबल शत्रु भुजा बल मारे
नर अवतार तुम्हारा प्रभु जी
शरणागत रक्षक भवदुख हरणी
दयालु सर्व शक्तिमान
शक्ति सहित तुमको प्रणाम
सुर असुर नाग चर अचर जगत
भगवान तुम्हारी माया वश
भव सिन्दु बीच भँवर पड़े
जन्म मृत्यु चक्र फँसे
करकृपा नाथ जिसे तुम देखे
त्रिविध ताप दुख दूर हुए
ज्ञानी मिथ्या जो अभिमानी
हृदय न प्रीति भक्ति तुम्हारी
दुर्लभ पद पा भी पतित बने
हे नाथ जगत हम देख रहे
सेवक केवल विश्वास तुम्हारे
भज तुम्हें सहत भवसिन्दु तेर
जो चरण पूज्य शिव ब्रह्मा के
उद्धारक तारक मुनि पत्नी के
जिनके पदनख गंगा निकली
पावन तीनों लोक करी
बन के पथ चलते चलते
काँटों से जो चरण छिदे
ध्वज कुलिश अंकुश कंज युक्त
भारत भूमि चिह्न पड़े
परम पुरुष वे चरण तुम्हारे
चार वेद निरंतर पूजे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हे परमार्थ कर्मयोगी
पुरुषोत्तम रक्षा करो हमारी
जिसका मूल अव्यक्त अनादि
छः तने चार त्वचा जिसकी
शाख पचीस अनेक पत्ते
फूल लगे फल कड़वे मीठे
वह तरु लता एक लिपटी
जो सदा सहारे उसके रहती
नित नव पर्ण फूल फूलते
वेद शास्त्र ऐसा है कहते
तुम जगत विटप का प्रकट रूप
अविकार रूप सुमन्दर स्वरूप
ब्रह्म अजन्म अद्वैत परे मन
जो कहते ऐसा करें मनन
हम वेद सगुण रूप के प्यासे
कीर्तन गुण गीत तुम्हारे गाते
हम धन्य तुम्हारे दर्शन पाए
कह अदृश्य वेद चार हुए
तब त्रिपुरारि वहाँ पर आए
सिया सहित रघुवर गुण गाए
अटल भक्ति प्रभु पद माँगी
रहे सदा संत जन संगति
बानर, सुग्रीव, विभीषण सुख से
षट मास तक वहाँ रहे
रघुवर एक दिन बुलवा बोले
बहुत करी सेवा तुम सबने
कैसे करूँ सखा प्रशंसा
मेरे हित सुख तुमने त्यागा
भ्राता राज संपति वैदेही
देह गेह कुटुंब सनेही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब प्रिय अधिक न तुमसे
कहूँ न झूठ हृदय तुम मेरे
प्रिय होते दास नीति कहती
पर मेरी स्वभावगत तुमसे प्रीति

अब अपने गृह जाओ सखा
दृढ़ नियम मुझे भजते रहना
सर्व व्याप्त हितैषी सबका
जान प्रेम मुझसे रखना

सुन सखा प्रेम मग्न हुए
भूले हम कौन कहाँ से आए
कर जोड़ पद कमल गिरे
भूषण वस्त्र रघुनाथ मँगाए

पहले कपिराज को भरत सजाए
कर अपने वस्त्र भूषण पहनाए
रघुवर कहे, उठे लक्ष्मन
पहनाए भूषण अनमोल विभीषण

अंगद अपनी जगह न डोला
अटल प्रेम रघुवर ने देखा
जामवंत नल, नील, बानर
कर अपने रघुवीर पहनाए

प्रभु को शीश झुकाया सबने
चले राम रूप मन रखे
तब अंगद उठ सीश झुकाया
सजल नैन जोड़ कर बोला

गरीब नवाज कृपा के सागर
जाऊँ कहाँ कहिए हे रघुवर
मरते समय पिता बालि
डाला नाथ तुम्हारी गोदी

हे दीनबन्धु हितकारी
मात - पिता - गुरु मेरे स्वामी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहिए नाथ न अब तू घर जा
रो कर अंगद चरण गिरा

सुन अंगद वचन नैन भर आए
रघुवर उठ हृदय लगाए
कर कंठहार उतार पहनाए
समझा - बुझा विदा किए

भरत लक्ष्मण सहित शत्रुघन
लौटे पहुँचा सबको सादर
हनुमान चरण पड़े कपि राजा
रहे सदा राम की सेवा

राम निषाद राज बुलवाए
भूषण वस्त्र प्रसाद दिए
कहे भरत समान तुम भ्राता
आते जाते पुर रहना

राम बने धरती पर राजा
तीन लोक में सुख छाया
वैर विषमता जगत मिटी
धर्म परायण लोग सभी

भय रोग व्यथा कहीं न रही
अपना धर्म निबाहे सब ही
दैहिक दैविक भौतिक ताप
होते नहीं राम के राज्य

सब प्रीति परस्पर करते
वर्णाश्रम धर्म पालते
सत्य शौच दया दान
स्वप्न नहीं दिखते पाप

राम भक्ति रत सब नर - नारी
बने मोक्ष पद के अधिकारी
अल्प मृत्यु न दुःख दरिद्रता
सब प्रसन्न शुभ लक्षण पूर्णा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दंभ रहित लोग पुण्यात्मा
जाने गुण का आदर करना
नर-नारि चतुर कृतज्ञ गुण ज्ञानी
कपट धूर्त कृतघ्न न कोई

सप्तसिंधु भारत कहलाता
एक छत्र राम थे राजा
रोम - रोम ब्रह्मांड बसे
वे भगवन भारत में आए

सुख संपदा भारत में फैली
पर उपकार उदार नर - नारी
पुरुष एक पत्नी व्रतधारी
वनिता पति हित करने वाली

कोई अपराध न करे किसी का
कोई शत्रु नहीं किसी का
चोर न डाकू राम के राज
भेद - नीति का नहीं नाम

तरु कानन सदा फूलते फलते
गज, सिंह एक साथ घूमते
वैर भूल पशु - पक्षी रहते
किल्लोल आनंद सदा विचरते

शीतल मंद सुगंध बयार
भौंरे करें मृदुल गुंजार
गौएँ पय मनचाहा देती
खेती से परिपूर्ण धरती

भूगर्भ प्रकट हुए मणि मानिक
सागर मोती बिखराते तट पर
नभ से शशि अमृत बरसाता
मेघ माँगने पर जल देता

नदी श्रेष्ठ निर्मल जल देती
त्रेता में सतयुग की करनी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बेलें वृक्ष मधु टपकाते
सरोवर हृदय सरासिज लहराते
कोटि अश्वमेध यज्ञ
किए रामचंद्र धरती पर
सेवा करते तीनों भाई
राम प्रीति करे न थोड़ी
पति अनुकूल सदा थी सीता
शोभा खानि सुशील विनीता
सेवा करती रामचरण की
प्रभु गुण महिमा चित रखती
जिसमें रघुवर रहे सुखी
करे वही श्री विधि सब जानी
पति सेवा स्वयं करती
यद्यपि अनेक दास दासी
लव-कुश दो पुत्र हुए सीता के
विजयी नम्र धाम गुणों के
लक्ष्मण, भरत, शत्रुघन के
दो - दो सुंदर पुत्र हुए
एक बार गए प्रभु उपवन
पवन पुत्र तीन भ्राता संग
सनकादिक चार मुनि आए
लगते बालक पर बड़े पुराने
तेज पुंज ऋषि भेदहीन
समदर्शी ब्रह्मानंद लीन
दिशा वसन व्यसन जिनका
सदा रघुनाथ कथा रस पीना
मुनियों को आते रघुवर देखे
दोनों कर जोड़ प्रणाम किए
स्वागत पटपीत बिछाए अपना
प्रणाम किए तीनों भ्राता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्यामल गात कमल लोचन
सुंदरता धाम भवमय मोचन
अपलक देख रहे चारों मुनि
तब कर पकड़ बैठाए रघुपति
बोले मैं आज धन्य हुआ
मुनिवरो आपका दरशन पाया
सत संग बड़े भाग्य से मिलता
जिससे आवागमन छूटता
रामवचन सुन चारों हर्षित
कर जोड़ गुण गाए पुलकित
जय भगवंत अनंत अनादि
जय करुणामय पाप विनाशी
जय निर्गुण जय जयगुण सागर
सुखदायक सुंदर अतिनागर
जय इंदिरा रमण अवधबिहारी
दीनबंधु अकाज हितैषी
ज्ञान निधान अज्ञान विभंजन
अनेक नाम अनाम निरंजन
हे सर्वव्याप्त पुरुष अविनाशी
जय जग पालक अंतसवासी
विपत्ति द्वंद्व भव बंधन काटो
अविचल पद प्रेम भक्ति हमें दो
राधव मन का कलुष मिटाओ
विवेक विनय वैराग्य हमें दो
तुम भक्ति जगत के शरद चंद्र
हे शिव मन मानस दिव्य हंस
दीन दयाल दास तुलसी के
तारन तरण भव सागर के
कवि भक्त चकोर तुम्हारे शशि मुख
दरशन कृपासुधा के लोलुप

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दासी 'क्षमा' दरश की प्यासी
जन्म - जन्म से बाट जोहती

हे राम कल्प तरु रूप प्रभो
मन काम सदा परिपूर्ण करो
दो दरशन की भीख विभो
पट खोल मुखारविंद दिखला दो

□□□

SPS Central Library
Acc No.
70725
Srinagar

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

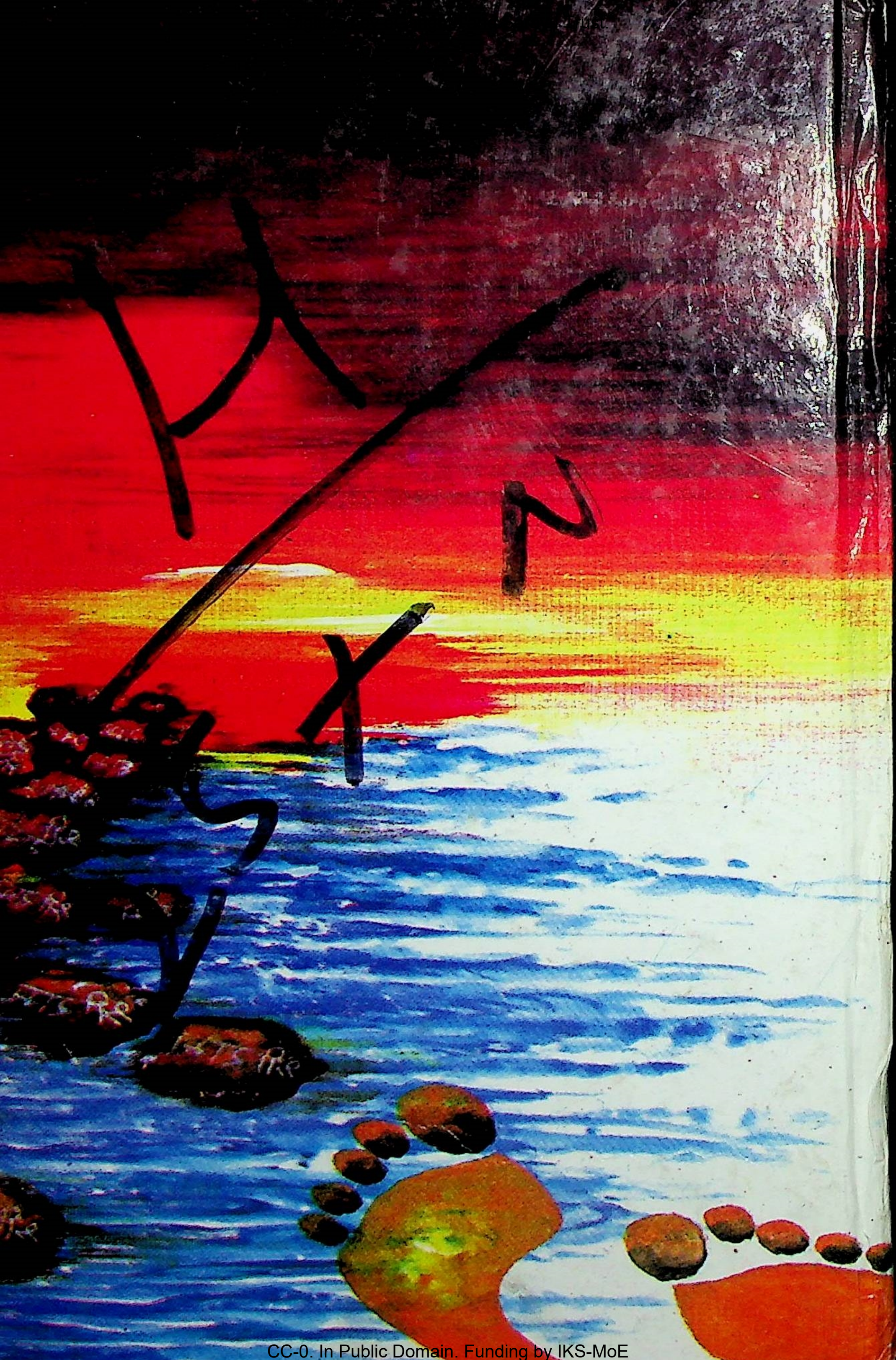

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE